दीपज्योति

अंक : 10, वर्ष : 2022-23

उप क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
पंचदीप भवन, गणेशपेठ, नागपुर-440018

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
ESIC
हिन्दी पत्रिका प्रतियोगिता
प्रमाण-पत्र
प्रमाणित किया जाता है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर
की हिन्दी गृह पत्रिका दीप ज्योति ने वर्ष
2019-2020 में क / ख / ग क्षेत्र से प्रकाशित पत्रिकाओं में से संपादन,
साज-सज्जा एवं सामग्री-प्रबंधन के लिए प्रथम स्थान प्राप्त किया।
मुख्यालय, नई दिल्ली
दिनांक
बीमा आयुक्त

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
E.S.I.C.
हिन्दी पत्रिका प्रतियोगिता
प्रमाण-पत्र
प्रमाणित किया जाता है कि
की हिन्दी गृह पत्रिका ने वर्ष
2020-2021 में क / ख / ग क्षेत्र से प्रकाशित पत्रिकाओं में से संपादन,
साज-सज्जा एवं सामग्री-प्रबंधन के लिए द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
मुख्यालय, नई दिल्ली
दिनांक
बीमा आयुक्त

आज़ादी का अमृत महोत्सव

विकास कुण्डल
उप निदेशक (प्रभारी)

प्रवीण सहगल
उप निदेशक

मनोज कुमार यादव
सहायक निदेशक

भावना पाटील
सहायक निदेशक

डॉ. कशिश तारवानी
चिकित्सा निर्देशी

डॉ. जय प्रकाश
व.अनुवाद अधिकारी

आशुतोष कुमार
आशुलिपिक

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

सप्रेम नमस्कार और धन्यवाद! दीपज्योति अपनी प्रकाशन–यात्रा का एक दशक पूरा कर रही है। इस दौरान पूर्व प्रकाशित सभी अंकों पर आपकी प्रतिक्रिया ने हमें और अच्छा प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया है। पूरा देश हर्षोल्लास के साथ 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' मना रहा है ऐसे में भारतीय भाषाओं के साथ इस महोत्सव को दीपज्योति ने भी मनाने का निर्णय लिया जिसके मद्देनज़र कार्यालय प्रमुख व प्रधान संपादक महोदय ने इस कार्य के लिए जो नई दृष्टि दी वह संपादक मंडल के लिए बड़ी कारगर सिद्ध हुई। अतः उप क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर के संपादक–मंडल का परिश्रम पुनः आपके समक्ष प्रस्तुत है।

इस अंक में, संविधान की अष्टम अनुसूची में उल्लिखित आधुनिक भारतीय भाषाओं के लेखों को संकलित करते हुए उनके सामने उनका हिंदी अनुवाद भी रखा गया है। विभिन्न भाषाओं के लेख आपको क्षेत्रीय साहित्य का आनंद तो देंगे ही उनका अनुवाद अपरिचितों को भी आह्लादित करेगा। सामग्री में कहानी, कविता, प्रेरक प्रसंग, यात्रावृतांत, कोरोना–त्रासदी, हिंदी की बढ़ती वैश्विक पैठ एवं गुमनाम नायकों के स्मरण इत्यादि से संबंधित आलेख संकलित हैं। विभिन्न आयोजनों की रिपोर्ट व चित्रों के अलावा राजभाशा संबंधी सामग्री को भी समाहित किया गया है। प्रत्येक रचना के पूर्व में दी गयी संपादकीय टिप्पणियाँ आपके साथ बनी रहकर आपको रचनाकार के दृष्टिकोण से परिचय कराती रहेंगी।

संभव है इस नये प्रयोग में बहुत कुछ छूट गया हो, भाषा अपरिपक्व रह गयी हो, टंकण अशुद्ध हो गया हो। आशा करती हूँ कि आप हमारी तकनीकी–सीमा परन्तु अनन्त समावेशिकता की भावना के आलोक में हमारी त्रुटियों को नज़र अन्दाज़ करेंगे। यह 10वाँ अंक पूर्व अंकों के संदर्भ में आपसे प्राप्त सुझावों से पोषित किया गया है। अतः भविष्य में भी आप अपना स्नेह बनाए रखें, धन्यवाद।

भावना पाटील
संपादक

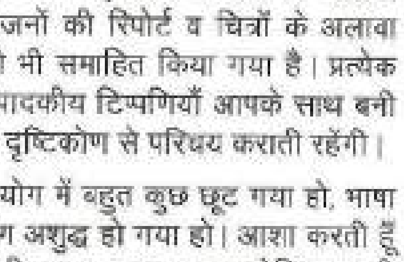

मराठी हिन्दी भाषा বাংলা

आज़ादी का अमृत महोत्सव

अनुक्रमणिका

1.	संपादकीय	1
2.	अनुक्रमणिका	2
3.	परिचय : उप क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर	3
4.	मान्यवरों के संदेश	4
5.	संदेश : नराकास अध्यक्ष	7
6.	मेरी बात : विकास कुन्डल, उप निदेशक (प्रभारी)	8
7.	अज्ज लाम चिट्ठी घर आया–गीत (डोगरी रचना)	9
8.	पंजाब और पंजाबी लोग (पंजाबी रचना)	10
9.	नजरिया (गुजराती रचना)	12
10.	पूर्वोत्तर भारत का इतिहास (असमिया रचना)	14
11.	डॉ. पांडुरंग सदाशिव खानखोजे : एक अनाम क्रांतितारा (मराठी रचना)	16
12.	आत्मविश्वास (तमिल रचना)	18
13.	मेरा भारत महान (सिन्धी रचना)	20
14.	ईएसआईसी है चिंता से मुक्ति (कन्नड रचना)	22
15.	जीवन (मराठी रचना)	23
16.	जीवन सत्य (तेलुगू रचना)	24
17.	इलाहाबाद आवत हईं...। (अवधी रचना)	25
18.	ओणम (मलयालम रचना)	26
19.	सांजवेळ (मराठी रचना)	27
20.	लॉकडाउन ने बिगाड़ा मानसिक स्वास्थ्य (बांग्ला रचना)	28
21.	जबलपुर की मनोरंजक यात्रा (उर्दू रचना)	30
22.	चिल्काझील की विशेषताएं (उडिया रचना)	33
23.	हिंदी के अलावा भी हैं राजभाषाएं (हिंदी रचना)	34
24.	सार्क देशों की सांस्कृतिक धरोहर हिंदी	36
25.	कोरोनाकाल में ईएसआईसी	38
26.	संयुक्त जयंती समारोह	40
27.	व्यापार की भाषा बने हिंदी	42
28.	क्या आपको हिंदी आती है ?	44
29.	जीना इसी का नाम है।	45
30.	आजादी का अमृत महोत्सव और नया भारत	46
31.	कहावतें, लोकोक्ति और मुहावरों का सफर	48
32.	आमंत्रण	49
33.	आओ कम्प्यूटर सीखें	50
34.	बलिदान का यशगान है अमृत महोत्सव	52
35.	सम्मान : डॉ. सुरेश वर्वे	53
36.	अब तुम्हारे हवाले निगम साथियों	54
37.	केन्द्रीय हिंदी समिति का गठन	56
38.	चित्र यात्रा	58
39.	अखबारी सुर्खियाँ	60

घोषणा एवं क्षमा याचना - ... विचारों के लिए रचनाकार उत्तरदायी हैं। ... किसी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र नागपुर होगा। ... इस क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर, कर्मचारी राज्य बीमा निगम ... द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित किया गया है।

... – कॉलिन पॉवेल

आज़ादी का अमृत महोत्सव

परिचय

उप क्षेत्रीय कार्यालय, क.रा.बी.निगम, नागपुर

कार्यक्षेत्र : विदर्भ क्षेत्र, महाराष्ट्र

शाखा कार्यालय / भुगतान कार्यालय

1. शाखा कार्यालय – मॉडल मिल्स, नागपुर
2. शाखा कार्यालय – बगड़गंज, नागपुर
3. शाखा कार्यालय – सदर, नागपुर
4. शाखा कार्यालय – हिंगणा रोड, नागपुर
5. शाखा कार्यालय – बुटीबोरी, नागपुर
6. शाखा कार्यालय – हिंगणघाट, वर्धा
7. शाखा कार्यालय – चंद्रपुर
8. शाखा कार्यालय – अमरावती
9. शाखा कार्यालय – अकोला
10. भुगतान कार्यालय – कलमेश्वर, नागपुर
11. भुगतान कार्यालय – कामठी, नागपुर

औषधालय - सह - शाखा कार्यालय (डीसीबीओ)

1. औषधालय–सह–शाखा कार्यालय – वर्धा
2. औषधालय–सह–शाखा कार्यालय – गडचिरोली
3. औषधालय–सह–शाखा कार्यालय – भंडारा
4. औषधालय–सह–शाखा कार्यालय – गोंदिया
5. औषधालय–सह–शाखा कार्यालय – यवतमाल
6. औषधालय–सह–शाखा कार्यालय – वाशिम
7. औषधालय–सह–शाखा कार्यालय – कोरपना, चंद्रपुर
8. औषधालय–सह–शाखा कार्यालय – खामगाँव, बुलढाणा

चिकित्सा निर्देशी कार्यालय

चिकित्सा निर्देशी का कार्यालय
पता : कर्मचारी राज्य बीमा योजना अस्पताल परिसर
गणेशपेठ, नागपुर, महाराष्ट्र – 440018

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते

संदेश

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
PANCHDEEP BHAWAN, C.I.G. MARG, NEW DELHI-110002
WEB SITE : www.esic.gov.in

डॉ. राजेन्द्र कुमार (आई.ए.एस.)
महानिदेशक

संख्या : ए-48/17/1/2016-रा.भा.

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि उप-क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर ने अपनी गृहपत्रिका के प्रकाशन का एक दशक पूरा कर रहा है। पत्रिका का 10 वाँ अंक भी गुणवत्तापूर्ण हो एवं राजभाषा कार्यान्वयन में सहयोगी बने, यही मेरी कामना है।

10 वें अंक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

राजेन्द्र कुमार

(डॉ. राजेन्द्र कुमार)

श्री विकास कुन्डल
उप-निदेशक (प्रभारी)
उप-क्षेत्रीय कार्यालय, क.रा.बी.निगम,
नागपुर.

अपने पसीने का आनंद उठाइए क्योंकि कठिन परिश्रम सफलता की गारंटी नहीं देता, पर उसके बिना कोई चांस ही नहीं है। - अलेक्स रोड्रिगुएज

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते

संदेश

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
PANCHDEEP BHAWAN, C.I.G. MARG, NEW DELHI-110002
WEB SITE : www.esic.gov.in

दीपक जोशी
बीमा आयुक्त (राजभाषा)

संख्या : ए/49/17/03/2016-रा.भा
दिनांक : 07-02-2023

यह सुखद सूचना है कि उप-क्षेत्रीय कार्यालय की पत्रिका ''दीपज्योति'' के दसवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हिंदी पत्रिका के माध्यम से बहुत कुछ सीखने का अवसर भी मिलता है। यह कर्मचारियों की अभिव्यक्ति के लिए एक अच्छा माध्यम भी है। विश्वास है कि ''दीपज्योति'' का यह अंक सभी के लिए उपयोगी सिद्ध होगा और इससे राजभाषा के प्रचार-प्रसार में आवश्यक मदद मिलेगी।

इस अंक के प्रकाशनार्थ शुभकामनाएँ।

(दीपक जोशी)

श्री विकास कुण्डल
उप-निदेशक (प्रभारी)
उप-क्षेत्रीय कार्यालय, क.रा.बी.निगम,
नागपुर.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

संदेश

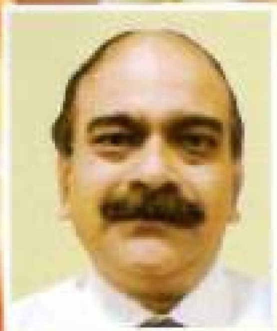

प्रणय सिन्हा
अपर आयुक्त एवं क्षेत्रीय निदेशक

क्षेत्रिय कार्यालय / क्षेत्रीय कार्यालय / Regional Office
कर्मचारी राज्य बिमा महामंडळ/कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
पंचदीप भवन, 108, एन.एम.जोशी मार्ग, लोअर परेल, मुंबई-13
PANCHDEEP BHAWAN, 108, N.M.Joshi Marg, Lower Parel, Mumbai-400 013 WEB SITE : www.esic.gov.in

संख्या : 31/ए/49/30/11/2020-रा.भा.

दिनांक : 02-01-2023

यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि उप-क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नागपुर द्वारा गृहपत्रिका 'दीपज्योति' के **10** वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका से उप क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर के सभी कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा मुखरित होगी । आशा है कि इस पत्रिका के माध्यम से हिंदी के प्रचार को बल मिलेगा तथा यह राजभाषा संबंधी निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रेरणादायक एवं लाभकारी सिद्ध हो सकेगी ।

दीपज्योति पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएँ ।

(प्रणय सिन्हा)

प्रभारी उप निदेशक
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पंचदीप भवन, गणेशपेठ,
उप क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर-18.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

Government of India, Ministry of Home Affairs, Deptt. of Official Language

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.1), नागपुर

Town Official Language Implementation Committee (KA-1), Nagpur

सत्यमेव जयते

एस. रविन्दर कुमार
S. Ravindar Kumar
Chairman & TOLIC (KA-1)
Executive Director (WR-I)
POWERGRID, Nagpur
Phone : 0712-2641475-79

आर. नारायण
R. Narayan
Secretary & TOLIC (KA-1)
GM (HR)
POWERGRID, Nagpur
Mobile : 9419257947
E-mail : narayan@powergrid.in

विनोद कुमार साव
Binod Kumar Shaw
Member cum Secretary & TOLIC (KA-1) CM (Rajbhasha)
POWERGRID, Nagpur
Mobile : 9434031201
E-mail : bkshaw@powergrid.in

अमित कोष्टा
Amit Koshta
Treasurer & TOLIC (KA-1)
Jr. Officer (Accounts)
POWERGRID, Nagpur
Mobile : 9424717620
E-mail : akoshta@powergrid.in

संदर्भ संख्या : नराकास/2022/ विविध/4272 दिनांक : 26.10.2022

सेवा में

कार्यालय प्रमुख
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
उप क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर

महोदय/महोदया,

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका **'दीपज्योति'** का 10वां अंक प्रकाशित होने जा रहा है। यह प्रकाशन आपके कार्यालय में राजभाषा क्रियान्वयन के उज्जवल परम्परा को दर्शाता है।

आज़ादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर भारतीय भाषाओं के संयोजन से तैयार हो रहा यह विशेषांक विभिन्न भाषा-भाषियों के लिए एक स्मरणीय अंक होगा। कार्यालयी कामकाज की परम्परा में क.रा.बी. निगम को मिली उपलब्धियों और राजभाषा संबंधी सामग्री उपयोगी है। राजभाषा पत्रिकाएं कार्यालयीन हिंदी को सबल बनाने एवं कार्मिकों की रचनात्मकता को व्यक्त करने में सहायक साबित होती हैं।

पत्रिका के एक दशक की सफल यात्रा के लिए हार्दिक बधाई। मुझे विश्वास है कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में आपका कार्यालय निरंतर सक्रियता से कार्य करता रहेगा।

शुभकामनाओं सहित।

(एस. रविन्दर कुमार)
अध्यक्ष, नराकास-1, नागपुर

पावरग्रिड POWERGRID

पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
संप्रीति नगर, वारी रिंग रोड, नागपुर-440 026
POWER GRID CORPORATION OF INDIA LIMITED

आज़ादी का अमृत महोत्सव

उप–क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)

Sub-Regional Office Nagpur

Employees' State Insurance Corporation

(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

मेरी बात

विकास कुन्डल

उप निदेशक (प्रभारी)

आपको मेरा सप्रेम नमस्कार !

मेरी मातृभूमि पंजाब तथा मेरी मातृभाषा पंजाबी है। मैंने कभी औपचारिक रूप से हिंदी का अध्ययन नहीं किया। कुछ हद तक मेरा अनुभव हिंदी से बॉलीवुड की फिल्मों से हुआ। परन्तु अधिकतर, मुझे हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान हिंदी में उपलब्ध हमारे आध्यात्मिक भंडार रामायण, महाभारत, पुराण, उपनिषद् इत्यादि से हुआ। जब मेरा स्थानांतरण नागपुर में हुआ तो ज्ञात हुआ कि यहाँ की भौगोलिक स्थिति की वजह से इस स्थान को अंग्रेजों के समय में 'जीरो माइल' का दर्जा दिया गया। 'जीरो माइल' अर्थात यह स्थान उत्तर–दक्षिण और पूरब–पश्चिम का मध्य बिंदु है।

उप क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर से हिंदी पत्रिका दीपज्योति प्रकाशित होती रही है जो कि एक कीर्तिमान स्थापित करने वाली पत्रिका रही है। अतः इसका हर अंक किसी न किसी मंच से पुरस्कृत हुआ है। जब इसके विजय यात्रा की कमान मेरे हाथों में आई तो सहज ही मन में विचार आया कि विश्व हिंदी सम्मेलनों का शंखनाद करने वाले नागपुर का भाषा संस्कार तो बड़ा ही अनोखा है। यहाँ बहुत भारतीय भाषाएँ बोलने वाले लोग मिल जाते हैं। देश की भौगोलिक केंद्र बिंदु 'जीरो माइल' की भाँति, हिंदी देश की भाषाओं का केंद्र–बिन्दु अर्थात 'जीरो माइल' है। अतः हिंदी को सभी भारतीय भाषाओं की 'जीरो माइल' कहना और मानना उचित होगा। जैसा देश का हर प्रान्त, हर राज्य, हर स्थान समान रूप से विशेष है परन्तु केंद्र–बिन्दु अर्थात 'जीरो माइल' एक ही हो सकता है, उसी भाँति देश की हर भाषा, हर बोली समान रूप से हमारे आदर व सम्मान की हकदार है परन्तु 'जीरो माइल' एक हिन्दी ही हो सकती है।

इसी विचार ने भारतीय भाषाओं की रचनाओं का संकलन तैयार कर पत्रिका के दसवें अंक को प्रकाशित करने की प्रेरणा दी जिसे उप–क्षेत्रीय कार्यालय के कार्मिकों ने बड़े ही परिश्रम और मनोयोग से तैयार करने में मदद की है। पत्रिका के माध्यम से हमारी व्यक्तिगत अभिरुचि ही नहीं बल्कि संवैधानिक उत्तरदायित्व भी झलकता है।

मुझे विश्वास है कि जब यह पत्रिका देश के कोने–कोने में जाएगी तो हर पाठक को अपनी सी लगेगी। यही राजभाषा नीति की अवधारणा है और मेरी समझ से, यही अनुच्छेद–351 की अपेक्षा भी है। आशा करता हूँ कि आपकी मार्गदर्शी प्रतिक्रियाएं जरूर मिलेंगी।

धन्यवाद।

प्रतिभा के बिना मेहनत शर्म की बात है, लेकिन काफ़ी मेहनत के बिना प्रतिभा एक त्रासदी है. – रॉबर्ट हाफ

अज्ज लाम जित्ती घर आया

विकास कुण्डल
उप निदेशक (प्रभारी)

भारत देश के उत्तर भाग की उन्नत भाषा है डोगरी। डोगरी भारत के जम्मू, हिमाचल के कांगड़ा और उत्तरी पंजाब के कुछ प्रान्त में बोली जाने वाली भाषा है। वर्ष २००३ में इसे भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया है। डोगरी की प्रसिद्ध रचनाकार पद्मश्री पद्मा सचदेव जी की कृति का रसास्वादन कीजिए। आजादी के अमृत महोत्सव को ध्यान में रखते हुए एक वीर डोगरा सिपाही को समर्पित एक गीत।

अज्ज लाम जित्ती घर आया (मूल डोगरी)

अज्ज लाम जित्ती घर आया,
शपाई मेरा डोगरा।

हत्थ बन्दूक, गले इच गान्नी,
बांकी टोर डोल मसतानी,
नैन कटोरे, रंग शमानी,
चन्न दिखियै शरमाया,
शपाई मेरा डोगरा।

जि'नें बैरकें रौहन शपाई,
उंदे उप्परा अं'ऊं घमाई,
छुट्टीयां औंदे ब'रें छमाही,
मन्ना डाहढा लाया,
शपाई मेरा डोगरा।

आई बसाखी, कनकां पक्कीयां,
दिक्खी–दिक्खी हुट्टियां अक्खीयां,
सोची–सोची रैही गेईयां सखीयां,
काट कोई नहीं आया,
शपाई मेरा डोगरा।

लंजकां सुक्खीयां, छिल्लू चाढ़हे,
कदूं घर औन शपाई साढ़हे,
कलमां भन्नीयां, कागज फाड़े,
चिट्ठि लिखने दा नेईं आया,
शपाई मेरा डोगरा।

– पद्मा सचदेव
(पद्म श्री पुरस्कार (2001)
साहित्य अकादमी पुरस्कार (1971)

अज्ज लाम जित्ती घर आया (हिन्दी अनुवाद)

आज जंग जीत के घर है आया,
मेरा सिपाही डोगरा।

हाथ में बन्दूक, गले में गान्नी (माला),
बांका जवान, चाल मस्तानी,
नैन कटोरे, रंग आसमानी,
चांद भी जिसे देख शर्माया,
मेरा सिपाही डोगरा।

बैरकों में जो रहें सिपाही,
उनके सिर मैं वारी जाई,
जो छुट्टी आए साल, छह–माही,
मन मेरा उदास बनाया,
मेरा सिपाही डोगरा।

आई बैसाखी, लहराई फसलें,
राह देख थक गईं आँखें,
सोच–सोच रह गई सखिएं,
कोई चिट्ठी–पत्र नहीं आया,
मेरा सिपाही डोगरा।

रखे व्रत, किए पुण्य–दान,
कब घर आये सिपाही हमार,
तोड़ीं कलमें, फटे कागज हजार,
लिखने का नहीं तौर आया,
मेरा सिपाही डोगरा।

– अनुवादक : विकास कुण्डल

पंजाब और पंजाबी लोग

दिलों पर छा जाने वाली भाषा है पंजाबी। मस्त है पंजाबी, ज़बरदस्त है पंजाबी। यह भले रहती तो पंजाब में है पर कोई ऐसी शादी या पार्टी नहीं है जिसमें पंजाबी गाने की धूम ना होती हो। पंजाबी का साहित्य भी उतना ही उम्दा और झकझोर देने वाला है। ऐसी शानदार पंजाबी भाषा की एक रचना यहाँ संकलित है।

विकास कुण्डल
उप निदेशक (प्रभारी)

ਪੰਜਾਬ ਅਤੇ ਪੰਜਾਬਿਅਤ (मूल पंजाबी)

ਭਾਰਤ ਹੈ ਵਾਂਗ ਮੁੰਦਰੀ
ਵਿਚ ਨਗ ਪੰਜਾਬ ਦਾ।
ਭਾਰਤ ਹੈ ਜੇ ਸਰਾਬ
ਇਹ ਨਸ਼ਾ ਸ਼ਰਾਬ ਦਾ।

ਆਵਣ ਨੂੰ ਤਾਂ ਜਵਾਨੀਆਂ
ਹਰ ਇਕ ਤੇ ਆਉਂਦੀਆਂ
ਪਰ ਹੋਰ ਹੀ ਹਿਸਾਬ ਹੈ
ਸਾਡੇ ਸ਼ਬਾਬ ਦਾ।

ਗੰਗਾ ਬਣਾਵੇ ਦੇਵਤੇ
ਤੇ ਜਮਨਾ ਦੇਵੀਆਂ
ਆਸ਼ਕ ਮਗਰ ਬਣਾ ਸਕੇ
ਪਾਣੀ ਚਨ੍ਹਾਬ ਦਾ।

- ਪ੍ਰੋ ਮੋਹਨ ਸਿੰਘ

पंजाब और पंजाबी लोग (हिन्दी अनुवाद)

भारत है जैसे अंगूठी
जड़ा इसमें नगीना पंजाब का।
यदि भारत को मानें मदिरा
तो यह नशा उस मद्य का।

आने को तो यौवन
हर एक पर है आता, मगर
कुछ और ही हिसाब है
हमारे शबाब का।

गंगा से जन्मे देवता
यमुना से आईं देवियाँ
प्रेमी मगर उभरे पी कर
पानी चनाब का।

- प्रो. मोहन सिंह

ਪੰਜਾਬ ਭਾਰਤ ਦੇ ਉੱਤਰੀ ਹਿੱਸੇ ਵਿੱਚ ਸਥਿਤ ਹੈ। 'ਪੰਜਾਬ' ਸ਼ਬਦ ਦੋ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦਾ ਜੋੜ ਹੈ: 'ਪੰਜ' ਮਤਲਬ '5' ਅਤੇ 'ਆਬ' ਮਤਲਬ ਪਾਣੀ। ਏਹ ਨਾਂ ਇਸ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਵੱਗਦੇ ਪੰਜ ਦਰਿਆਵਾਂ ਦੇ ਕਾਰਣ ਪਿਆ, ਜਿਹੜੇ ਹਨ: ਚਨ੍ਹਾਬ, ਰਾਵੀ, ਬਿਆਸ, ਜੇਹਲਮ ਅਤੇ ਸਤਲੁਜ। ਏਨ੍ਹਾਂ ਪੰਜ ਦਰਿਆਵਾਂ ਦੇ ਕਾਰਣ ਹੀ ਇਥੇ ਦੀ ਧਰਤੀ ਸ਼ੁਰੂ ਤੋਂ ਹੀ ਉਪਜਾਊ ਰਹੀ। ਏਹੀ ਇਸ ਖੇਤਰ ਦੀ ਬੇਮਿਸਾਲ ਤਰੱਕੀ ਤੇ ਭਾਰਤ ਦੇ ਵਿਕਾਸ ਵਿੱਚ ਵਡਮੁੱਲੇ ਯੋਗਦਾਨ ਦਾ ਬੁਨਿਆਦੀ ਕਾਰਣ ਹੈ।

पंजाब क्षेत्र भारत के उत्तरी भाग में स्थित है। 'पंजाब' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है : 'पंज' का अर्थ है '5' (पाँच) और 'आब' का अर्थ है 'पानी'। इस क्षेत्र में बहने वाली पाँच नदियाँ : चिनाब, रावी, ब्यास, झेलम और सतलुज, इस स्थान को पंजाब बनाती हैं। इन पाँच नदियों के कारण यहाँ की भूमि प्रारंभ से ही उपजाऊ रही। यही इस क्षेत्र की अभूतपूर्व प्रगति और भारत के विकास में इसके स्थान के बहुमूल्य योगदान का मूल कारण है।

 कठिन परिश्रम झुर्रियों को मन और आत्मा से बाहर रखता है। - हेलेना रुबिंसटेन

ਜਿੱਥੇ ਪੰਜਾਬ ਸਦੀਆਂ ਤੋਂ ਲਹਿ-ਲਹਾਂਦੇ ਖੇਤਾਂ ਲਈ ਅਤੇ ਖੁਸ਼ਹਾਲੀ ਲਈ ਮਸ਼ਹੂਰ ਸੀ, ਉੱਥੇ ਇਹ ਹਮੇਸ਼ਾਂ ਤੋਂ ਮੱਧ ਏਸ਼ੀਆ ਅਤੇ ਯੂਰਪੀ ਦੇਸ਼ਾਂ ਦੀ ਅੱਖ ਵਿੱਚ ਰੜਕਦਾ ਰਹਿੰਦਾ | ਗੌਰ ਤਲਬ ਹੈ ਕਿ ਸਤਾਰਵੀਂ ਤੇ ਅਠਾਰਵੀਂ ਸ਼ਤਾਬਦੀ ਵਿੱਚ ਪੱਛਮੀ ਯੂਰੋਪ ਤੋਂ ਆਈਆਂ ਸਾਮਰਾਜੀ ਤਾਕਤਾਂ ਨੂ ਛੱਡ ਕੇ, ਉਸਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਦੇ ਸਾਰੇ ਹਮਲਾਵਰ ਪੰਜਾਬ ਵੱਲੋਂ ਹੀ ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਦਾਖ਼ਲ ਹੋਏ | ਇਸ ਇਤਿਹਾਸ ਦੇ ਦੋ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਨਤੀਜੇ ਹੋਏ : ਪਹਿਲਾ, ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਵਿੱਚ ਬਹਾਦਰੀ, ਦਲੇਰੀ ਤੇ ਦੇਸ਼ ਲਈ ਕੁਰਬਾਨੀ ਦਾ ਜਜ਼ਬਾ ਕੁੱਟ - ਕੁੱਟ ਕੇ ਭਰ ਗਿਆ; ਦੂਸਰਾ, ਹਰ ਪਲ ਖੁੱਲ ਕੇ ਜਿਊਣ ਦੀ ਆਦਤ ਪੈ ਗਈ | ਮੁਗ਼ਲਾਂ ਦੇ ਅੱਤਿਆਚਾਰ ਦੇ ਖਿਲਾਫ਼ ਗੁਰੂਆਂ ਦੀਆਂ ਸ਼ਹਾਦਤਾਂ ਅਤੇ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਲਈ ਪੰਜਾਬੀਆਂ ਦੀਆਂ ਕੁਰਬਾਨੀਆਂ ਕਰਕੇ ਏਥੋਂ ਦੀ ਪੀੜ੍ਹੀਆਂ ਨੂੰ ਦੇਸ਼-ਭਗਤੀ ਅਤੇ ਕਮਜ਼ੋਰਾਂ ਦੇ ਹੱਕ ਲਈ ਅੜਿੱਗ ਹੋਕੇ ਖੜ੍ਹਨਾ ਸੁਭਾਵਿਕ ਹੀ ਆ ਗਿਆ |

ਜੇ ਕਰ ਅਸੀਂ ਭਾਰਤ ਦਾ ਨਕਸ਼ਾ ਗੌਰ ਨਾਲ ਵੇਖੀਏ ਤਾਂ ਇਹ ਬਾਹਾਂ ਖੋਲੇ ਖੜੋਤੇ ਇਨਸਾਨ ਦੀ ਮੂਰਤ ਬਣਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਪੰਜਾਬ ਉਸਦੀ ਗਰਦਨ ਦੀ ਥਾਂ ਦਿਖੇਗਾ | ਇਸ ਗਰਦਨ ਨੂੰ ਦਬੋਚਣ ਲਈ ਹੀ ਹਮਲਾਵਰ ਬਾਰ-ਬਾਰ ਆਉਂਦੇ ਤੇ ਲੁੱਟ-ਮਾਰ ਮਚਾ ਕੇ ਚਲੇ ਜਾਂਦੇ | ਇੱਕ ਭਿਆਨਕ ਹਮਲਾਵਰ 'ਅਹਮਦ ਸ਼ਾਹ ਅਬਦਾਲੀ' ਦੇ ਬਾਰ-ਬਾਰ ਆਉਣ ਨੇ ਪੰਜਾਬੀਆਂ ਦੇ ਸੁਭਾ ਨੂ ਹੀ ਬਦਲ ਕੇ ਰੱਖ ਦਿੱਤਾ ਅਤੇ ਇੱਕ ਕਹਾਵਤ ਬਣ ਗਈ: "ਖਾਧਾ-ਪੀਤਾ ਲਾਹੇ ਦਾ, ਬਾਕੀ ਅਬਦਾਲ ਸ਼ਾਹੇ ਦਾ"| ਇਸ ਦਾ ਭਾਵ ਹੈ ਕਿ ਜੋ ਕੁਝ ਵੀ ਖਾ-ਪੀ ਲਿਆ ਬੱਸ ਓਹ ਹੀ ਆਪਣਾ ਹੈ | ਉਸ ਪਿੱਛੋਂ ਆਉਣ ਵਾਲੀਆਂ ਪੁਸ਼ਤਾਂ ਨੇ ਦੌਲਤ ਇਕੱਠੀ ਕਰਨੀ ਹੀ ਛੱਡ ਦਿੱਤੀ ਅਤੇ ਵਰਤਮਾਨ ਵਿੱਚ ਜਿਊਣਾ ਸਿੱਖ ਲਿਆ | ਏਹੀ ਕਾਰਣ ਹੈ ਕਿ ਪੰਜਾਬੀਆਂ ਦੇ ਦਿਲਾਂ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਵੱਡੇ ਗਿਣਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ |

ਅੱਜ ਵੀ, ਦੇਸ਼ ਜਾਂ ਪਰਦੇਸ ਵਿੱਚ, ਕਿੱਥੇ ਵੀ ਕੋਈ ਆਪਦਾ ਆਉਂਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਪੰਜਾਬੀ ਉੱਥੇ ਲੰਗਰ ਲਗਾਉਂਦੇ ਹਨ, ਦਵਾਈਆਂ ਵੰਡਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਦਿਲੋਂ ਸੇਵਾ ਕਰਦੇ ਹਨ | ਪੰਜਾਬੀਆਂ ਨੂ ਅਨਿਆਇ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਡਟਣ ਦਾ ਅਤੇ ਕਮਜ਼ੋਰਾਂ ਦੇ ਹੱਕ ਲਈ ਖੜਨ ਦਾ ਅਨੂਠਾ ਵਰਦਾਨ ਗੁਰੂਆਂ, ਪੀਰਾਂ ਤੇ ਪੈਗੰਬਰਾਂ ਦੀ ਧਰਤੀ ਪੰਜਾਬ ਤੋਂ ਵਿਰਸੇ ਵਿੱਚ ਮਿਲਿਆ ਹੈ |

ਮੈਂ, ਆਪਣੀ ਮਾਤ-ਭੂਮੀ ਪੰਜਾਬ, ਭਾਰਤ ਦਾ ਸਿਰ ਉੱਚਾ ਰੱਖਣ ਵਾਲੀ ਗਰਦਨ ਅਤੇ ਆਪਣੀ ਮਾਂਬੋਲੀ ਪੰਜਾਬੀ ਨੂੰ ਕੋਟਿ-ਕੋਟਿ ਨਮਨ ਕਰਦਾ ਹਾਂ |

ਜੋ ਬੋਲੇ ਸੋ ਨਿਹਾਲ!
ਸਤਿ ਸ੍ਰੀ ਅਕਾਲ !!

विकास कुण्डल
उप निदेशक (प्रभारी)

पंजाब सदियों से ही अपने हरे–भरे खेतों और समृद्धि के लिए प्रसिद्ध था। यही कारण था कि यह स्थान हमेशा मध्य–एशियाई और यूरोपीय देशों की निगाहें में खटकता था। यह ध्यान देने योग्य है कि सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में पश्चिमी यूरोप से आई साम्राज्यवादी ताकतों को छोड़कर, पिछले सभी आक्रमणकारियों ने पंजाब से ही भारत में प्रवेश किया। इस इतिहास के दो महत्वपूर्ण परिणाम हुए : पहला, पंजाब के लोगों में देश के लिए शौर्य, साहस और बलिदान की भावना भरी दूसरा, यहाँ के लोगों को हर पल खुलकर जीने की आदत पड़ गई। मुगलों के अत्याचारों के खिलाफ सिख गुरुओं की शहादत, और देश की आजादी के लिए पंजाबियों की कुर्बानिओं के कारण यहाँ की पीढ़ियों के लिए देशभक्ति और कमजोरों के अधिकारों के लिए खड़ा होना स्वाभाविक हो गया।

अगर हम भारत के नक्शे को ध्यान से देखें तो प्रतीत होगा जैसे कोई आदमी बाहें फैलाए खड़ा हो और उसकी गर्दन की जगह पर पंजाब होगा। इस गर्दन को दबोचने के लिए हमलावर बार–बार आते थे और लूटपाट मचा कर चले जाते थे। एक भयानक आक्रमणकारी 'अहमद शाह अब्दाली' के बार–बार हमला करने से पंजाबियों का मिजाज ही बदल गया और एक प्रचलित कहावत बन गई : 'जो खा–पी लिया रहा अपना वो, बाकी सौंप दिया अब्दाली शाह को'। इसका मतलब है कि आप जो कुछ भी खाते–पीते हैं, बस वही आपका अपना रह जाता है। उस समय के बाद आने वाली पीढ़ियों ने दौलत कमाना बंद कर दिया और वर्तमान में जीना सीख लिया। यही वजह है कि पंजाबियों को विशाल–हृदय माना जाता है।

आज भी, देश या विदेश में कहीं भी आपदा आती है तो पंजाबी लंगर लगाते हैं, दवाइयाँ बाँटते हैं और जी–जान से सेवा करते हैं। गुरुओं, पीरों और पैगम्बरों की धरती पंजाब से, अन्याय के खिलाफ खड़े होने और कमजोरों के हक के लिए लड़ने का अनूठा वरदान पंजाबियों को विरासत में मिला है।

मैं अपनी मातृभूमि पंजाब, भारत का मस्तक सदैव ऊँचा करने वाली गर्दन को और अपनी मातृभाषा पंजाबी को प्रणाम करता हूँ।

'ईश्वर ही अन्तिम सत्य है'
लगाओ जय–जयकार, पाओ ईश्वर का आशीर्वाद !!

अनुवाद : विकास कुण्डल

आज़ादी का अमृत महोत्सव

नज़रिया

उत्सवों की भाषा है गुजराती । देश का गर्व और अभिमान है गुजराती । व्यापार में अव्वल तो अभिजात्य भी है गुजराती । ये गांधी की मातृभाषा है जो हिन्दी की सबसे बड़ी समर्थक है। संविधान निर्माण के वक्त से ही गुजराती को आठवीं अनुसूची में स्थान प्राप्त है। इस भाषा ने देश के अलावा विदेशों में भी पैठ बना रखी है।

प्रवीण सहगल
उप निदेशक

दृष्टिकोण (मूल गुजराती)

એક માણસ જે નાખુશ છે
માત્ર દીકરીઓનોપિતા હોવાથી
અને જે ઝંખે છે
કોઈના મોઢેથી પપ્પા સાંભળવા
તે પણ એકમાણસ છે.

એક માણસ દુખી છે
નવા મોડલની કાર ના મળતા
પોતાની જૂની કાર ચલાવાની હરજ થી
અને જે "સેકન્ડ હેન્ડ" સાઈકલ માટે
દરરોજ પૈસા ઉમેરે છે
તે પણ એકમાણસ છે

એક માણસ તે છે જે પરેશાન છે
પોસ્ટિંગના સ્થળે અને ઓછા પગાર ધોરણથી
અને જે લોકડાઉન પછી માત્ર એક નોકરીની
રાહ જોઈ રહ્યો છે. તે પણ એકમાણસ છે.

એક માણસ દુખી છે
વૈભવી બંગલાને બદલે
માત્ર એક ફ્લેટ હોવા થી.
અને દર રાત્રેરસ્તાપર સૂઈ
પોતાના ઘરનુંસ્વપ્ન માત્રજોવા શાપિત છે
તે પણ એકમાણસ છે.
એક માણસ ચિંતિત છે
દીકરીના કોન્વેન્ટ સ્કૂલના

दृष्टिकोण (हिन्दी अनुवाद)

एक आदमी वो है जो नाखुश है
सिर्फ बेटियों का बाप होने से,
और जो तरस रहा
किसी के मुँह से पापा सुनने को
वो भी एक इंसान है.

एक आदमी दुखी है
नए मॉडल की कार के बजाय
अपनी पुरानी कार चलानी की विवशता से,
और जो एक 'सेकंड हैण्ड' साईकिल के लिए
रोज पैसे जोड़ रहा है
वो भी एक इंसान है.

एक आदमी वो है जो परेशान है
अपने नियुक्ति स्थल और कम वेतनमान से,
और जो लोकडाउन के बाद से कर रहा है इंतजार
बस एक अदद नौकरी का. वो भी एक इंसान है

एक आदमी उदास है
किसी शानदार बंगले के बजाय
सिर्फ एक फ्लैट का मालिक होने से,
और जो रोज रात सड़क किनारे पटरी पर सोता
कभी अपनी भी एक छत होने का
सपना ही देखने को अभिशप्त है
वो भी एक इंसान है

एक आदमी चिंतित है
अपनी बेटी के कान्वेंट स्कूल
के अतिरिक्त खर्चों से,
और जो अपने "कमाऊ" बेटे का बचपन

अगर कड़ी मेहनत इतनी अद्भुत चीज होती तो निश्चित रूप से अमीर उसे अपने पास ही रखते। - जोसेफ किर्कलैंड

વધારાના ખર્ચે થી .
અને તેના "કમાતો" પુત્રનું બાળપણ
અભણરાખવા મજબૂર છે
તે પણ એકમાણસ છે.
એક વ્યક્તિ એવી છે જે નાખુશ છે
આટલું પ્રોટીન સપ્લિમેન્ટ ખાધા પછી પણ
હીરોની જેમ સુડોળ બાજુ દેખાતા નથી
અનેએ જે કામ કરતી વખતે અકસ્માતમાં
પોતાના બંને હાથ ગુમાવ્યા છે. તે પણ એકમાણસ છે.
કેટલા નાના અને અર્થહીન કારણોસર

રહીએ છે અમે ચિંતિત
અને કરીએ પોતાને વંચિત
આ સુંદર દુનિયામાં
જીવનનો આનંદ માણવા થી
આપણે બધા જાણીએ અને માનીએ છીએ
અડધા ભરેલાં ગ્લાસનું
ખાલીપણું માપવું મૂર્ખતા છે.
છતાં .....

આ દુનિયામાં જેને "બધા સુખ" મળ્યા
એ "કોઈ નથી" અને
જેને "કોઈ દુઃખ નથી"
એવું પણ "કોઈ નથી".

આપણી આંખો સપનામાં માત્ર એ જુએ છે
બીજા પાસે જે છે, પણ આપણી પાસે નથી.
અમે ક્યારેય એ જોઈ શકતા નથી
કે જે આજે આપણી પાસે છે
તે ઘણા લોકો ને ઉપલબ્ધ નથી.

તેના માટે અમે હંમેશા ઉદાસ રહીએ છીએ
જે "મળતું " નથી
અને આજે આપણે જે "પ્રાપ્ત" છે
અમે તેનો આનંદ લેતા નથી

બસ તમારા મનના ઘોડાની લગામ પકડી રાખો
જે છે તેમાં સંતોષ રહેવાની કળા જાણવી રાખો
આ પણ ઘણા લોકો માટે ઉપલબ્ધ નથી.આ જાણવાનું છે
જે કંઈ મળ્યું છે તે પ્રભુનો આભાર માણવું છે

अनपढ़ रखने को मजबूर है
वो भी एक इंसान है.

एक इंसान वो है जो दुखी है
इतना प्रोटीन सप्लीमेंट खाने के बाद भी
हीरो जैसे बाजू सुडौलन दिखने से
और जो खो चुका है अपने दोनों हाथ
काम के दौरान हादसे में, वो भी एक इंसान है
कितने छोटे छोटे और कितने अर्थहीन कारणों से

रहते हैं हम चिंतित
करते हैं स्वयं को वंचित
इस सुन्दर संसार में
जीवन का आनंद लेने से.
हम सभी जानते हैं और ये मानते हैं
आधे भरे गिलास का

खालीपन मापना मूर्खता है.
फिर भी .....
इस संसार में, जिसे "सभी सुख" हासिल हों
ऐसा "कोई नहीं" और
जिसे "कोई भी दुख" न हो
ऐसा भी "कोई नहीं".

हमारी आखें सपनों में सिर्फ वही देखती हैं
जो दूसरों के पास है, पर हमारे पास नहीं.
हम कभी ये नहीं देख पाते
जो आज हमारे पास है
वो कितने ही दूसरों को मयस्सर नहीं.

सदा दुखी रहते हैं उसके लिए
जो हमें "प्राप्त" नहीं
और जो "प्राप्त" है आज हमें
उसका सुख लेते नहीं.

बस अपने मन के घोड़े की लगाम थामनी है
जो है उसमें संतुष्ट रहने की कला जाननी है
बहुतों को ये भी मयस्सर नहीं, यही तो जानना है
जो भी मिला बहुत है, प्रभु का धन्यवाद मानना है

पूर्वोत्तर भारत का इतिहास

पूर्वोत्तर भारत विभिन्न भाषाओं की खान है। पूर्वोत्तर की भाषाओं में असमिया प्रतिनिधि भाषा है। असमिया का साहित्य जनजातीय विषय वस्तुओं से समृद्ध है। यहां प्राकृतिक क्षेत्र में जीवन रोचक भी है और कठिन भी। ऐसे में व्यक्ति का आत्मसाहस ही सहयोगी सिद्ध होता है। इस लेख में पूर्वोत्तर के इतिहास का परिचय प्राप्त होता है।

मनोज कुमार यादव
सहायक निदेशक

উত্তৰ পূব ভাৰতৰ ইততহাস (মূল অসমিয়া)

গুৰুত্বপূৰ্ণ পৰিঘটনাসমূহ:

১/ ৩য় শতিকাত গুপ্ত সাম্ৰাজ্য ভাৰতৰ ভিতৰতে সৰ্ববৃহৎ আছিল।

২) ৩৫০ খ্ৰীষ্টাব্দত প্ৰতিষ্ঠা হোৱা কামৰূপ আৰু দৱকা ৰাজ্য বৰ্তমানৰ উত্তৰ-পূব ভাৰতৰ আদিম নাম।

৩) ১২০৬ খ্ৰীষ্টাব্দত দিল্লী চুলতানে ভাৰতৰ প্ৰধান অংশ দখল কৰিছিল।

৪) আহোম-মোগল যুদ্ধ হৈছিল ১৬১৫-১৬৮২ চনৰ ভিতৰত।

৫) ১৬৭১ চনত জেনেৰেল লাচিত বৰফুকন আহোমৰ নেতৃত্বত শৰাইঘাটৰ যুদ্ধত মোগলক পৰাস্ত কৰে।

উত্তৰ-পূব ভাৰত প্ৰতিষ্ঠা হোৱা পৰিৱৰ্তনৰ ইতিহাস ৩ শতিকাৰ আৰম্ভণিৰ পৰাই যেতিয়া গুপ্ত সাম্ৰাজ্য আছিল দেশখনৰ আটাইতকৈ ডাঙৰ সাম্ৰাজ্য। তেতিয়াৰ কামৰূপ আৰু দৱকা সাম্ৰাজ্য যি গুপ্ত সাম্ৰাজ্যৰ উত্তৰ দিশত আছিল আজিৰ সমস্ত আমি জনা ৰাজ্য যেনে অসম, মণিপুৰ, নাগালেণ্ড, অৰুণাচল প্ৰদেশ আদিৰ আদিম নাম।৫ম শতিকাৰ শেষলৈকে কামৰূপ সাম্ৰাজ্যই নিজৰ দখল লৈছিল দৱকা সাম্ৰাজ্য।

১২০৬ চনৰ আশে-পাশে ক বৰ্তন দিল্লী চুলতানে ভাৰতৰ উত্তৰ অংশ দখল কৰিছিল। প্ৰায় ১২২৬ খ্ৰীষ্টাব্দত দিল্লী চুলতানে কামৰূপ সাম্ৰাজ্যৰ বিৰুদ্ধে যুদ্ধ চলাইছিল যদিও যুদ্ধত পৰাস্ত হৈছিল। যুদ্ধৰ সূচনা আৰু পৰিৱৰ্তনী

पूर्वोत्तर भारत का इतिहास (हिंदी अनुवाद)

महत्वपूर्ण घटनाएँ:

1. तीसरी शताब्दी में गुप्त साम्राज्य भारत में सबसे बड़ा था।

2. 350 ईस्वी में स्थापित कामरूप और दावका साम्राज्य, वर्तमान उत्तर पूर्व भारत के लिए आदिम नाम थे।

3. 1206 ई. में दिल्ली सल्तनत ने भारत के प्रमुख भागों पर अधिकार कर लिया था।

4. अहोम–मुगल युद्ध 1615–1682 के बीच हुआ था।

5. 1671 में जनरल लचित बोरफुकन अहोम के नेतृत्व में सरायघाट की लड़ाई में मुगलों को हराया।

पूर्वोत्तर भारत के स्थापना के संबंध में जब हम पिछले ऐतिहासिक घटनाक्रम में झाँकते हैं तो पता चलता है कि 3री शताब्दी में धरती पर गुप्त साम्राज्य सबसे बड़ा था। उस समय कामरूप और दावका साम्राज्य जो गुप्त साम्राज्य के बाद उदय हुए थे, जो इन राज्यों के आदिम नाम थे जिन्हें हम आज असम, मणिपुर, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश आदि के नाम से जानते हैं। 5 वीं शताब्दी के अंत तक कामरूप साम्राज्य ने दावका साम्राज्य पर अधिकार कर लिया था।

करीब 1206 के आसपास दिल्ली सल्तनत ने पूर्वोत्तर पर कब्जा कर लिया था। 1226 ईस्वी के आसपास दिल्ली सल्तनत ने कामरूप साम्राज्य के खिलाफ युद्ध छेड़ा लेकिन सफलता मिली। युद्ध की घटनाओं ने उस क्षेत्र में कामरूप साम्राज्य की पकड़ को कमजोर कर दिया,

সেই অঞ্চলত কামৰূপ ৰাজ্যৰ দখল দুৰ্বল কৰি পেলালে যাৰ ফলত সদিয়া, আহোম & কাছাৰ ৰাজ্যৰ জন্ম হয়।

১২২৮ খ্ৰীষ্টাব্দত প্ৰতিষ্ঠা হোৱা আহোম ৰাজ্যই ভূমিৰ ওপৰত ডাঙৰ নিয়ন্ত্ৰণ লৈছিল। ১৬১৫ চনত "আহোম-মোগল" যুদ্ধ হৈছিল যি ১৬৮২ চনলৈকে চলি আছিল।

এই দীঘলীয়া যুদ্ধৰ সমগ্ৰ সময়ছোৱাত আহোমসকলে মোগলক ১৭ বাৰ পৰাজিত কৰিবলৈ সক্ষম হৈছিল। ১৬৭১ চনত সংঘটিত হয় বিখ্যাত "সৰাইঘাট যুদ্ধ" যি জেনেৰেল লাচিত বৰফুকন আহোমৰ নেতৃত্বত ব্ৰহ্মপুত্ৰ নদীত সংঘটিত হোৱা যুদ্ধত মোগলক পৰাস্ত কৰে। ১৬৮২ খ্ৰীষ্টাব্দত আহোমসকলে ইটাখুলি যুদ্ধত পুনৰ মোগলক পৰাস্ত কৰি উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ পৰা মোগলক খেদি পঠিয়াবলৈ সক্ষম হয়, তাৰ পিছত মোগলে কেতিয়াও উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলত আক্ৰমণ কৰা নাছিল।

১৮ শতিকাৰ মাজভাগত আহোমসকলে আভ্যন্তৰীণ সংঘাতৰ সৈতে মোকাবিলা কৰিবলগীয়া হৈছিল যাৰ ফলত তেওঁলোকে ভূমিৰ দখল হেৰুৱাই পেলাইছিল আৰু ১৮১৭ খ্ৰীষ্টাব্দত তাৰ সুযোগ লৈ বাৰ্মিজ সাম্ৰাজ্যই অসম আক্ৰমণ কৰি ভাৰতৰ উত্তৰ-পূব অংশ দখল কৰিছিল। ১৮২৪ চনত প্ৰথম "এংলো-বাৰ্মিজ যুদ্ধ" সংঘটিত হয়। ব্ৰিটিছ সাম্ৰাজ্যৰ হাতত পৰাস্ত হোৱাৰ পিছত ১৮২৬ চনৰ ২৪ ফেব্ৰুৱাৰীত "ইয়াণ্ডাবো সন্ধি" স্বাক্ষৰিত হয় আৰু ইংৰাজে উত্তৰ-পূব অঞ্চলটো নিজৰ দখললৈ লৈ যায়। ১৯৪৭ চনত স্বাধীনতাৰ সময়ত অসম ৰাজ্য পুনৰ মণিপুৰ আৰু নাগালেণ্ডৰ সৈতে সংযুক্ত হয় আৰু উত্তৰ-পূব ভাৰত পুনৰ গঠন হয় য'ত বংগৰ কিছু অংশই পূব পাকিস্তানৰ অংশ হোৱাৰ সিদ্ধান্ত লয় যিটো বৰ্তমান বাংলাদেশ নামেৰে জনাজাত।

\- স্বপ্না দে

जिसके कारण सदिया, अहोम और कछार साम्राज्य का जन्म हुआ।

1228 ईस्वी में स्थापित अहोम साम्राज्य ने उस क्षेत्र पर बड़ा नियंत्रण कर लिया था। 1615 में 'अहोम–मुगल' युद्ध आरंभ हुआ था जो 1682 तक जारी रहा।

इस लंबे युद्ध की अवधि के दौरान अहोम 17 बार मुगलों को हराने में सक्षम रहे। 1671 में प्रसिद्ध 'सरायघाट युद्ध' हुआ, जिसमें जनरल लचित बोरफुकोन अहोम के नेतृत्व में ब्रह्मपुत्र नदी में हुए युद्ध में मुगलों को हराया। 1682 ई. में अहोम इटाखुली की लड़ाई में मुगलों को फिर से पराजित करने में सक्षम हुए और मुगलों को उत्तर पूर्व से खदेड़ने में सक्षम हुए, जिसके बाद मुगलों ने उत्तर पूर्व पर कभी हमला नहीं किया।

18 वीं शताब्दी के मध्य में अहोम को आंतरिक संघर्षों से जूझना पड़ा जिसके कारण भूमि पर उनकी पकड़ ढीली हो गई और 1817 ईस्वी में बर्मी साम्राज्य ने इसका फायदा उठाया और असम पर हमला किया और भारत के उत्तर पूर्वी हिस्से पर कब्जा कर लिया। 1824 ई. में पहला 'एंग्लो–बर्मी युद्ध' हुआ। ब्रिटिश साम्राज्य से हारने के बाद, 24 फरवरी, 1826 में 'यंडाबो की संधि' पर हस्ताक्षर किए गए और अँग्रेजों ने पूर्वोत्तर क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। 1947 ई. में स्वतंत्रता के दौरान असम राज्य को फिर से मणिपुर और नागालैंड के साथ जोड़ा गया और पूर्वोत्तर भारत का फिर से गठन किया गया, जबकि बंगाल के कुछ हिस्सों को पूर्वी पाकिस्तान का हिस्सा बनाने का फैसला किया गया जिसे अब बांग्लादेश के रूप में जाना जाता है।

\- मनोज कुमार यादव

डॉ. पांडुरंग सदाशिव खानखोजे : एक अनाम क्रांतितारा

('स्वातंत्र्याच्या अमृत महोत्सवा' निमीत्य स्मृति)

महाराष्ट्र की श्वास है मराठी। भारतवर्ष के एक ऐसे सांस्कृतिक प्रदेश की भाषा जो पूरे देश से आने वाले प्रवासिओं को समावेशित कर लेती है। महाराष्ट्राचा अभिमान आहे मराठी। यह अंक आज़ादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर अकीर्तित नायकों का भी स्मरण करता है। ऐसे ही एक गुमनाम क्रांतिकारी डॉ. पांडुरंग सदाशिव खानखोजे जी का परिचय भी संकलित किया गया है।

सुहास खानखोजे
निजी सचिव

(मूल मराठी संकलन)

भारतीय स्वातंत्र्य लढा हा जगातील एक फार मोठा स्वातंत्र्य समर म्हणून गणला गेला. त्यात झुंजलेल्या अगणित स्वातंत्र्य सैनिकांमध्ये अनेकांची इतिहासाने फारशी दखल घेतली नाही. त्यातच एक अद्वितीय पराक्रमी, गुणी आणि जागतिक पातळीवर आपल्या कर्तृत्वाचा कायम ठसा उमटविणारे विदर्भातले डॉ. पांडुरंग सदाशिव खानखोजे यांचे नाव अग्रगण्य आहे.

दिनाँक 07 नोव्हेंबर 1884 साली वर्धा येथे जन्मलेले डॉ. खानखोजे यांना 1857 च्या लढ्यातील त्यांचे आजोबा यांच्या कडून देशभक्तीचा वारसा जणू रक्तातूनच मिळाला होता. बाल पांडुरंगची चूणूक–दुसऱ्या वर्गात असतांना वैद्य गुरुजींनी शिवाजी महाराजांचा उल्लेख दरोडेखोर म्हणून करताच त्यांना पांडुरंगने विरोध केला आणि त्यांच्या समोर पुस्तक फाडून टाकले. 1902 साली मॅट्रीकच्या वर्गात असतांना पांडुरंगने किंग ॲडवर्ड च्या राज्यरोहणाच्या निमित्ताने नागपूरच्या सिटी हायस्कूल मध्ये (आताचे दादासाहेब धनवटे नॅशनल स्कूल, नागपूर) मिठाई वाटली गेली तेव्हा त्वेशाने ती मिठाई भिरकावून दिली. त्यामुळे त्याला शाळेत न येण्याची शिक्षा करण्यात आली होती. आजवर इतिहासात आपण लग्नाच्या बोहल्यावरून पळ काढणारे समर्थ रामदास स्वामी ऐकून होतो पण मुलाचे

हिन्दी अनुवाद

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अग्निकुंड में आहुति देने वाले अनगिनत रणबांकुरे इस इतिहास में गुमनामी में ही रहे हैं। उनमे ऐसे ही एक अद्वितीय पराक्रमी, गुणवान और विश्वपटल पर विख्यात विदर्भ के वीर डॉ. पांडुरंग सदाशिव का नाम इतिहास मे अग्रगण्य ही कहना होगा।

डॉ. पांडुरंग खानखोजे का जन्म दि. 07/11/1884 को वर्धा में हुआ। उनके दादा 1857 के गदर के सिपाही थे। जिनसे इन नाती को देशभक्ति विरासत में, खून में ही मिली। सन 1902 में वे नागपुर के सिटी हाईस्कूल (आज का दादा साहब धनवटे नैशनल स्कूल, नागपुर) के विद्यार्थी थे। उस समय स्कूल में किंग एडवर्ड के राज्याभिषेक की मिठाई बाँटी जा रही थी जिसे उन्होंने गुस्से में वह मिठाई फेंक दी थी। फलतः उन्हें स्कूल न आने की सजा हुई थी। तब पिता ने उन्हें शादी के बंधन में बांधने की कोशिश की। इसके विरोध में वे विवाह समारोह के पहले दिन ही घर से भाग कर आजादी की लड़ाई में शामिल हो गए। साल भर बाद लौटने पर स्कूल में वंदेमातरम् पर बंदी होने के बावजूद वंदेमातरम् का नारा लगाया, आखिर तंग आकर पिता ने उन्हें घर से ही निकाल दिया। तब अपने चाचा के आश्रय में रहकर उन्होंने स्कूल

अवसर अक्सर कड़ी मेहनत के भेश में छिपे होते हैं, इसलिए ज्यादातर लोग इन्हें पहचान नहीं पाते। – एन लैंडर्स

रागरंग ठीक दिसत नाहीत म्हणून वडिलांनी पांडुरंगला मॅट्रीकच्या वयातच लग्नाच्या बेडीत अडकवण्याचा प्रयत्न केला. पण याला त्यांचा विरोध असल्याने पांडुरंगने लग्नाच्या आदल्या रात्रीच घरातून पळ काढला आणि स्वातंत्र्याच्या यज्ञकुंडात उडी घेतली.

एक वर्षानंतर घरी परतल्यावर पुन्हा अभ्यास सुरू केला. परंतु शाळेत वंदेमातरम् वर बंदी असतांनाही वंदेमातरम्ची गर्जना केली. पुन्हा शेवटी कंटाळून वडिलांनी पांडुरंगला घरातून हाकलून दिले तेव्हा ते नागपूरला काकांकडे आले. तिथे ही शाळेतील एका समारंभात इंग्रजांविरूद्ध जहाल भाषण केले व यापुढे परतंत्र भारतात शिक्षण न घेण्याचे ठरवून बावीस वर्षाच्या वयात ऑगस्ट 1906 ला पांडुरंग खानखोजे लोकमान्य टिळकांच्या निर्देशानुसार जपानला गेले आणि देशाच्या स्वातंत्र्यासाठी परकीय मदत मिळवण्याचा प्रयत्न केला. एकीकडे स्वातंत्र्य लढयाची तळमळ आणि दुसरीकडे तांत्रिक अभियांत्रिकेचे उच्चशिक्षण तसेच लश्करी शिक्षण घेण्याची ओढ स्वास्थ बसू देत नव्हती.

अशा वेळी त्यांचे नागपूरचे मित्र स्व. प्रा. डॉ. हनुमंत नायडू (ख्यातनाम हिंदी साहित्यिक, विचारवंत आणि लोहियावादी कार्यकर्ते, नागपूर) यांच्या ओळखीने तसेच स्वामी रामतीर्थ यांनी दिलेल्या प्रमाणपत्रमुळे खानखोजे यांना अमेरिकेतील मित्र गिरीन मुखर्जी यांच्या मदतीने 'टमाल पेस' या इंग्रजी शाळेत प्रवेश मिळाला. तेथील पांडुरंगच्या यशाची वार्ता लोकमान्य टिळकांना मंडालेच्या तुरुंगात मिळाल्यावर त्यांनी आपल्या या शिष्याचे कौतुक केले. 1913 साली ते 'इंडियन इंडिपेंडन्स लीग' मध्ये सहभागी होवून स्वातंत्र्य वीरांची प्रकाशचित्रे प्रोजेक्टरवर अमेरिकन व्यक्तींना दाखवू लागले. पुढे लाला हरदयाल आणि मोहनसिंग मकाना यांच्या सोबत 'गदर पार्टीची' स्थापना केली. तेव्हा मराठी व बंगाली मध्ये 'गदर' नावाचे वृत्तपत्र काढून भारतात पाठवू लागले.

सशस्त्र क्रांती वेगवान करण्यासाठी स्फोटके तयार करण्याचे शिक्षण मिळवले. इंग्रजांनी त्यांना पकडण्यासाठी अमेरिकेवर दबाव टाकला तेव्हा ते तिथून फरार झाले आणि हे कार्य कॅनडा, मॅक्सिको व जर्मनीतून सुरू केले. या कामात 'मॅडम कामा' च्या सहकार्याने 1914 साली बर्लिन येथे मदतीसाठी राजा महेंद्र प्रतापसिंग यांची

के एक समारोह में अंग्रेजों के खिलाफ खुलेआम विद्रोही भाषण दिया। जिससे उन्हें स्कूल से निकाल दिया गया। बाइस वर्ष की उम्र में वे लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के आदेश पर अगस्त 1906 में जापान चले गए। वहाँ भारत की आजादी के लिए मदत जुटाते रहे। क्योंकि वहाँ अभियांत्रिकी को उच्च शिक्षा और सैनिकी शिक्षा ग्रहण करने की चाहत के साथ ही आजादी के आंदोलन की सक्रियता के लिए चैन न पडता था।

बाद में उसी दौरान नागपुर के उनके मित्र स्व. प्रा. डॉ. हनुमंत नायडू (विख्यात हिंदी साहित्यिक व लोहियावादी चिंतक व नागपुर विद्यापीठ में हिंदी विभागध्यक्ष से सेवानिवृत्त) की पहचान से तथा स्वामी रामतीर्थ से प्राप्त प्रमाणपत्र के आधारपर एक और मित्र श्री. गिरीष मुखर्जी उन्हें अमेरिका के 'टपाल पेस' नायक अंग्रेजी स्कूल में उन्हें

दाखिला दिलाया। लो. तिलक ने अपने इस शिष्य की यश ख्याति की सराहना की थी। सन 1913 में पांडुरंग ने 'इंडियन इंडिपेंडेंस लीग' नामक संस्था में शामिल होकर अमरीकी जनता को प्रोजेक्टर पर भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के चित्र दिखाकर जानकारी देने लगे। आगे चलकर उन्होंने लाला हरदयाल और मोहनसिंग मकाना के साथ मिलकर 'गदर' पार्टी की स्थापना की। उन दिनों वे अमेरिका से 'गदर' अखबार निकालकर (मराठी व बांग्ला भाषा में) भारत में भेजते थे।

वहीं उन्होंने सशस्त्र क्रांति के लिए बम बनाने की शिक्षा पायी। जब अंग्रेजोंने अमेरिका पर उन्हें गिरफ्तार करने का दबाव डाला तो वे वहाँ से भूमिगत हो गए और

*शेष पृष्ठ 32 पर

मराठी मराठी तेलुगु लिपि हिन्दी गुजराती भाषा മലയാളം বাংলা

आज़ादी का अमृत महोत्सव

ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ಕನ್ನಡ संस्कृतम् विकिपीडिया اُردُو असमीया नेपाली

आत्मविश्वास

तमिल एक शास्त्रीय भाषा है। इसे दुनिया की पुरानी भाषाओं में से एक माना जाता है। इस भाषा का साहित्य अत्यंत समृद्ध और वैविध्यपूर्ण है। प्रस्तुत लेख में रचनाकार ने मानव के आत्मविश्वास से उत्पन्न होने वाली प्रबल इच्छाशक्ति पर सोदाहरण चर्चा की है। सामाजिक जागृति ने तमिल साहित्य उल्लेखनीय स्थान है।

संगीता सुदर्शन
सहायक निदेशक

நம்பிக்கை (मूल तमिल)

'குடையால் மழையை நிறுத்த முடியாது, ஆனால் நம்மை மழையில் நிற்க வைக்கும்.'

'நம்பிக்கை வெற்றியைத் தராது ஆனால் வாழ்க்கையின் எந்தச் சவாலையும் எதிர்கொள்ளும் ஆற்றலை அளிக்கிறது.'

மேலே குறிப்பிட்டுள்ள வரிகள் மிகப் பெரிய உண்மையை உங்கள் முன் கொண்டு வருகின்றன. நிச்சயமாக, பிரச்சனைகளின் மழையை நம்மால் நிறுத்த முடியாது, ஆனால் தன்னம்பிக்கை மற்றும் சகிப்புத்தன்மையின் குடை இருந்தால், நாம் நிச்சயமாக அதை உறுதியாக எதிர்கொள்ள முடியும். தன்னம்பிக்கையை மனதில் வைத்து மட்டும் வெற்றி பெற முடியாது என்பதும் உண்மை, ஆனால் தன்னம்பிக்கையுடன் வெற்றிப் பாதையில் வரும் பிரச்சனைகளை எதிர்த்து போராட தேவையான சக்தி நமக்கு கிடைக்கிறது. நம்பிக்கை என்பது ஒரு அற்புதமான விஷயம். இது எல்லோரிடத்திலும் உள்ளது, ஆனால் அதை சரியாகப் பயன்படுத்துபவரின் வாழ்க்கை வெற்றி மற்றும் துடிப்புடன் நிறைந்துள்ளது. உங்கள் சொந்த முயற்சியால் தன்னம்பிக்கையை அதிகரிக்கலாம். வாழ்க்கையில் தன்னம்பிக்கை மிகவும் தேவைப்படும்போது இதுபோன்ற பல நிகழ்வுகள் உள்ளன. ஒரு அறிவாளி, அந்த நேரத்தில், தனது தன்னம்பிக்கையைப் பயன்படுத்தி, சிக்கலைச் சமாளித்தார், ஆனால் சிலர் தங்களைத்

आत्मविश्वास (हिंदी अनुवाद)

'छाता बारिश को नहीं रोक सकता, लेकिन ह बारिश में खड़ा होने का सम्बल तो देता है।'

'आत्मविश्वास भले ही सफलता न दिलाए लेकि जीवन की किसी भी चुनौती का सामना करने शक्ति देता है।'

ऊपर उद्धृत पंक्तियाँ बहुत बड़ी सच्चाई आ सामने रखती हैं। बेशक हम समस्याओं की बारिश को रोक सकते, लेकिन अगर हमारे पास आत्मविश्वास सहनशीलता की छतरी है तो हम उसका डटकर सा जरूर कर सकते हैं। यह भी सत्य है कि केवल मन आत्म–विश्वास रखने से ही हमें सफलता नहीं मिल सक बल्कि आत्म–विश्वास से हमें सफलता के मार्ग में आने व बाधाओं से लड़ने की आवश्यक शक्ति प्राप्त होती आत्मविश्वास एक अद्भुत चीज है। यह सभी में है, लेकि जो इसका सही उपयोग करता है, उसका जीवन सफल और जीवंतता से भर जाता है। स्वयं के प्रयास आत्मविश्वास बढ़ाया जा सकता है। जीवन में कई ऐसे म आते हैं जब आत्मविश्वास की बहुत जरूरत होती है। पारखी ठीक समय पर अपने आत्मविश्वास का प्रयोग समस्या पर विजय प्राप्त कर लेता है, पर कुछ अपने अकिंचन समझकर मूर्खतापूर्ण कदम उठा लेते हैं।

आत्मविश्वास के महत्व को समझना बहुत ज है। जीवन में सबसे बड़ी कठिनाइयों का साम आत्मविश्वास से करना पड़ता है। अगर हम इसे खो दे तो छोटी सी परेशानी भी हमें कमजोर बना सकती है।

बिना मेहनत के कुछ नहीं उगता सिवाय झंखाड़ के। - गॉर्डन बी. हिन्कले

தாழ்ந்தவர்களாகக் கருதி முட்டாள்தனமான நடவடிக்கைகளை எடுக்கிறார்கள்.

நம்பிக்கையின் மதிப்பைப் புரிந்துகொள்வது மிகவும் முக்கியம். வாழ்க்கையில் மிகப்பெரிய சிரமங்களை தன்னம்பிக்கையுடன் எதிர்கொள்கிறார்கள். நாம் அதை இழந்தால், சிறிய பிரச்சனை கூட நம்மை பலவீனமாக்கும். பல சமயங்களில் அதிகரித்து வரும் அலுவலகப் பணியை சுமையாகக் கருதி மனமுடைந்து புகார் கூறினாலும் பொறுமையாகச் சிந்தித்தால் தீரலாம். சிறிய பணிகளை விரைவாக சமாளிக்கும் வகையில் முழு வேலையையும் பிரிக்க வேண்டும், இதன் காரணமாக, சிறிய பணிகளை முடிப்பது மொத்த வேலையில் பெரும் சதவீதம் முடிந்ததைக் காட்டுகிறது. அதாவது, மொத்தமுள்ள 10 பணிகளில் 6 சிறிய பணிகளை முடிப்பது நல்ல சதவீதமாகும், இது உங்கள் வேலையை சிறப்பாகக் காட்டுவதுடன், உங்கள் மீது நம்பிக்கையையும் ஏற்படுத்துகிறது. இது தவிர, ஒருவரின் சொந்த வேலையில் இருந்து வரும் தன்னம்பிக்கை ஒருவருக்கு அதிக மதிப்பை அளிக்கிறது. தன்னம்பிக்கை இல்லாததால் வேலையில் சோம்பேறித்தனமும், கவனக்குறைவும் ஏற்படும். எந்த விதமான அதிகாரத்தையும் பிடிப்பதற்கு தன்னம்பிக்கை அவசியம்.

நம்பிக்கையை எவ்வாறு வளர்ப்பது என்பதும் அவசியம்? இதற்கு நமக்குள் இருக்கும் குணம் என்ன என்பதை நாம் சுயபரிசோதனை செய்து கொள்ள வேண்டும். அதன் அடிப்படையில் சிறப்பாக செயல்பட முயற்சிக்க வேண்டும். சிறந்த மெல்லிசை ராணி லதா மங்கேஷ்கர் ஜி பாடுவதற்குப் பதிலாக எழுத்து, நடனம் அல்லது நீச்சல் போன்ற துறையைத் தேர்ந்தெடுத்திருந்தால், அவர் ஒரு பாடகியாக அவர் பெற்ற நம்பிக்கையையும் புகழையும் மதிக்காமல் இருந்திருக்கலாம். சிறந்த கிரிக்கெட் வீரர் சச்சின் டெண்டுல்கரின் விளையாட்டு செயல்திறனின் சக்தியை உணர்ந்து அதில் நம்பிக்கையை வளர்த்துக் கொள்ளாமல் இருந்திருந்தால் அவருக்கும் இதே போன்ற ஒரு சம்பவம் நடந்திருக்கும்.

எனவே உங்கள் தன்னம்பிக்கையை உணர்ந்து வெற்றியின் பாதையை வெல்க. நம்மை உயரத்திற்கு அழைத்துச் செல்லும் நமக்குள் மறைந்திருக்கும் சக்தி, கலை அல்லது திறமை எது என்பதை நீங்கள் தீர்மானிக்கும் சிறந்த நாள் இன்று என்று நான் பரிந்துரைக்கிறேன் எனவே உங்களைப் பற்றி சிந்தித்து உங்கள் நம்பிக்கையை எழுப்புங்கள்.

बार ऑफिस के बढ़े हुए काम को बोझ समझकर हम परेशान हो जाते हैं और शिकायत करते हैं लेकिन अगर हम सब्र से सोचें तो इसका समाधान हो सकता है। हमें पूरे काम को इस तरह बाँट लेना चाहिए कि छोटे–छोटे काम जल्दी निपट जाएं, इस वजह से छोटे–छोटे कामों के पूरा होने से पता चलता है कि कुल काम का एक बड़ा प्रतिशत पूरा हो गया है। यानी कुल 10 कामों में से 6 छोटे कामों को पूरा करना एक अच्छा प्रतिशत है, जो आपके काम को बेहतर दिखाने के साथ–साथ आपके अंदर आत्मविश्वास भी जगाता है। इसके अलावा स्वयं के कार्य से मिलने वाला आत्मविश्वास भी स्वयं को अधिक प्रतिष्ठा दिलाता है। आत्मविश्वास की कमी से काम में आलस्य और एकाग्रता की कमी हो जाती है। किसी भी प्रकार की शक्ति को धारण करने के लिए आत्मविश्वास का होना आवश्यक है।

यह भी जरूरी है कि आत्मविश्वास कैसे जगाया जाए? इसके लिए हमें आत्ममंथन करना होगा कि हमारे अंदर ऐसा कौन सा गुण है जो हमें मजबूत बना सकता है। इसके आधार पर हमें बेहतर प्रदर्शन करने का प्रयास करना चाहिए। सुर साम्राज्ञी लता मंगेशकर जी ने यदि गायन के स्थान पर लेखन, नृत्य या तैराकी जैसे क्षेत्र को चुना होता तो शायद उन्होंने एक गायिका के रूप में अर्जित आत्मविश्वास और प्रसिद्धि को संजो कर न रखा होता। महान क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर के साथ भी शायद कुछ ऐसा ही होता अगर उन्होंने अपने खेल प्रदर्शन की ताकत को नहीं पहचाना होता और उसमें अपना आत्मविश्वास नहीं बनाया होता।

इसलिए अपने आत्मविश्वास को पहचानें और सफलता की राह पर विजय प्राप्त करें। मेरा सुझाव है कि आज सबसे अच्छा दिन है जब आप यह तय करें कि हमारे भीतर ऐसी कौन सी छिपी शक्ति, कला या कौशल है जो हमें ऊँचाइयों तक ले जा सकती है। इसलिए अपने बारे में सोचें और अपने आत्मविश्वास को जगाएं।

मेरा भारत महान

डॉ. कशिश तारवानी
चिकित्सा निदेशी

संविधान की अष्टम अनुसूची में वर्णित आधुनिक भारतीय भाषाओं में सिन्धी को भी स्थान प्राप्त है। सिन्धी की आत्मा तो परदेस में ही छूट गई पर शरणार्थियों और विस्थापितों की ज़बान पर चढ़कर वह हिन्दुस्तान आ गई। भारत सरकार ने सिंधी के विकास हेतु 'राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद' की स्थापना की है।

منهنجو هندستان عظيم آهي (मूल सिंधी)

اسان جي ڀارت ڀومي کي سنتن جي سرزمين طور سڃاتو وڃي ٿو.

پر مان چوان ٿو ته هيءَ ڌرتي بزرگن ۽ بزرگن جي آهي.

لڳي ٿو ته هن هندستان ۾ ڪيترائي عظيم انسان اسان جي عام ماڻهن لاءِ ئي پيدا ٿيا.

اڄ جي دور ۾ انهن ٿنهي عظيم انسانن جو پس منظر مختلف ٿي سگهي ٿو.

پر سندن حڪمت عملي ساڳي رهي آهي.

اهي ٽيئي شايد مختلف صدين ۾ پيدا ٿيا هجن يا مان اوتار چوندس، پر سڀني جو مرڪزي نقطو سماجي انصاف هو.

ڪڏهن ڪڏهن مان پريشان ٿي وڃان ته کين ڇا ٻڌايان.

سماج سڌارڪ، سچائي ڳوليندڙ، ترقي پسند مفڪر، سڀ استاد، ترقي پسند نظرياتي، لبرل، سماجي انصاف ڪندڙ يا سڀني جو گرو.

ها، اهو صحيح آهي، هو اسان سڀني جو استاد آهي. ڇو؟

مان ٻڌائيندس

جڏهن اسان ۽ توهان سادي زندگي گذاري رهيا آهيون ته پوءِ اسان جي چوڌاري جيڪي به نظريا هلي رهيا آهن، اسان سڀ پنهنجي زندگيءَ ۾ ساڳيءَ ريت هلندا رهياسين.

پر اوچتو هڪ ترقي پسند نظريو اسان جي سامهون اچي ٿو،

मेरा भारत महान (हिन्दी अनुवाद)

हमारी भारत भूमि को संतों की भूमि के रूप में ... जाता है। परंतु मै कहती हू यह संतों के साथ–साथ मह... की भी भूमि है।

इस भारतवर्ष में कई महापुरुषों ने हम सामान्य ... के लिए ही जन्म लिया ऐसा लगता है।

आज के संदर्भ में महापुरुषों की पृष्ठभूमि ... अलग–अलग रही हो। परंतु उनकी कार्यनीति एक सी ही ... है।

शिवाजी महाराज, महात्मा फुले और बाबा... आंबेडकर भले ही अलग–अलग शताब्दियों में जन्मे हो ... यू कहूंगी अवतरित हुए हो परंतु सब का केंद्र बिंदु सा... न्याय ही था।

कई बार तो कंफ्यूज हो जाती हूँ कि, मै उन्हें क्या कहूँ।

समाजसुधारक, सत्यशोधक, प्रगतिशील विचारक, ... शिक्षक, प्रगतीशील आदर्शवादी, उदारवादी, सा... न्यायवादी या सब के गुरु।

हां, यह ठीक है ये हम सब के गुरू है। क्यों? मै बताती हूँ।

हम और आप जब एक साधारण जीवन जी रहे ... तो आसपास में जो भी विचारधारा चल रही हो हम सब भी ... तरह अपने जीवन में चलते रहते हैं।

पर अचानक कोई प्रगतिशील विचारधारा हमारे ... आती है तो वह तार्किक रूप से जब हमारे मानस पटल पर ...

हम मनुष्यों का जीवन बिना कड़ी मेहनत के कुछ भी नहीं देता। - होरेस

پوءِ جڏهن اهو منطقي طور تي اسان جي نفسيات سان ٺهڪي اچي ٿو، تڏهن اسان ان نئين نظريي کي قبول ڪريون ٿا.

انهن عظيم انسانن جو نظريو جڏهن ٻچڙن جي شاديءَ جي مخالفت، ستي جي رواج جي مخالفت، بيواهه جي ٻيهر شاديءَ جي مخالفت، ڏاڍ جي مخالفت، سماجي انصاف جي حمايت، اڻ برابريءَ جي مخالفت، عورتن کي برابري جا حق، عورتن جي تعليم، جهڙا نظريا اسان جي سامهون رکيا ويندا ها ته بس! جيئن عام ماڻهو به ان نظريي کي سمجهن ٿا.

اهڙي سماج جي مفاد ۾ شيواجي مهاراج، ڦولي ۽ امبيڊڪر پاران سماج جي سڌاري لاءِ اهي شاندار خيال پيدا ٿيا ۽ نوان تصور پيدا ٿيا.

انهن ٽنهي عظيم انسانن جو آواز لامحدود آهي.

هو لامحدود آهي ڇاڪاڻ ته سچ لامحدود آهي.

هڪڙي تلوار سان وقت بدلايو، ٻئي سليٽ سان ۽ ٽيون قلم سان.

آخر ۾ مان اهو چوڻ چاهيان ٿو ته ڇترپتي شيواجي مهاراج پنهنجي بهادري سان تاريخ ٺاهي، مهاتما ڦولي عوام جو حال بهتر ڪيو ۽ ڊاڪٽر بابا صاحب امبيڊڪر عوام جو مستقبل ٺاهيو.

– डॉ. कशिश तारवानी

उतरती है तो हम उस नई विचारधारा को स्वीकार कर लेते हैं।

जब इन महापुरुषों की विचारधारा जैसे बालविवाह का विरोध, सती प्रथा का विरोध, विधवा पुनर्विवाह का आग्रह, अत्याचार का विरोध, सामाजिक न्याय का समर्थन, अस्पृश्यता का विरोध, महिलाओं को समान अधिकार, महिलाओं की शिक्षा, ऐसी विचारधारा हमारे समक्ष रखी जाती तो हम जैसे सामान्य लोग भी उस विचारधारा पर विचार करते है।

ऐसी ही समाज के हित में समाज में सुधार के लिए इन अप्रतिम विचारों का उद्‌गम शिवाजी महाराज, फुले और आंबेडकर ने किया और नवीन धारणाएं बनी।

इन तीनों महापुरुषों की वाणी अनंत है।

वे अनंत है क्योंकि सत्य अनंत है।

एक ने तलवार से समय बदला तो दूसरे ने स्लेट से तथा तीसरे ने कलम से।

अंत में, मैं यह कहना चाहूँगी कि छत्रपति शिवाजी महाराज ने अपने शौर्य से इतिहास बनाया तो महात्मा फुले ने लोगों का वर्तमान सुधारा और डॉक्टर बाबासाहेब आंबेडकर ने लोगों का भविष्य बनाया।

– लालचन्द ग्वालानी

दैनिक प्रयोग की शब्दावली

1. Amnesty - सर्वक्षमा
2. Antecedents - पूर्ववृत्त
3. Appellate Power - अपीली शक्तियाँ
4. Appellate Tribunal - अपील अधिकरण
5. Attachment / Attach - कुर्की करना / कुर्की
6. Attachment Order - कुर्की आदेश
7. On verification it was found - सत्यापन करने पर मालूम हुआ कि..
8. Prima Facie - प्रथम दृष्ट्या
9. Proprietor - स्वामी, मालिक
10. Recovery - वसूली
11. Recovery Should be Effected - रकम वसूल की जाए।
12. Recovery of Dues - देय की वसूली
13. Recovery of Loss - नुकसान की वसूली
14. Recovery Effected - की गई वसूल, प्रभावी वसूली
15. Rejoinder - प्रत्युत्तर
16. Search Warrant - तलाशी अधिपत्र / वारंट
17. Seizure - अभिग्रहण
18. Show cause Notice - कारण बताओ नोटिस
19. Statement of Case - मामले का विवरण
20. Subjudice - न्यायाधीन
21. Title Holder - स्वामित्वधारी
22. Valuation Report - मूल्यांकन रिपोर्ट
23. Waiver - अधित्याग
24. Warrant - वारंट, अधिपत्र

ईएसआईसी है चिंता से मुक्ति

रमा जकाती
पूर्व सहायक

दक्षिण भारत में एक सुसंस्कृत भाषा के रूप में कन्नड़ बोली जाती है। कर्नाटक के सीमावर्ती प्रांतों में कन्नड़ के अलग-अलग रूप भी देखने को मिलते हैं। इस में संस्कृत के भी शब्द बहुतायात है। हमारे ई.एस.आय.सी. की सेवानिवृत्त कार्मिक द्वारा कन्नड़ भाषा में व्यक्त किए गये उद्‌गार पठनीय हैं।

ESIC ಚಿಂತೆಯಿಂದ ಮುಕ್ತವಾಗಿದೆ (मूल कन्नड़)

ನಾನು ರಾಮ ಜಕಾತಿ. ನಾನು ESIC ನಲ್ಲಿ ಸಹಾಯಕನಾಗಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡಿದ್ದೇನೆ. ಸಂಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ ನನ್ನ ಅನುಭವ ಅದ್ಭುತವಾಗಿತ್ತು.

ಒಂದು ದಿನ ಉಪ ಪ್ರಾದೇಶಿಕ ಕಚೇರಿ ನಾಗ್ಪುರದಿಂದ ನನಗೆ ಕರೆ ಬಂತು. ಕಛೇರಿಯ ಪತ್ರಿಕೆ ಸಂಕಲನವಾಗುತ್ತಿದ್ದಂತೆ ಕನ್ನಡದ ಲೇಖನಕ್ಕಾಗಿ ನನ್ನನ್ನು ಸಂಪರ್ಕಿಸಲಾಯಿತು.

ನಂತರ ನಾನು ನಿಗಮದಲ್ಲಿ ನನ್ನ ದಿನಗಳನ್ನು ಹಂಚಿಕೊಳ್ಳಲು ನಿರ್ಧರಿಸಿದೆ.

ನನ್ನ ಸುಖ-ದುಃಖದಲ್ಲಿ ಸದಾ ಒಡನಾಡಿಯಾಗಿರುವ ಪಾಲಿಕೆಗೆ ಶತ ನಮನಗಳು.

ನಾನು ನನ್ನ ಸೇವೆಗಳಿಗೆ ಮಾತ್ರ ಪಾವತಿಸಲಿಲ್ಲ ಆದರೆ ತೃಪ್ತಿಯನ್ನು ಗಳಿಸಿದೆ ಏಕೆಂದರೆ ಕಾರ್ಮಿಕರಿಗೆ ಸಹಾಯ ಮಾಡುವುದು ದೊಡ್ಡ ಕೆಲಸವಾಗಿದೆ.

ಸಹೋದ್ಯೋಗಿಗಳು ತುಂಬಾ ಒಳ್ಳೆಯವರಾಗಿದ್ದರು.

ಸರ್ಕಾರದ ಈ ಸಾಮಾಜಿಕ ಭದ್ರತಾ ಯೋಜನೆಯು ಕಾರ್ಮಿಕರು ಮತ್ತು ಕಾರ್ಮಿಕರಿಗೆ ಸಹಾಯಕವಾಗಿದೆ.

ಪ್ರಾರಂಭದಿಂದಲೂ, ಈ ಯೋಜನೆಯು ದೇಶಾದ್ಯಂತ ಸಾವಿರಾರು ಜನರಿಗೆ ಪ್ರಯೋಜನವನ್ನು ನೀಡಿದೆ.

ಈ ನಿಗಮವು ತನ್ನ 60 ವರ್ಷಗಳ ಯಶಸ್ವಿ ಪಯಣವನ್ನು ಪೂರ್ಣಗೊಳಿಸಿದಾಗ ಒಂದು ಅದ್ದೂರಿ ಸಮಾರಂಭವು ನಡೆದಾಗ ನನ್ನ ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ನೆನಪು ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿದೆ.

ನಾವೂ ಸಹ ವಿವಿಧ ಚಟುವಟಿಕೆಗಳಲ್ಲಿ ಪಾಲ್ಗೊಂಡು ಸಂಭ್ರಮಾಚರಣೆಯಲ್ಲಿ ಪಾಲ್ಗೊಂಡೆವು.

ವಜ್ರಮಹೋತ್ಸವದ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ನಿಗಮವು ತನ್ನ ನಿಷ್ಠಾವಂತ ಸೇವೆಗಳಿಗಾಗಿ ತನ್ನ ಉದ್ಯೋಗಿಗಳಿಗೆ ಧನ್ಯವಾದಗಳನ್ನು ಅರ್ಪಿಸಿತು.

ಆಗ ಹಿರಿಯರು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಅನುಭವಿಗಳ ಜೊತೆಗೆ ಜ್ಞಾನದಿಂದ ಕೂಡಿದ್ದರು.

- रमा जकाती

ईएसआईसी: चिन्ता से मुक्ति (हिंदी अनुवाद)

मैं रमा जकाती हूँ। मैंने ईएसआईसी में सहायक के ... में कार्य करती थी। संगठन में मेरा अनुभव शानदार रहा।

एक दिन मुझे उप क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर से ... आया। कन्नड़ में एक लेख के लिए मुझसे कहा गया ... कार्यालय पत्रिका तैयार की जा रही थी।

फिर मैंने निगम में बिताये दिनों के अनुभव को ... करने का फैसला किया।

मैं निगम को शत-शत नमन करती हूं जो ... सुख-दुख में निरंतर मेरा साथी रहा है।

मुझे न केवल मेरी सेवाओं के लिए भुगतान मिला ... इस बात की संतुष्टि भी मिली कि कामगारों की सेवा ... अवसर मिला जो कि एक महान कार्य है। मेरे सहकर्मी भी ... अच्छे थे।

सरकार की यह सामाजिक सुरक्षा योजना काम... और मजदूरों के लिए बहुत मददगार है।

अपने स्थापना काल से ही, इस योजना ने पूरे दे... हजारों लोगों को लाभान्वित किया है।

मुझे आज भी अच्छी तरह याद है जब निगम ... गौरवशाली 60 वर्ष की सफल यात्रा पूरी हुई थी तब एक ... समारोह हुआ था।

तब हमने विभिन्न गतिविधियों में भी भाग लिया ... उत्सव का आनंद उठाया था।

निगम ने हीरक जयंती के अवसर पर अपने कर्मचा... को उनकी निष्ठावान सेवाओं के लिए सम्मानित भी किया था।

उस वक्त के वरिष्ठ कार्मिकगण बड़े अनुभवी और ज्ञा... से भी भरपूर थे।

- डॉ. जय प्रका...

जीवन

मराठी भाषा का सुर ही ऐसा है कि उसमें जीवन का हर पक्ष उजागर हो पाता है। भक्ति, सामाजिक जागरूकता, व्यवसाय एवं राजनीति के क्षेत्र में मराठी भाषा और मराठी भाषियों का विपुल योगदान है। हिन्दी की सच्ची सहोदरी तो मराठी ही है। कवि मंगेश पाडगांवकर इस कविता में मनुष्य के जीवन की उधापोह और कर्म के प्रति उसकी धारणा को व्यक्त किया गया है।

शिरीष मुठाळ
शाखा प्रबंधक (ग्रेड-1)

(मूल मराठी संकलन)

आयुष्य हे विधात्याच्या वहीतील पान असतं.
रिकामं तर रिकामं, लिहिलं तर छान असतं.

शेवटचं पान मृत्यू अन् पहिलं पान जन्म असतं.
मधली पाने आपणच भरायची,
कारण ते आपलंच कर्म असतं.

होणाऱ्या चुकांना टाळायचं असतं,
कुठलंच पान कधी गाळायच नसतं.
चूक झाली तरी फाडून फेकायचं नसतं,
कारण त्यातूनच आपल्याला पुढे शिकायचं असतं.

नाती जपण्यात मजा आहे,
बंध आयुष्याचे विणण्यात मजा आहे,
जुळलेले सुर गाण्यात मजा आहे,
येताना एकटे असलो तरी सर्वांचे होऊन जाण्यात मजा आहे.

नशीब कोणी दुसरं लिहित नसतं,
आपलं नशीब आपल्याच हाती असतं.
येतांना काही आणायचं नसतं जातांना काही न्यायचं नसतं.

मग हे आयुष्य तरी कोणासाठी जगायचं असतं याच प्रश्नाचे
उत्तर शोधण्यासाठी जन्माला यायचं असतं.

\- मंगेश पाडगांवकर

हिन्दी अनुवाद

जीवन विधाता की किताब का एक पन्ना होता है
कोरा तो कोरा ठहरा, लिखा हुआ ही अच्छा होता है।

आखरी पन्ना मृत्यु, पहला जन्म होता है
बीच के पन्ने हम ही भरते है,
क्यूँकि वह हमारे कर्म होता है।

होने वाली गलतियों को टालना पड़ता है,
कोई भी पन्ना कभी खाली नहीं छोड़ना पड़ता है,
गलती होने पर भी फाड़ कर फेंक नहीं सकते
क्यूँकि उसी से हमें सीखना पड़ता है।

रिश्ते निभाने में ही मजा है,
जन्मों के बंधन बुनने में ही मजा है,
सुर जो मिले है वो पिरोने में ही मजा है,
आए भले अकेले हो, सबका हो कर जाने में ही मजा है।

किस्मत कोई दूसरा नहीं लिखा करता है,
अपनी किस्मत अपने हाथों में होती है,
खाली हाथ ही आते है, और खाली हाथ ही जाना होता है,

फिर ये जीवन भी किसके लिए जीना होता है
इसी का उत्तर, ढूँढने जन्म लेना पड़ता है।

\- शिरीष मुठाळ

जीवन सत्य

र. अनुराधा*

दक्षिण भारतीय भाषाओं में तेलुगू का महत्वपूर्ण स्थान है। तेलुगू भाषा का साहित्य व्यापक है। यदि लिपि की बाधा को कोई पार कर ले तो वह चिंतन और चेतना के स्वर्ग में पहुँच जाएगा। प्रस्तुत कविता तेलुगू भाषा में रचित एक सहज और सरल अभिव्यक्ति है। पाठक निश्चित ही तेलुगू साहित्य की ओर आकर्षित होंगे।

జీవితసత్యం (तेलुगू संकलन)

నీకులభించినఇల్లుచిన్నదైనా
Nikulabhinchinaillu Chhinadena
నీడలేనివారికిఅద్భుతస్వప్నం
Nida lenivaari ki
నీవద్దఉన్నచిరుసంపాదన
Adbhutswapnam
చిల్లిగవ్వలేనివారికిమధురస్వప్నం
Ni vaddhunnaciru Sampadhan
ఆరోగ్యవంతమైననీజీవితం
Cilligawwalenivariki Madhurswapnam
ఎందరికోఒకదివ్యస్వప్నం
Arogyamvanthamainani Jivitham
నీముఖంపైనచిరునవ్వు
Yendariko auk divya Swapnam
ఎందరికోసుఖస్వప్నం
Ni mukhampainacirunavvu yendarikosukhswapnam
నీకుదొరికినదానికితృప్తిగాఉండుఅప్పుడే
nikudorikinadanikitruptigaunduappade
సంతోషంనీచిరునామాగామారుతుంది
santoshamnicirunamaaga marutundi
ఇదేజీవితసత్యము
ide jivithasatyam

– र. अनुराधा

जीवन सत्य (हिन्दी अनुवाद)

तुम्हें मिला हुआ घर
भले ही छोटा हो।

पर बिन छायावालों के लिए
तो यह एक अद्भुत सपना है।

तुम्हारे वजह से हुई छोटी सी कमाई
किसी चिल्लरभर को मोहताज के लिए मधुर सपना है।

यह स्वास्थ्य से भरा तुम्हारा जीवन
कई लोगों के लिए एक दिव्य सपना है।

तुम्हारे चेहरे पर खेलती हल्की सी मुस्कान
कइयों के लिए सपने में मिलने वाला सुख है।

इसलिए तुम्हें जो मिला है
उसी में संतुष्ट रहो

तभी खुशी बन जाती तुम्हारा पता
यही है जीवनसत्य।

– भावना …

*रचनाकार श्रीमती भावना पाटील, सहायक निदेशक की भाभी हैं।

इलाहाबाद आवत हई...।

डॉ. जय प्रकाश
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

हिन्दी भाषा का सबसे बड़ा खलिहान तो अवधी ही है । इलाहाबाद (वर्तमान में प्रयागराज) की मिट्टी की महक इस कविता में आपको जरूर मिलेगी । कोरोनाकाल में लॉकडाउन की त्रासदी प्रवासी मजदूरों को झेलनी पड़ी थी । इन पंक्तियों में एक मजदूर के मीलों पैदल सफर के कारण उखड़ती सांसों की अकुलाहट आपको जरूर महसूस होगी ।

इलाहाबाद आवत हई...।(मूल अवधी)

ये राजू ! सुनत हा ? पिठाव अब जरत बा,
चलत हई धीरे–धीरे, पर गोड़ नाहीं उठत बा।

घरहिं के बोझा, सामाने से जादा,
करइहें का राम, उधारी सब खाता।
जोहत तोर भौजी, बा परची बिटीवा,
छोटकी के गौना, अब इहीं बरिस बा।

ससुरी बेनारी से, भारी विपत बा,
बाबू हैं आंधर, बस माई लखत बा।
हन्नई हईं लाठी, दुइनप के आस,
लउकडाउन कइसन, ई दिहिस बनबास।

सूखत बा नरेटी, न भाखा भखाई,
छोड़ दिया बंबई, हम कैसे बताई ?
जिनगी के जोती, अब लागत बुझति बा !
घरवा–मोहरवा, सब आगेन फिरत बा।

संघतिया हमार ! तोहसे एतना चिरौरी,
गठरी हमार दीहा, दुआरिन पे छोड़ी ?
जब पूछी दुलहिया, बाबू अउर माई,
बताया परखिहिं, बिटीवा खेलाई।

गिनाया रूपिवा, समझावत बताई
आवत इलाहाबाद, हमऊ हई, भाई।

ओणम

मलयालम तो मलमल सी है। इसके भाषा और साहित्य में स्थानीयता का पूरा प्रभाव है। संस्कृत की छाप भी इस भाषा पर देखी जा सकती है। रचनाकार ने लोकप्रिय पर्व ओनम की चर्चा करते हुए मलयालम भाषा में अपनी अभिव्यक्ति रखी है। आलेख के माध्यम से उत्सव, आयोजन, व्यंजन इत्यादि की जानकारी मिलती है।

मेरी अब्राहम
पूर्व सहायक

ഓണം (मूल मलयालम)

കേരളീയരുടെദേശീയഉത്സവമാണ്ഓണം. ഇത്ഗ്രിഗോറിയൻകലണ്ടറിൽഓഗസ്റ്റ് സെപ്തംബർമാസങ്ങളിലും,

മലയാളംകലണ്ടറിലെആദ്യമാസമായചിങ്ങമാസത്തിലുംവരുന്നതു.
ജാതിമതഭേദമന്യേസംസ്ഥാനത്തുടനീളമുള്ളമലയാളികൾവലിയഉത്സാഹത്തോടുകൂടെഓണംആഘോഷിക്കുന്നു.

ഐതിഹ്യമനുസരിച്ച്പണ്ട്കേരളംഭരിച്ചിരുന്നഅസുരചക്രവർത്തിആയിരുന്നമഹാബലിഓണക്കാലത്ത്നാട്ടുകാണുവാൻവരുംഎന്നു

പറയപ്പെടുന്നു.
ഇത്കേരളത്തിന്റെവിളവെടുപ്പ്കാലത്തെയുംസൂചിപ്പിക്കുന്നു.

പത്തുദിവസംനീണ്ടുനിൽക്കുന്നഈഉത്സവംവളരെപ്രൗഢിയോടെആഘോഷിക്കപ്പെടുന്നു.

ഓണക്കാലത്ത്ഇവിടുത്തെജനങ്ങൾവള്ളംകളി, പൂക്കളംതുടങ്ങിയവിവിധതരംകളികളിൽഏർപ്പെടുന്നു. തിരുവാതിരകളി, കഥകളി,

പുലികളിതുടങ്ങിയവിവിധതരംനൃത്തകലകളും നടത്തപ്പെടുന്നു.
വിഭവസമൃദ്ധമായസദ്യഒരുക്കിഎല്ലാവരുംഒരുമിച്ചുഭക്ഷിക്കുന്നു. അതിൽപലതരംപച്ചക്കറികളും, പായസവുംഉൾപ്പെടുന്നു.

വാഴയിലയിലാണുസദ്യവിളമ്പുന്നത്.

1961

ൽഓണംകേരളീയരുടെദേശീയഉത്സവമായിപ്രഖ്യാപിക്കാൻഇതിന്റെജനപ്രീതിയുംകലാസമൃദ്ധിയുംകാരണമായി.

– मेरी अब्राहम

ओणम (हिंदी अनुवाद)

ओणम केरल राज्य का आधिकारिक त्यौहा... यह ग्रेगोरियन कैलेंडर में अगस्त–सितंबर के मही... दौरान और मलयालम कैलेंडर (कोल्लावर्षम) के चि... के पहले महीने में मनाया जाता है। यह जाति या ... भेदभाव के बिना पूरे राज्य में बड़े उत्साह के साथ ... जाता है।

एक लोकप्रिय किंवदंती के अनुसार, यह ... जाता है कि अतीत में केरल पर शासन करने वाला ... असुर सम्राट ओणम के मौसम में अपने राज्य का ... करता है। यह केरल के फसल के मौसम को भी ... करता है। यह त्योहार दस दिनों तक चलता है और ... धूमधाम से मनाया जाता है।

ओणम के उत्सव में नौका दौड़, फूलों की ... (पूक्कलम) आदि जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम शामिल हो... विभिन्न प्रकार के पारंपरिक नृत्य जैसे थिरुव... कथकली, बाघ नृत्य भी आयोजित किए जाते ... 'ओनसद्या' ओणम समारोह का एक अभिन्न अंग है। ... में तरह–तरह की सब्जियाँ और खीर (पायसम) प्रमु... जिसे केले के पत्ते पर परोसा जाता है और परिवार के ... सदस्य मिलकर इसका आनंद लेते हैं।

त्योहार के दौरान राज्य की समृद्ध संस्कृति ... लोकप्रियता और प्रस्तुति ने ओणम को 1961 में केरल ... आधिकारिक राज्य पर्व बना दिया।

– मेरी अब्रा...

सांजवेळ

जिंदगी में रोज सुबह शाम होती है । नित घटने वाली यह घटना हमें जीवन जीने का अनोखा संदेश देती है । प्रकृति प्रदत्त इस जीवन में प्रकृति से ही सीखने के लिए बहुत कुछ है । मराठी भाषा के सुरों में पिरोयी इस कविता में जीवन की आस है । कविता का संगीत मन को छू लेने वाला है । मराठी का लोकसंस्कार ही लाजवाब है ।

निखिल सरोदे
शाखा प्रबंधक

(मूल मराठी)

सांजरंगी बुडालेल्या आसमंतात
किरणांची हलकीच माघार,
दरीतील एकट्या वाटेवर
तमाचा नित्याचा प्रहार.

परतीच्या मंद उबेचा
सागराला मायेचा स्पर्श
हंबरती केविलवाणी गायीवासरे
रातकिड्यांचा वेगळाच हर्ष.

कुठला हा चित्रकार?
भरणारा लाल–पिवळा रंग
क्षितिजावरील निरव शांतता
करीत चालली अस्तित्वाचा भंग.

मिणमिणत्या सांजप्रकाशी
मार्ग नवे शोधतात वाटा,
किनारा खुणावतो परी
संथ या परतीच्या लाटा.

शांत झाली पाखरे
आणि अंतरीच्या जाणीवा
निजल्या चांदणीच्या कळया अन्
जाग्या प्रकाशाच्या उणीवा.

- निखिल सरोदे

सांजवेळ (हिंदी अनुवाद)

साँझ रंगों से भरा ये समाँ,
रविरश्मियों की धुँधली आभा,
ढलान की अकेली पगडंडी,
अंधेरा समय पर छाया !

रश्मिरथी के अपनत्व की गरमाहट,
सागर को सुकून स्पर्श,
गाय–बछड़ों का व्याकुल रंभाना,
झींगुरों का हर्ष से पुलकित होना !

यह कौन चित्रकार है ?
भरा हो लाल–पीला रंग,
क्षितिज पर छायी असीम शांति,
तीरपता का अस्तित्व हो चला भंग !

संध्याछाया की लुकाछिपी में,
नई राह की खोज में,
किनारों का स्नेहिल निमंत्रण
धीमी गति की लहरों से !

थके–हारे पंछी,
और अंतर्मन की तरल संवेदनाएँ,
सितारों की मद्धिम रोशनी,
जगमग उजाले की, आस जगाए !

- सुरेखा देवघरे

लॉकडाउन ने बिगाड़ा मानसिक स्वास्थ्य

अमोलिना बनर्जी
प्रवर श्रेणी लिपिक

भारत की एक मधुर भाषा है बांग्ला । बांग्ला का साहित्य प्रगतिशील, क्रांतिकारी और चेतना का संवाहक है । देश का राष्ट्रगान और राष्ट्रगीत बांग्ला के मूल से ही निकले है । राष्ट्रीयता के स्वर को बांग्ला ने ही कंठ दिया है । प्रस्तुत आलेख में समसामयिक विषय पर चिंतन प्रस्तुत करते हुए लॉकडाउन के प्रभाव पर चर्चा कि गई है ।

লকডাউন মানসিক স্বাস্থ্য নষ্ট করেছে (मूल बांग्ला)

এটা অতীতের কথা নয়, সারা বিশ্বে করোনা মহামারির কারণে লাখ লাখ মানুষ প্রাণ হারিয়েছে। অনেক বাড়িতে তালা লাগানো হয়েছে।

লকডাউনের কারণে, লোকেদের কর্মসংস্থানও বন্ধ করতে হয়েছিল, যার কারণে লক্ষ লক্ষ লোক তাদের চাকরি হারিয়েছিল।

বৈশ্বিক অর্থনীতি দারিদ্র ও দুর্ভিক্ষের পরিস্থিতির মুখোমুখি হয়েছিল। কিছু লোক তাদের চাকরি হারিয়েছে, কেউ কেউ তাদের প্রিয়জনকেও হারিয়েছে এবং যারা এই মহামারীর সাথে লড়াই করে বেঁচে ছিলেন তাদের সামনে জীবন একটি প্রশ্নচিহ্ন হয়ে দাঁড়িয়েছে। এই মহামারীর প্রভাবে মানুষ সবচেয়ে বেশি মানসিক বিষণ্ণতার বসবাস করত।

শিশু থেকে বৃদ্ধ সবাই এতে আক্রান্ত হয়। স্কুল-কলেজ, খেলাধুলা-পর্যটন সবই বন্ধ ছিল। অনলাইন শিক্ষা শিশুদের স্কুল জীবনের আনন্দ নষ্ট করেছে। প্রতিমুহূর্তে ভয়ের সম্মুখীন হতে হচ্ছিল। সমাজে বেড়েছে মানসিক অস্থিরতা ও রোগব্যাধি।

সারা বিশ্বে মানুষ ভয় পেয়ে গেল। সামাজিক সমাবেশ বন্ধ ছিল। এতেও মানসিক অস্থিরতা বাড়তে থাকে এবং মানুষের মানসিক স্বাস্থ্য ক্রমশ ভারসাম্যহীন হয়ে পড়ে। নানা শারীরিক সমস্যাও জন্ম নেয় হতাশা থেকে।

জেমস টেলর বলেন, "মানসিক স্বাস্থ্যের চাবিকাঠি হল জীবনকে উপভোগ করা। একজন মানসিকভাবে সুস্থ মানুষ সমাজ ও প্রিয়জনদের সাথে ভাগাভাগি করে জীবন কাটাতে চায়। ঘুম-জাগরণ, বিশ্রাম-স্বাস্থ্য ইত্যাদিতে ভারসাম্য প্রয়োজন, যার কারণে মানসিক স্বাস্থ্যেরও উন্নতি হয়।

বিশেষজ্ঞরা সবসময় মানসিক স্বাস্থ্যের ধারণাগুলি পরিষ্কার করার চেষ্টা করেছেন। প্রথমত, মানসিক সমস্যার সমাধান খুঁজতে হলে

लॉकडाउन ने बिगाड़ा मानसिक स्वास्थ्य (हिन्दी अनु

यह कोई पुरानी बात नहीं है, पूरे विश्व में कोरोना की वजह से लाखों लोग चल बसे है। कई घरों में तालाबंदी लॉकडाउन की वजह से लोगों को रोजगार भी बंद करना इससे लाखों लोगों की नौकरी भी चली गई।

वैश्विक अर्थनीति को गरीबी व अकाल की सामना करना पड़ा। कुछ लोगों की नौकरी गई तो कुछ प्रियजनों को भी खो दिया और जो लोग इस महामारी से निकले उनके सामने भी जीवन एक प्रश्नचिन्ह बन महामारी का यह प्रभाव पड़ा की इंसान ने सर्वाधिक अवसाद में जीवन गुजारा।

बच्चों से लेकर बुजुर्ग तक सभी इससे प्रभावि स्कूल–कॉलेज, खेल, पर्यटन सभी बंद कर दिए गए। शिक्षा ने बच्चों के स्कूली जीवन के आनंद को ही मटिया दिया। हर पल का सामना करना पड़ रहा था। समाज में अस्थिरता व बीमारी बढ़ गई थी।

पूरी दुनिया में इंसान डरा हुआ था। सामाजिक बंद हो गए थे। इस वजह से भी मानसिक अस्थिरता बढ़ने और लोगों का मानसिक स्वास्थ्य तेजी से असंतुलित हो हताशा से विभिन्न शारीरिक समस्याएँ, भी जन्म लेने लगी थी।

जेम्स टेलर ने कहा है, **"जीवन को उपभोग देना मानसिक स्वास्थ्य की कुंजी है। मानसिक रूप से व्यक्ति की जीवन की अभिज्ञता, समाज व अपनों में बिताना चाहता है। सोना–जागना, आराम आरोग्य इत्य संतुलन जरुरी होता है, इसी से मानसिक स्वास्थ्य उन्नति होती है।"**

मानसिक स्वास्थ्य संबंधी धारणाओं की विशेषज्ञों ने ही स्पष्ट करने का प्रयास किया है। सर्वप्रथम मानसिक

এর কারণে সৃষ্ট সমস্যাগুলোর প্রতি খেয়াল রাখতে হবে। এগুলো শনাক্ত করার পর অন্যান্য রোগের চিকিৎসারমতোমানসিকচিকিৎসাওএসবসমস্যাথেকেমুক্তিপেতেপারে।

'সাইকোথেরাপি' বা 'সেলফ মেডিকেশন'-এর সাহায্যে এই রোগের চিকিৎসাকরাযায়।'মানসিক বিষণ্ণতা' এবং 'মানসিক উদ্বেগ'-এর মতো অনেক ধরনের মানসিক সমস্যা রয়েছে। সাধারণত দেখা যায় মানসিক রোগকে কেউ গুরুত্বের সাথে নেয় না, যখন তা খুব বেশি হয়ে যায় তখন মানুষ ডাক্তারের কাছে যায়। একজন মানুষ বিষণ্ণ হয়ে পড়লে প্রথমেই স্বীকার করতে চায় না। যেখানে এমন পরিস্থিতিতে বিশেষজ্ঞদের মতামত নেওয়া খুবই প্রয়োজন। অথচ মানুষ মানসিক রোগকে উপেক্ষা করে, চিকিৎসাপায়না।এবংভুলধারণাদের।

আমাদের দেশে সাধারণত কৈশোর থেকে বয়স্ক সবাই মানসিক রোগে ভোগেন। জীবনের প্রতিটি মোড়ে এবং আমাদের চারপাশে আমরা মানসিক অস্থিরতার সম্মুখীন হই। পড়াশোনা, খেলাধুলা, ভ্রমণ ইত্যাদি ক্ষেত্রে আমরা এগিয়ে যেতে ভয় পাই, এর কারণ মানসিক চাপ।

বাবা-মায়ের বকাঝকা, পরীক্ষায় ব্যর্থতা, প্রেমে ব্যর্থতা, চাকরি না পাওয়া, কর্মক্ষেত্রে রাজনীতির শিকার হওয়া বা যৌবন ও বিবাহ-বহির্ভূত জীবনের অশান্তি ইত্যাদির কারণে আত্মহত্যা আসতে শুরু করে বা এসব থেকে মুক্তি পেতে সে মদ্যপ হতে চায়। কিন্তু কতটা পরিহাসের বিষয় যে প্রচণ্ড মানসিক অস্থিরতায় ভুগছেন এমন ব্যক্তি কখনই মনোরোগ বিশেষজ্ঞের পরামর্শ নেন না।

করোনা মহামারীর কারণে লকডাউন জারি করতে হয়েছিল কিন্তু লকডাউন অনেক কিছুকে প্রভাবিত করেছে। চাকুরী, ব্যবসা, পারস্পরিক লেনদেন, লেনদেন, চলাফেরা এসবের উপর বিধিনিষেধের কারণে তার মধ্যে ক্রমশ অতৃপ্তি, প্রকাশহীনতা ও একাকীত্ব দেখা দেয়। এই সবের কারণে মানসিক ত্রুটি দেখা দিতে শুরু করে, তাই মহামারীর পরিপ্রেক্ষিতে, লকডাউনে আমরা কীভাবে নিজেকে মানসিক এবং শারীরিকভাবে সুস্থ রাখব তা খুবই গুরুত্বপূর্ণ।

এই প্রবন্ধের মাধ্যমে বলা যায় যে, কোনো অবস্থাতেই ভেঙে পড়বেন না, বরং কাছের মানুষ, আপনার বন্ধু ও বিশেষজ্ঞদের পরামর্শ নিয়ে আপনার মূল্যবান জীবনকে নিরাপদ রাখুন, সুস্থ থাকুন এবং বিজয়ী হন।

- अमोलिना बनर्जी

का हल ढूँढने के लिए उससे होनेवाली तकलीफों का भी ध्यान रखना होगा। इनकी पहचान करने के बाद दूसरी बीमारियों के इलाज की तरह ही मानसिक चिकित्सा कराने से इन समस्याओं से भी मुक्ति मिल सकती है।

'साइकोथेरेपी' या **'सेल्फ मेडीकेशन'** की सहायता से इस बीमारी की चिकित्सा की जा सकती है। मानसिक समस्याएँ कई तरह की होती है जैसे मानसिक अवसाद' व 'मानसिक चिंता' सामान्यतः यह देखा जाता है कि मानसिक रोगों को कोई गंभीरता से नहीं लेता, जब यह बहुत अधिक बढ़ जाता है तब लोग चिकित्सक के पास जाते है। यदि कोई व्यक्ति अवसादग्रस्त हो जाता है तो वह पहले तो इस बात को स्वीकार ही नहीं करना चाहता है। जबकि ऐसी स्थिति में विशेषज्ञों से राय लेना अति आवश्यक होता है। जबकि मानसिक रोगों को लोग नजर अंदाज कर देते हैं इलाज नहीं कराते तथा गलत मंतव्य देते है।

हमारे देश में साधारणतया किशोरावस्था से बुजुर्ग तक सभी मानसिक व्याधि से ग्रस्त रहते हैं। जीवन के प्रत्येक मोड़पर और अपने चारों ओर हम मानसिक अस्थिरता के सम्मुख होते हैं। पढ़ाई–लिखाई, खेलकूद, घूमना–फिरना इत्यादि क्षेत्रों में हम आगे जाने से डरते है, इसका कारण है–मानसिक तनाव।

माता–पिता के डाँटने पर, परीक्षा में असफल होने पर, प्रेम में नाकाम होने पर, नौकरी न मिलने पर कार्यस्थल पर राजनीति का शिकार होने पर युवावस्था व विवाहेतर जीवन में सिर्फ अशांति से कभी–कभी पिडित के मन में आत्महत्या का ख्याल आने लगता है या फिर वह इनसे मुक्ति पाने के लिए नशे में डूब जाना चाहता है। परन्तु कितनी विडम्बना है कि घोर मानसिक अशांति में पीड़ित व्यक्ति कभी किसी मानसिक रोग विशेषज्ञ का परामर्श नहीं लेते।

कोरोना महामारी के कारण लॉकडाऊन लगाना पड़ा था लेकिन लॉकडाऊन ने बहुत सी चीजें प्रभावित की रोजगार, व्यापार, आपसी व्यवहार, लेनदेन, आना–जाना इन सभी पर पाबंदी हो जाने से व्यक्ति चिड़चिड़ा हो गया और उसके अंदर धीरे–धीरे असंतोषभाव अभिव्यक्तिहिनता और एकाकीपन घर कर गया। इन्हीं सबके कारन मानसिक दोष उपजना प्रारंभ हो गया इसलिए महामारी को देखते हुए हम किस प्रकार से लॉकडाउन में अपने आपको मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ रखे यह बहुत ही जरुरी है।

इस आलेख के माध्यम से यही कहा जाता है कि आप किसी भी परिस्थिति में टूटे नहीं बल्कि आसपास के लोगों से, अपने मित्रों एवं विशेषज्ञों की सलाह लेकर अपने कीमती जीवन को सुरक्षित रखें, स्वस्थ रखें और विजयी बनें।

- रजनी कुमारी शर्मा

जबलपुर की मनोरंजक यात्रा

हिन्दुस्तान की शान और जान है उर्दू। दुनियाभर की ज़बानों में सबसे ज़्यादा शीरीं और नफ़ासत से भरपूर है। तहज़ीब इतनी कि शैतान भी अदब से बात करें। ये तो आशिक़ी और मौसिक़ी का ख़ज़ाना है। अभिनव प्रकाश की इब्तिदाई कलम के ज़रिए जबलपुर का दौरा आप को भी लुभाएगा।

अभिनव प्रकाश*
विद्यार्थी

جبل پور کا دلچسپ دورہ (मूल उर्दू)

یہ دسمبر ۲۰۲۰ کے مہینے کی بات ہے۔
جب ہمارے گھر والوں نے کہیں جانے کا فیصلہ کیا۔
ہم نے ایم پی میں جبل پور شہر جانے کا فیصلہ کیا
ہمیں جبل پور جانے کا ٹکٹ مل گیا
اور پھر ہم اگلے دن جبل پور روانہ ہو گئے
میں ٹرین میں بہت سی باتیں سوچ رہا تھا، وہاں کیا دیکھا جائے گا؟
ہم نے رات ٹرین میں گزاری۔
اگلی صبح ہم جبل پور پہنچ گئے۔
ہم ٹرین سے باہر آیا اور دیکھا کہ چاروں طرف ہلکی ہلکی دھند چھائی ہوئی ہے۔
اسٹیشن سے باہر آکر ہم نے ایک کمرہ لیا اور اپنا سامان رکھا۔
ہم نے نرمدا ندی پر گواریگھاٹ جانے کا منصوبہ بنایا۔
ہم گواری گھاٹ جانے کی تیاری کر رہے تھے کہ ایک شریف آدمی سے ملاقات ہوئی۔ اس نے اپنا تعارف کرایا اور ہم سے پوچھ گچھ کی۔
ہم نے جواب دیا کہ ہم گواریگھاٹ جا رہے ہیں۔
اس نے پیار سے ہمیں اپنی گاڑی میں بٹھایا اور گواریگھاٹ پر چھوڑ دیا
ہم نے ان کا شکریہ ادا کیا
جتنی چیزیں میں نے جبل پور میں دیکھی تھیں، ان کو مختصراً یہاں بیان کرتا ہوں۔

گوارگھاٹ-1
گواریگھاٹ کا منظر بڑا دلکش تھا۔
وہاں نرمدا دھیمی رفتار سے بہہ رہی تھی
نرمدا کے کنارے بہت سے مذہبی مقامات تھے۔
لوگ بھجن گا رہے تھے اور پوجا کر رہے تھے۔
لوگوں کو کشتی رانی کرتے دیکھ کر میں نے
اپنے والد سے بھی کہا کہ ہم بھی کشتی رانی کریں گے۔
والد صاحب نے کشتی والے سے بات کی اور پھر
ہم بھی کشتی رانی سے لطف اندوز ہونے لگے۔
کشتی رانی کے دوران ہم نے نرمدا کے پانیوں
پر اڑتے غیر ملکی پرندوں کو دانہ دیا۔

जबलपुर का दिलचस्प दौरा (हिन्दी अनु

यह बात माह दिसंबर, 2020 की है जब हमारे
कहीं घूमने जाने का फैसला किया. हमने एम.पी. में जब
जाना तय किया. हमें विश्वास था कि यहाँ सुन्दर दृश्य
मिलेंगे। हमने जबलपुर जाने के लिए टिकट करवाया
हम अगले दिन जबलपुर के लिए निकल पड़े मैं ट्रेन में
सोच रहा था कि यहां पर क्या क्या देखने को मिलेगा? ह
ट्रेन में ही बीती..

अगले दिन सुबह हम जबलपुर पहुंच गए. ह
बाहर निकले तो देखा कि चारों तरफ हल्की धुंध थी.
बाहर आकर हमने एक कमरा लिया और अपना सा
हमने नर्मदा नदी के ग्वारीघाट पर जाने की योजना
ग्वारीघाट जाने की तैयारी में थे तभी एक सज्जन मि
अपना परिचय दिया और हमसे की हमने उत्तर दि
ग्वारीघाट जा रहे है, उन्होंने बड़े प्रेम से हमें अपनी
बिठाकर ग्वारीघाट पर छोड दिया। हमने उनको धन्यवा
मैंने जबलपूर में जो भी चीजे देखी उनके बारे में यहाँ
बताता हूँ।

1. ग्वारीघाट

ग्वारीघाट का दृश्य अत्यंत मनोरम था। वहा न
गति से बह रही थी। नर्मदा के तट पर ढेर सारे धर्म
कहीं लोग कीर्तन भजन तो कहीं पर पूजा पाठ कर रहे
को नौका विहार करते देख मैंने भी पिताजी से कहा
नौका विहार करेंगे। पिताजी ने नाविक से बात की और
भी नौका विहार का आनंद लेने लगे। नौका विहार क
हमने नर्मदा के पानी के ऊपर उड़ते हुए बिदेशी पक्षिय
दिया। दाना फेंकते ही पक्षियों का झुंड हम पर मंडराने
नौका विहार के बाद हमने नर्मदा के जल में स्नान कि
नर्मदा जी की पूजा की और फूलों का हार चढ़ाया। नर्म
करके हृदय को बड़ी शांति और आनंद की प्राप्ति हुई।

* अभिनव प्रकाश, कक्षा 7 केंद्रीय विद्यालय वायुसेना नगर, नागपुर सुपुत्र डॉ. जय प्रकाश, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

دانہ ڈالتے ہی پرندوں کا ایک جھنڈ ہمارے اوپر منڈلانے لگا۔
کشتی رانی کے بعد ہم نے نرمدا کے پانی میں نہایا۔
ہم نے نرمدا جی کی پوجا کی اور پھولوں کے ہار چڑھائے۔

بھیڑاگھاٹ ۲۔

جبل پور کا ایک اور اہم مقام بھیڑاگھاٹ آبشار ہے۔
ہم مقامی گاڑی میں بھیڑاگھاٹ پہنچے۔
ہم نے دیکھا کہ آبشار تک پہنچنے سے پہلے گھاٹ کے اوپر ایک بڑا دروازہ بنا ہوا ہے۔
گیٹ کے آس پاس کھلونوں، کپڑوں اور بتوں کی دکانیں تھیں۔
بھیڑاگھاٹ آبشار میں نرمدا ندی کا پانی بہتا ہے۔
آبشار کے دوسری طرف جانے کے لیے ٹرالی لگائی گئی ہے۔
یہ ٹرالیاں تار پر لٹکتی ہیں اور ہوائی سفر کرتی ہیں۔
ہم نے بھیڑاگھاٹ کے دھواں دار آبشاروں کو دیکھا۔
تیز کرنٹ کی وجہ سے پانی صابن کا جھاگ لگ رہا تھا۔
تماشائیوں کے چہروں پر پانی کے چھینٹے بھی تھے۔
چشمے کا پانی بالکل دودھیا تھا۔
آبشار کے چاروں طرف سنگ مرمر کی چٹانیں تھیں۔
وہاں پتھر تراشنے والے پتھروں پر نام لکھ کر بیچ رہے تھے۔
ہم نے ایک ہوٹل میں رات کا کھانا کھایا۔
ہم نے دکان سے کھلونے اور سجاوٹ خریدی۔
بھیڑاگھاٹ ایک شاندار جگہ ہے

۳۔ چونسٹھ یوگنی مندر

یہ بھیڑاگھاٹ کے قریب ایک شاندار جگہ ہے۔
ہم مسافر گاڑی پر بیٹھ کر مندر پہنچے۔
یہ مندر ایک پہاڑ پر تھا۔
مین گیٹ سے سیڑھیاں چوٹی تک جاتی تھیں۔
ہم ۱۰۰ سے زیادہ سیڑھیاں چڑھ کر چوٹی پر پہنچے۔
مندر ایک گول شکل میں بنایا گیا تھا۔
جس میں چاروں طرف چونسٹھ یوگنیوں کی مورتیاں بنائی گئی تھیں۔
گول دیواروں کے درمیان ایک بہت بڑا شیو مندر تھا۔
مندر کے اندر نندی سوار شیو پاروتی کی بہت خوبصورت مورتی تھی۔
ہم نے مندر میں پھول چڑھائے۔
مندر کے دروازے کے باہر ایک بڑا شیولنگ تھا۔
چونسٹھ یوگنی کے بت ایک سے بڑھ کر ایک تھے۔
میرے والد نے مجھے ہندوستانی مجسمہ سازی کے بارے میں بھی بتایا
ہم سب نے اس جگہ کی تعریف کی۔
اس سفر نے مجھے یہ احساس دلایا کہ پڑھ کر سب کچھ نہیں سمجھا جا سکتا۔
اسے سمجھنے کے لیے اس چیز کو باریک بینی سے دیکھنا بھی ضروری ہے۔
میں نے واقعی اس سفر کا لطف اٹھایا۔
میں نے بھیڑگھاٹ کے بارے میں کتابوں اور دوستوں سے سنا تھا۔
لیکن والدین کی وجہ سے مجھے بھیڑاگھاٹ کا خوبصورت نظارہ دیکھنے کو ملا۔
آپ کو یہ سفر بھی پسند آئے گا۔
جب میں کسی اور سفر پر جاؤں گا تو اس کے بارے میں آپ کو ضرور بتاؤں گا۔
میرے ساتھ رہنے کا شکریہ۔

- अभिनव प्रकाश

2. भेडाघाट

जबलपुर की दूसरी महत्वपूर्ण जगह भेडाघाट जलप्रपात है, स्थानीय वाहन में बैठकर हम भेडाघाट पहुंचे। हमने देखा कि झरने तक पहुँचने से पहले घाट के ऊपर एक बड़ा द्वार बनाया गया है। द्वार के आसपास खिलौने, कपडे और मूर्तियों की दुकानें थी। भेडाघाट झरने में नर्मदा नदी का पानी ही बहकर जाता है। जलप्रपात के दूसरी तरफ जाने की ट्रॉली लगाई गई है। यह ट्रॉलिया तार पर लटककर चलते हुए हवाई सैर कराती है। हमने भेडाघाट के धुआंधार झरने को देखा। तेज बहाव के कारण पानी साबुन के झाग की तरह दिखाई दे रहा था। दर्शकों के चेहरे पर पानी की फुहार भी आ रही थी। झरने का पानी बिल्कुल दूधिया था। झरने के चारों तरफ संगमरवर की चट्टाने थी। यहाँ पत्थर तराशी करनेवाले पत्थरों पर नाम लिखकर बेच रहे थे। हमने एक होटल में खाना खाया। हमने दुकान से खिलौने और सजावटी सामान खरीदे। भेडाघाट एक आश्चर्यजनक जगह है।

3. चौसठ योगिनी मंदिर

भेडाघाट के पास ही यह एक शानदार जगह है। एक सवारी गाडीपर बैठकर हम मंदिर तक पहुँचे। यह मंदिर एक पर्वत पर था। मुख्य द्वार से होकर सिडियां ऊपर शिखर तक जाती थी। लगभग १०० से अधिक सीढ़िया चढ़कर हम शिखर तक पहुंचे। मंदिर गोलाई में बना हुआ था जिसमें चारों और चौसठ योगिनियों की मूर्तियां बनी थी। गोल परकोटे के बीच एक विशाल शिव मंदिर था। मंदिर के भीतर नंदी सवार पर शिव–पार्वती की बहुत सुंदर प्रतिमा थी। हमने मंदिर में फूल चढ़ाया। मंदिर के प्रवेशद्वार के बाहर एक बड़ा शिवलिंग था। चौसठ योगिनीओं की मूर्तियां एक से बढ़कर एक थी। मेरे पिता ने भारतीय मूर्तिकला के बारे में भी मुझे बताया। हम सभी ने इस जगह की प्रशंसा की।

इस यात्रा से मुझे यह समझ आया कि हर चीज को पढ़कर नहीं समझा जा सकता है। समझने के लिए उस चीज को नजदीक से देखना भी जरूरी है। इस यात्रा ने मुझे बहुत मजा आया। भेडाघाट के बारे में मैंने किताबों और दोस्तों से सुन रखा था। लेकिन माता–पिता की वजह से मुझे भेडाघाट का सुंदर दृश्य देखने को मिला। यह यात्रा आपको भी अच्छी लगी होगी। जब मैं किसी और यात्रा पर जाऊंगा तो आपको उसके बारे में जरूर बताऊंगा। मेरे साथ बने रहने के लिए धन्यवाद।

- डॉ. जय प्रकाश

- शेषांश पृष्ठ 16 से

भेट घेतली. खानखोजे पहिल्या महायुद्धात सहभागी होते. त्यात इराण, अफगाणीस्तान सिमेवर जखमी होवून पकडले गेले. तेव्हा जनरल डायर ब्रिटीश सेनापती होता, त्याच्या तावडीतून डॉ. खानखोजे गनीमी काव्याने निसटले आणि एका सरदारासोबत शेख बनून भारतात आले तेव्हा मुंबईच्या सरदार गृहात लोकमान्यांची भेट घेतली पण पोलिसांची नजर असल्यामुळे आईवडिलांना भेटू शकले नाहीत.

जागतिक विक्रमाचे धनी : वाशिंगटन विद्यापीठतून त्यांनी एम.एससी., पीएच.डी. केले होते. त्या आधारे ते इराणला शिक्षण व कृशि विभागात कार्यरत झाले. 1929 साली जर्मनीला शेतकरी शोशण विरोधी चळवळीत सहभाग घेतला. नंतर मॅक्सिकोत परतल्यावर तेथील नागरिकत्व मिळवले आणि कृशि संशोधनात आमूलाग्र क्रांती घडवून आणली वाळवंटी प्रदेशात पीक देणारे बियाणे शोधून काढले. ज्याला जागतिक मान्यता मिळाल्यावर त्यांना अनेक सन्मान लाभले.

एकदा स्पेनला व्याख्यानसाठी गेल्यावर 'जेनी सिंड्रेकशी' झालेला परिचय सहजीवनात फुलला. 1936 साली तिथे हिंदू पद्धतीने विवाह केला जेनीची जानकी झाली 1949 साली ते स्व. रा.कृ. पाटील (प्रसिद्ध गाँधीवादी, सर्वोदयी विचारवंत, नागपूर) यांच्या मध्यस्थिने मॅक्सिकोतील सर्व ऐश्वर्य सोडून आपल्या दोन मुलींना सावित्री व माया यांना घेवून भारतात आले. पण मुंबईत पाउल ठेवताच पोलिसांनी अटक केली. याचे कारण असे की त्यांनी आपले मूळ आडनाव लपवून खानखोजे हेच आडनाव धारण केले होते. शेवटी महत्प्रयासाने 30 एप्रिल 1949 रोजी त्यांना नागपूरात येता आले.

18 जानेवारी 1967 ला आपल्या नागपूरातल्या राहत्या घरी निद्रावस्थेत असतांना डॉ. खानखोजे यांनी चिरनिद्रा घेतली आणि इतिहासातले एक धगधगते अग्निकुंड निवळले.

आपल्या मातृभूमीसाठी, स्वातंत्र्यानंतर शेतकऱ्यांसाठी किती महान कार्य करता येते। याचे प्रत्यक्ष जीवनपट म्हणजे डॉ. पांडुरंग सदाशिव खानखोजे, त्यांच्या प्रेरणादायी कार्यामुळे पुढच्या पिढयांना निश्चितच आपला मार्ग प्रशस्त करण्याची दिशा लाभेल. अशा या भारतमातेच्या अनाम क्रांतीताऱ्याला भारतपुत्रांचे त्रिवार अभिवादन.

यही काम कनाडा, मैक्सिको व जर्मनी से ... लगे। बर्लिन में भी इसी काम के लिए 1914 में राजा ... प्रताप सिंह की मदद पाने के लिए उन्होंने मैडम ... सहयोग लिया। डॉ. खानखोजे प्रथम विश्वयुद्ध में ... थे। तभी ईरान–अफगानिस्तान सीमा पर जख्मी ... अंग्रेजों ने उन्हें बंदी बना लिया। जनरल डायर उस ... सेनापति था। पर वे उसे चकमा देकर शेख के भेष में ... आकर मुंबई के सरदार के गृह में लो. तिलक से मि... माता–पिता से न मिल सके।

वाशिंगटन विश्वविद्यालय से उन्होंने एम. ... व पी.एच डी की डिग्री हासिल की थी तथा ईरान ... व कृषि विभाग में कार्यरत थे। सन 1929 जर्मनी में ... शोषण विरोधी आंदोलन में सक्रिय थे। बाद में ... लौटकर वहाँ की नागरिकता पाकर कृषिक्रांति के ... बने। उनके इस कार्य को वैश्विक मान्यता और ... प्राप्त हुए।

स्पेन में जेनी सिंड्रेक से परिचय का रूपांतर ... में हिंदू पद्धति से सहजीवन में हुआ। स्व.रा.कृ. ... (नागपुर के प्रसिद्ध गांधीवादी चिंतक) की सलाह पर ... दोनों पुत्रियों के साथ भारत लौटे। पर मुंबई में बंदी ... गए और बड़ी जद्दोजहद के बाद दि. 30 अप्रैल 19... नागपुर पहुँचे।

दि. 18 जनवरी 1967 को भारत माता के ... क्रांतिकारी सपूतने नागपुर में चिरनिद्रा ली और इ... का एक जाज्वल्यमान अग्निकुंड बुझ गया।

ऐसे डॉ. पांडुरंग सदाशिव खानखोजे ... अनाम भारतीय महापुरुष के प्रेरणादायी जीव... क्रांतिकारी अभिवादन।

- सुरेखा ...

ऐसा लगता है कि हम हमेशा अपनी अपेक्षा से अधिक कर लेते हैं लेकिन कड़ी मेहनत के बाद। - राबर्ट ...

मराठी मराठी हिन्दी తెలుగు లిపి ગુજરાતી **भाषा** മലയാളം বাংলা

आज़ादी का अमृत महोत्सव

ଓଡ଼ିଆ ଲିପି ಕನ್ನಡ संस्कृतम् नेपाली असमीया

चिल्काझील की विशेषताएं

भारत की प्राचीन भाषाओं में उड़िया भी शामिल है। जैन और बौद्ध साहित्य भी उड़िया में रचे बसे हैं। एक सांस्कृतिक प्रदेश की भाषा उड़िया पर भारतीय और अरबी का भी प्रभाव दिखता है। यहाँ पर जन्मे भक्ति आंदोलन में भारतीय साहित्य को सर्वाधिक प्रभावी किया है।

सुकांतचन्द
उप निदेशक

ଚିଲିକା ହ୍ରଦର ବିଶେଷତ୍ୱ (मूल उड़िया)

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1. [illegible] Lagoon ।
2. [illegible] ।
3. [illegible] (Hot Spot) ।
4. Lagoon [illegible] ।
5. [illegible] ।
6. [illegible] ।
7. [illegible] National Wetlands, Mangroves and Coral Reefs Committee of Ministry of Environment and Forest [illegible] ।
8. Caspian Sea, Baikal [illegible], Aral Sea, [illegible] ।
9. [illegible] ।
10. [illegible] 1981 [illegible] ।

[illegible] Plastic [illegible] ।

चिल्काझील की विशेषताएं (हिन्दी अनुवाद)

चिल्काझील प्रवासी पक्षियों के लिए भारतीय उपमहाद्वीप में सबसे बड़ा शीतकालीन आवास है। यह उड़ीसा की सबसे बड़ी झील है।यह मीठे पानी की झील है। इस झील की अधिकतम लंबाई लगभग 65 किमी और अधिकतम चौड़ाई 18 किमी. है।

प्रवासी पक्षी चिल्काझील में सर्दियाँ बिताते हैं। ये सुदूर उत्तरी गोलार्ध और साइबेरिया से हजारों मील की दूरी से उड़कर आते हैं। इस झील में पौधों और जानवरों की कई लुप्तप्राय प्रजातियां रहती हैं। यह तीन तरफ से जमीन से घिरा हुआ है जबकि एक तरफ समुद्र से जुड़ा हुआ है। इसलिए इसे झील के बजाय लैगून भी कहा जाता है। यह ओडिशा के तीन जिलों जैसे पुरी, खुर्दा और गंजम को स्पर्श करती है। भारत के पूर्वी तट पर स्थित, इस झील का निकटतम रेलवे स्टेशन पूर्व-तट रेलवे का बालूगांव स्टेशन है। यदि आप राष्ट्रीय राजमार्ग 5 पर जाते हैं, तो बरकुल, बालुगा और रंभा पर उतरें और चिल्का तक जाएं।

पृथ्वी पर जितने भी जलस्रोत, झीलें या लैगून हैं, उन में चिल्काझील का स्थान विशेष है क्योंकि:

1. यह नमक की एक बड़ी झील या लैगून है।
2. भारतीय उपमहाद्वीप के सबसे बड़े और अच्छे सर्दियों के मैदानों में से एक है।
3. भारतवर्ष का एक प्रमुख जैव विविधता हॉट स्पॉट है।
4. मछली के लिए एक उत्पादक पारिस्थिति की तंत्र के रूप में आदर्श लैगून है।
5. देश में जल पक्षियों के सबसे बड़े आवासों और प्रजनन-स्थलों में से एक जो सर्दियों में दिखाई देते हैं।
6. लैगून के बीच में स्थित नालबन द्वीप को वन्यजीव (संरक्षण) नियमों के तहत पक्षी अभयारण्य घोषित किया गया है।
7. जैवविविधता के संरक्षण और प्रबंधन के लिए भारत सरकार के पर्यावरण और वनमंत्रालय की राष्ट्रीय आर्द्र भूमि, मैंग्रोव और कोरलरीफ समिति द्वारा इसे एक प्रमुख स्थल के रूप में चिह्नित, नामित और मान्यता दी गयी है।
8. यहाँ के रिपयन सागर, बैकालझील, अरालसागर, रूस, मंगोलिया, किर्गिज घास के मैदान, मध्य और दक्षिण-पूर्व एशिया, लद्दाख और हिमालय के विदेशी पक्षियों का शीतकालीन प्रजनन संभव है।
9. चिल्काझील अपनी स्वादिष्ट मछली, झींगा और केकड़े के लिए विश्वप्रसिद्ध है।
10. भारत सरकार द्वारा आर्द्र भूमियों को उनकी विशाल जैवविविधता और सामाजिक-आर्थिक महत्व के कारण, इसे 1981 में अंतर्राष्ट्रीय दर्जा दिया गया है।

चिल्काझील वर्तमान में विभिन्न समस्याओं का सामना कर रही है। प्रदूषण उनमें से एक है। इसके अलावा प्लास्टिक कचरा भी झीलों को प्रदूषण की ओर धकेलता है। इस से बचने के लिए सरकार और जनता को सावधान रहना चाहिए।

हिंदी के अलावा भी हैं राजभाषाएं

हर भाषा महान है और महत्वपूर्ण है। भारत में भाषाओं के बारे में यूं ही नहीं कहा जाता 'कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बाणी', देश में तो बोलचाल की सहज भाषा हिन्दुस्तानी है जिसमें हर क्षेत्र की भाषाएं सम्मिलित है। इस लेख में संवैधानिक रूप से स्वीकृत उन्हीं क्षेत्रीय भाषाओं की चर्चा की गई है।

भावना पाटील
सहायक निदेशक

भारत देश में कई तरह की भाषा और बोलियों का प्रचलन है। हर प्रांत की अपनी अलग भाषा और बोली है। पूरे देश में बोली जानेवाली हिंदी भी अलग–अलग राज्यों में कई अलग–अलग रंगों में रंगी मिलती है। वास्तव में, अलगपन में भी एक नयापन होता है इसलिए यही विविधता भारत की विशेषता बन जाती है। अपनी इन्हीं विशेषताओं और स्वाधीनता को बचाने के लिए स्वतंत्रता संग्राम हुआ था क्योंकि आजादी से ही हमारे लोगों और लोक सरोकारों की सुरक्षा हो सकती है। इनमें संस्कृति और भाषा भी शामिल है।

देश के आजाद होने के बाद, संविधान के निर्माण का काम शुरू हुआ। संविधान सभा के मंथन के बाद, 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को 'राजभाषा' का दर्जा मिल गया। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि संविधानः के अनुच्छेद–343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी रहेगी और यहाँ संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार, संघ का यह कर्तव्य होगा कि हिंदी भाषा का प्रचार–प्रसार करें वृद्धि करे और उसका विकास करना सुनिश्चित करें ताकि यह भारत की सामासिक संस्कृति के सब तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम हो सके। अर्थात मुख्य राजभाषा तो हिंदी ही होगी पर उसके विकास एवं प्रचार–प्रसार में भारत की अन्य भाषाओं को भी योगदान और प्रतिनिधित्व रहेगा।

इस विषय में राजभाषा संकल्प, 1968 बहुत महत्वपूर्ण और मार्गदर्शक है। संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित इस सरकारी संकल्प को जनसूचनार्थ प्रकाशित भी किया गया था। संकल्प की मुख्य बातें इस प्रकार है –

यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी के प्रसार एवं विकास की गति बढाने के हेतु तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों के लिए उत्तरोत्तर इसके प्रयोग हेतु भारत सरकार द्वारा एक अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा और किए जानेवाले उपायों ... जानेवाली प्रगति की विस्तृत वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट ... दोनों सभाओं के पटल पर रखी जाएगी और सब राज्य ... को भेजी जाएगी।

2) जबकि संविधान की आठवीं अनुसूची में ... अतिरिक्त भारत की 21 मुख्य भाषाओं का उल्लेख किया ... और देश की शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक उन्नति के ... आवश्यक है कि इन भाषाओं के पूर्ण विकास हेतु सामूहि... किए जाने चाहिए।

यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी के साथ–... सब भाषाओं के समुचित विकास हेतु भारत सरकार द्वा... सरकारों के सहयोग से एक कार्यक्रम तैयार किया जा... उसे कार्यान्वित किया जाएगा ताकि वे शीघ्र समृद्ध ... आधुनिक ज्ञान के संचार का प्रभावी माध्यम बनें।

3) जबकि एकता की भावना के संवर्धन तथा ... विभिन्न भागों में जनता में संचार की सुविधा हेतु यह आ... कि भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों के परामर्श से ते... गए त्रिभाषा सूत्र को सभी राज्यों में पूर्णतः कार्यान्वित ... लिए प्रभावी किया जाना चाहिए।

यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी भाषी क्षेत्रों ... तथा अंग्रेजी के अतिरिक्त एक आधुनिक भारतीय भाषा के ... भारत की भाषाओं में से किसी एक को तरजीह देते हु... अहिंदी भाषी क्षेत्रों में प्रादेशिक भाषाओं एवं अंग्रेजी के ... हिंदी के अध्ययन के लिए उस सूत्र के अनुसार प्रबन्ध कि... चाहिए।

4) और जबकि यह सुनिश्चित करना आवश्य... संघ की लोक सेवाओं के विषय में देश के विभिन्न भागों ... के न्यायोचित दावों और हितों का पूर्ण परित्राण किया जा...

यह सभा संकल्प करती है कि –

क) कि उन विशेष सेवाओं अथवा पदों को छोड़कर जिनके लिए ऐसी किसी सेवा अथवा पद के कर्तव्यों के संतोषजनक निष्पादन हेतु केवल अंग्रेजी अथवा केवल हिंदी अथवा दोनों जैसी कि स्थिति हो, का उच्च स्तर का ज्ञान आवश्यक समझा जाए। संघ सेवाओं अथवा पदों के लिए भर्ती करने हेतु उम्मीदवारों के चयन के समय हिंदी अथवा अंग्रेजी में से किसी एक का ज्ञान अनिवार्यत होगा: और

ख) कि परीक्षाओं भावी योजना, प्रक्रिया संबंधी पहलुओं एवं समय के विषय में संघ लोक सेवा आयोग के विचार जानने के पश्चात अखिल भारतीय एवं उच्चतर केन्द्रीय सेवाओं संबंधी परीक्षाओं के लिए संविधान की आठवी अनुसूची में सम्मिलीत सभी भाषाओं तथा अंग्रेजी को वैकल्पिक माध्यम के रूप में रखने की अनुमती होगी।"

'आठवी अनुसूची' क्या है?

भारत के संविधान के साथ संलग्न अनुसूचियों में से आठवी अनुसूची में अन्य राजभाषाओं के रूप में भारतीय भाषाओं को सम्मिलित किया गया है। इस अनुसूची में भारत गणराज्य की अधिकारिक भाषाएं सूचीबद्ध है। संविधान के भाग XVII में अनुच्छेद 343 से 351 तक शामिल अनुच्छेद आधिकारिक भाषाओं से संबंधित है।

आठवी अनुसूची से संबंधित संवैधानिक प्रावधान :

इस चरण में यह चर्चा आवश्यक है कि संविधान में कहाँ किन प्रावधानों से अन्य भारतीय भाषाओं को बल व संरक्षण मिलता है तो निम्नलिखीत अनुच्छेद में पर्याप्त व्यवस्थाएं मिलती है।

अनुच्छेद 344 : अनुच्छेद 344 (1) संविधान के आरंभ से पांच वर्ष की समाप्ति पर राष्ट्रपति द्वारा एक आयोग के गठन का प्रावधान करता है। आयोग ने अपने रिपोर्ट में भारतीय भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्धन की बात कही है।

अनुच्छेद 351 : यह हिंदी भाषा को विकसित करने के लिये इसके प्रसार का प्रावधान करता है ताकि यह भारत की मिश्रित संस्कृति के सभी तत्वों के लिये अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में कार्य कर सके। स्पष्टतः इसके माध्यम से भारतीय भाषा के शब्दों का प्रयोग को भी हिंदी के साथ अभिव्यक्ति दिलाने का प्रयास है।

हालांकि यह ध्यान देने योग्य है कि किसी भी भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करने के लिये कोई निश्चित मानदंड निर्धारित नहीं है।

अधिकारिक भाषाएं कौन सी है?

संविधान की आठवीं अनुसूची में निम्नलिखित 22 भाषाएँ शामिल है जो निम्नलिखित है :

असमिया, बांगला, गुजराती, हिंदी, कन्नड, कश्मिरी, कोकणी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओडिया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तेलगु, उर्दू, बोडो, संथाली, मैथिली और डोगरी।

इन भाषाओं में से 14 भाषाओं को संविधान के प्रारंभ में ही शामिल कर लिया गया था। वर्ष 1967 में सिंधी भाषा को 21 वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया था। वर्ष 1992 में 79 वे संशोधन अधिनियम द्वारा कोंकणी, मणिपुरी और नेपाली को शामिल किया गया वर्ष 2003 में 92 वें संविधान अधिनियम जो कि वर्ष 2004 से प्रभावी हुआ, द्वारा बोडो, डोंगरी, मैथिली और संथाली को आठवी अनुसूची में शामिल किया गया।

इस प्रकार से हिंदी के अलावा भी उपर्युक्त भारतीय भाषाएँ 'राजभाषाएं' है। इन भाषाओं को संविधान का संरक्षण प्राप्त है। इन राजभाषाओं में भी कामकाज किया जाता है। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार किसी अधिकारिक दस्तावेज को इन सभी भाषाओं में तैयार करवाता और जारी करवाता है। अब भारतीय भाषाओं में प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रश्न–पत्र तैयार किए जा रहे हैं। संस्कृत, उर्दू और सिन्धी के प्रचार–प्रसार एवं विकास के लिए काउंसिल और संस्थान है। इसलिए हिंदी अकेली राजभाषा नहीं है अन्य भारतीय भाषाए भी राजभाषा है। चूंकि हिंदी अपने विस्तार के कारण अधिक बड़ी हो जाती है जबकि हिंदी को राजभाषा बनाने में सभी भारतीय भाषाओं का सहयोग अपेक्षित है ताकि राजभाषा वाली हिंदी का व्यवहार करते समय किसी भी प्रांतवासी को वह अपनी ही लगे क्योंकि जिसकी मातृभाषा की भी इसके शब्द भण्डार में सहभागिता होगी। अतः भारत का संविधान जिसकी प्रस्तावना यह कहती है कि 'इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते है।" समीचीन है क्योंकि यह स्वतंत्रता और संप्रभुता के लिए अंगीकार करने योग्य है, शासन के तीनों अंगों को नियंत्रित करता है इसीलिए अधिनियमित करने योग्य है एवं ये हमें और हमारी भाषा को पूरा अवसर संरक्षण देती है इसलिए आत्मार्पित करने योग्य है, धारण करने योग्य है।

सार्क देशों की सांस्कृतिक धरोहर हिंदी

प्रवीण गढ़वाल
प्रवर श्रेणी लिपिक

हिंदी दिलों पर तो राज करती ही है लेकिन विभिन्न मंचो पर भी आधिकारिक रूप से यदि इसकी उपस्थिती सुनिश्चित हो जाए तो इसे वैश्विक भाषा बनने से कोई रोख नहीं सकता है। विभिन्न उद्देशों के लिए बने मंचो पर हिंदी की उपस्थिती को जाचने के लिए पहले सार्क समूह में हिंदी की चर्चा पर यह आलेख अत्यंत पठनीय है।

'सार्क' दक्षिण एशिया के सात देशों का संगठन है, जिसका पूरा नाम है **'दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन'**। सार्क संगठन का अंग्रेजी नाम साऊथ एशियन एसोसिएशन फॉर रीजनल को-ऑपरेशन का छोटा रूप है। 08 दिसम्बर, 1985 को बने इस संगठन का उदेश एशिया मे हिन्दी भाषा के माध्यम से आपसी सहयोग से शांति और प्रगति हासिल करना है।

सार्क के आठ सदस्य देश है

1. भारत	2. पाकिस्तान
3. बांग्लादेश	4. श्रीलंका
5. नेपाल	6. अफगानिस्तान
7. मालदीव	8. भूटान

सार्क का जन्म

आपसी सहयोग हेतु संगठन बनाने की बात सबसे पहले मई, 1980 में उठाई गई जो दक्षिण एशिया के विकास हेतु थी। अप्रैल, 1981 में विचार विमर्श के बाद पहली बार श्रीलंका की राजधानी कोलंबो में सातों देशों के विदेश सचिवों की बैठक हुई। इसके बाद अगस्त, 1983 में दिल्ली में पहली बार सदस्य देशों के विदेश मंत्रियों की बैठक हुई। फिर सातों देशों के राष्ट्राध्यक्ष या शासनाध्यक्ष पहली बार बांगलादेश की राजधानी ढाका में जुटे। 8 दिसंबर, 1985 को इस शिखर सम्मेलन में एक चार्टर को स्वीकार किया गया और इसी के साथ सार्क का जन्म हुआ।

भारत और सार्क

यह पूरी तरह से एक संयोग हो सकता है किंतु यह अपार प्रतिकात्मक महत्व से भरा हुआ लाभदायक घटनाक्रम है। विश्व से सबसे बड़े लोकतंत्र का कार्यभार संभालने और नई दिल्ली में अपने में अपने शपथग्रहण समारोह में दक्षिण एशिया के सभी देशों के नेताओं को आमन्त्रित करके एक बड़ा कूटनीतीक कदम उठाने ... प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने काठमाण्डू में 18वें सार्क शिखर ... में भाग लिया जो इस बात की ओर इशारा करता था कि ' ... **सबसे पहले'** विदेशी नीति का हिस्सा पहले से ही रहा है।

आपस में जुडे सपने :

आपस में जुड़ी हुई नियति, आपस मे जुडे हुए स्वप्न का ... लोगों के लिए ये अभिव्यक्तियाँ अलंकृत बातें प्रतीत हो सकती ... वास्तविकता यह है कि इन क्षेत्रों की अपार क्षमता को फली... की हिन्दी भाषा की बड़ी भूमिका रही है। सार्क को क्षेत्रीय ... और एकीकरण के पहले से मंच के रूप में पुनः ताकत प्रदान ... अपने प्रयासों में भारत, जो इस क्षेत्र की सबसे बड़ी अर्थव्य... आबादी वाला देश है, हिंदीभाषी देश होने के साथ-साथ ... भी है।

दक्षिण एशिया हिंदी भाषा की दृष्टि से महत्त्वपूर्णः

आठ राष्ट्र, स्पंदनशीलता और उभरते हुए प्रजातंत्र, ... अर्थव्यवस्थाएँ यह सब मात्र एक हिन्दी भाषा के बल पर ... है। दुनिया के बड़े धर्मों की जन्मभूमि, दक्षिण एशिया में वह ... मौजूद है जो वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनानेवाली ... ताकत बनने के लिए चाहिए। अब समय आ गया है कि ... घोषणाओं और ठोस कार्रवाई के बीच के अंतर को हिन्दी ... माध्यम से विश्व स्तर पर क्षमतावान एवं प्रभावशाली भूमिका ... वाला क्षेत्र बन सके।

सार्क देशों का क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण :

आर्थिक संघ में बेहतर व्यापारिक उदारीकरण, सीमा पार ... विकास तथा इस क्षेत्र में माल और नेताओं के मुक्त आवागम...

बाधित करनेवाली नॉन–टैरिफ बाधाओं के निवारण की परिकल्पना की गई है। भारत को सेवाओं के संबंध में साफ करार के कार्यान्वयन की बात को भी बढ़ावा देना चाहिए।

सांस्कृतिक समकक्षताएं :

संपर्क केवल भौतिक नहीं हो सकता। यह दिलोदिमाग के रिश्तों को पढ़ता है जो बहुत ही महत्वपूर्ण है। अतः भारत से यही उम्मीद रही है कि नई पहल होंगी और लोगो के पारस्परिक, शैक्षिक, भाषायी एवं सांस्कृतिक संपर्कों को बढ़ावा देने और उन्हें घनिष्ठ बनाने की जरूरत पर बल मिलेगा।

सार्क का उद्देश्य

1. दक्षिण एशिया के लोगों के कल्याण को बढ़ावा देना एवं उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना।

2. देशों के मध्य सामूहिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना।

3. अन्य विकसनशील देशों के साथ सहयोग को मजबूत बनाना।

4. समान हितों के मामलो मे अंतर्राष्ट्रीय मंच पर आपसी सहयोग को मजबूत बनाना।

5. अंतर्राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय संगठनों के साथ समाज उद्देश्यों एवं लक्ष्मी को साथ सहयोग करना।

सार्क और इसका महत्त्व :

सार्क सदस्य देशों का क्षेत्रफल विश्व के क्षेत्रफल का 3% है। एवं विश्व की कुल आबादी के 1/4 लोग सार्क देशों में रहते है। विश्व की आर्थिक व्यवस्था में सार्क देशों की हिस्सेदारी 3.8% है। यह दुनिया की सबसे घनी आबादीवाला क्षेत्र होने के साथ–साथ उपजाऊ क्षेत्र भी कहलाता है। सार्क देशों में परंपरा, परिधान, भोजन और सांस्कृतिक एवं राजनीतिक पहलु लगभग समान है। सार्क के सदस्य देशों के समान समस्याएँ एवं मुद्दे सभी लगभग समान है। गरीबी, निरक्षरता, कुपोषण आदि प्राकृतिक आपदाएँ, औद्योगिक एवं तकनीकी पिछड़ापन आदि समस्याएँ भी है।

भारत के लिए महत्व

1. 'पहले पड़ोसी' अर्थात् देश के समीपवर्ती पड़ोसियों को प्रमुखता देना।

2. यह विकास प्रक्रिया और आर्थिक सहयोग में नेपाल, भूटान, मालदीव एवं श्रीलंका को आकर्षित करके चीन के वन बेल्ट एण्ड वन रोड कार्यक्रम का विरोध करना।

3. क्षेत्रीय स्थिरता भारत सार्क के सभी देशों के बीच आपसी विश्वास एवं शांति स्थापित करने में सहयोग करता है।

4. भारत अतिरिक्त जिम्मेदारियां लेकर क्षेत्र में अपने नेतृत्व को प्रदर्शित करने के लिए एक मंच प्रदान करता

सार्क विकास की ओर

एक ऐसे क्षेत्र में जहाँ चीनी निवेश एवं गठन तेजी से बढ़ा है, सार्क विकास हेतु एवं अधिक स्थायी विकल्प प्रस्तुत करने के साथ ही व्यापार शुल्कों का विरोध कर सकता है।

दुनिया भर में दक्षिण एशियाई श्रमिकों के लिए बेहतर शर्तों को रखने के लिए एक आम मंच की भूमिका निभा सकता है।

सार्क एक ऐसा संगठन है जो ऐतिहासिक और समकालीन रूप से दक्षिण एशियाई देशों की पहचान दर्शाता है। यह प्राकृतिक रूप से बनी एक भौगोलिक पहचान है।

यहाँ की भाषा, संस्कृति, और धार्मिक संबंध समान रूप से दक्षिण एशिया को परिभाषित करते हैं। सार्क को स्वाभाविक रूपसे प्रगति करने का अवसर दिया जाना चाहिए एवं दक्षिण एशियाई लोगों को अधिक लोगों से संपर्क करने की अनुमति प्रदान करना चाहिए।

हिंदी भाषा के माध्यम से सार्क का महत्त्व :

हिंदी भाषा एक ऐसी भाषा है जो सरल और सुगम होने के साथ ही समझने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसी के माध्यम से सार्क के सभी देशों को एक सूत्र में बंधे रहने की ताकत प्राप्त होती है।

सार्क के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतीक विकास में उभार लाने के लिए हिंदी भाषा का महत्त्वपूर्ण योगदान है। भाषा के माध्यम से ही हम अपनी समस्याओं एवं मूलभूत जरूरतों को एक–दूसरे से बता कर सकते है जो केवल हिन्दी के द्वारा ही संभव है।

महर्षि दयानंद सरस्वती ने कहा है कि 'हिंदी द्वारा संपूर्ण भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। किंतु मेरा मानना है कि हिंदी द्वारा संपूर्ण विश्व को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

कोरोनाकाल में ईएसआईसी

कर्मचारी राज्य बीमा निगम का ध्येय ही सामाजिक सुरक्षा है। कोरोना काल में निगम के अधिकारी और कर्मचारीओं ने अभूतपूर्व सेवा प्रदान की। बेरोजगारी की मार झेलनेवाले कामगारों के साथ खडे होकर तत्परता से हितलाभ प्रदान किये गये। इससे ईएसआयसी की मौजूदगी उभरकर सामने आई तो दूसरी तरफ नियोजकों और कामगारों को भी इस योजना का महत्व समझ आया।

रजनी कुमारी शर्मा
मल्टी टास्किंग स्टाफ

केंद्रीय श्रम मंत्रालय द्वारा कर्मचारियों के लिए स्वास्थ लाभ हेतू योजना चलाई गयी है। जिसका नाम कर्मचारी राज्य बीमा निगम है। इसका फायदा निजी कंपनियों, फैक्ट्रियों और कारखानों के काम करने वाले कर्मचारियों को मिलता है। ई.एस. आय. योजना के तहत मुफ्त इलाज का लाभ लेने के लिए ई.एस. आय. डिस्पेन्सरी अथवा हॉस्पिटल है। इसके लिए ई.एस.आय. कार्ड बनता है कर्मचारी इस कार्ड या फिर कंपनी से लाए गए दस्ताऐवज के आधार पर स्कीम का फायदा ले सकता है।

मौजूदा समय में देशभर के ई.एस.आय. सी के 151 अस्पताल है। इन अस्पतालों में सामान्य से लेकर गंभीर बीमारियों का इलाज की सुविधा उपलब्ध है। पहले ई.एस.आय.सी. अस्पताल के कवरेज मे शामिल लोगों को ही इलाज की सुविधा मिलती थी, लेकिन अब सरकार ने इसे आम लोगों के लिए खोल दिया है। ई.एस.आय.सी योजना संचालन करने हेतु सभी कंपनी और प्रतिष्ठान आते है। जिसमें 10 या इससे ज्यादा कर्मचारी हैं। हालांकि महाराष्ट्र व चंदीगढ़ में 20 या इससे ज्यादा कर्मचारी वाले प्रतिष्ठान इस योजना के दायरे में आते है। अभी फिलहाल में ई. एस. आय. सी. का लाभ उन कर्मचारियों को उपलब्ध है जिसकी आय मासिक आय 21 हजार रुपये या इससे कम है, हालांकि दिव्यांगजनों के मामले में आय सीमा 25,000 रुपये है। और आगे से 30,000 तक कर्मचारी इस योजना का लाभ ले सकेंगे। ई.एस.आय.सी. में नियोक्ता तथा कर्मचारी दोनों का अंशदान 0.75 तथा 5.25 फिसदी है। जिन कर्मचारियों का प्रतिदिन औसत वेतन 137 रुपये है, उन्हें इससे अपना योगदान नहीं देना होता है। इस योजना में बहुत प्रकार के लाभ प्राप्त होते है जो निम्नलिखित है।

चिकित्सा हितलाभ, बीमारी हितलाभ, मातृत्व हि… निःशक्तता हितलाभ, आश्रितजन हितलाभ, बेरोजगारी … हितलाभ, वृद्धावस्था चिकित्सा हितलाभ, अस्थायी … हितलाभ, स्थायी अपंगता हितलाभ, प्रसूति हितलाभ और … हितलाभ।

नोवल कोरोना वायरस के कारण वैश्विक … संकट गहराता जा रहा है और अनेक लोगों के लिए … नया 'नियम' बन गया है और अब यह धारणा तेजी से … कि आनेवाले समय में जब तक कोरोना वायरस खत्म … तक दुनिया की सूरत हमेशा के लिए बदल जाएगी आज … को लेकर आम सहमति है कि अगले डेढ़ से दो साल … दुनिया किसी न किसी रूप से संभवतः उसके बाद भी … और इसके स्थायी प्रभाव निःसंदेह कई वर्षों तक मह… जाते रहेंगे। दुनिया के कई हिस्सों में सीमाए बंद हैं, … होटल और व्यवसाय बंद है और शैक्षणिक संस्थान … अभूतपूर्व उपाय कुछ समाजों के सामाजिक ताने–बाने … रहे है, जिसके परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर लोगों की … छूट रही हैं और व्यापक पैमाने पर भूख की छाया बढ़ रही … सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल है जिसके दो साल … रहने की संभावना है। जब तक इसकी वैक्सीन विक… होगी तब तक यह वायरस का खतरा बना रहेगा। क्योंकि … अलग देश में इस वायरस के नए संक्रमणों के चक्र पर … के लिए संघर्ष करते रहेंगे और इस तरह से उनकी … प्रणालियों पर दबाव बना रहेगा। वैक्सीन के विकास … उत्पादन और न्यायसंकेत वितरण की बाधाओं को दूर … लिए सामूहिक प्रयास की भी आवश्यकता है। गहन चिकि…

आवश्यकता वाले तेजी से बढ़ रहे रोगियों का इलाज करने के लिए मास्क से लेकर वेंटिलेटर तक की जरूरी सामने उत्पादन एवं उनकी आपूर्ति के लिए अंतराष्ट्रीय आपूर्ति श्रृंखलाओं को युद्ध स्तर पर तैयार रखा।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि दुनिया मंदी की स्थिति में जा चुकी है। अगले साल इस मंदी के पूरा स्वरूप गहन कर लेने की संभावना है। वैश्विक जीडीपी–2021 के लिए अनुमान 205 प्रतिशत से नीचे आ गए है। व्यावसायिक संचालन को बंद करने के लिए विवश होना पड़ा है जिसके कारण हर जगह उत्पादन में गिरावट हुई है। कोविड–19 सार्वजनिक सेवाओं सहित सभी सेवाओं की चौथी औद्योगिक क्रांति और डिजिटलाइजेशन को तेजी से आगे बढ़ाएगा। समुदाय और राज्य के बीच संबंधों में पहले की तुलना में अधिक दूरी आएंगी और जिसके कारण सिवील सोसायटी और निजी जीवन पर रिमोट कंट्रोल का विस्तार करेंगे।

व्यापार और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के अनुसार गत वर्ष वैश्विक विकास 2.1 प्रतिशत था। जो जैसे ही कम या लेकिन इस साल यह दो प्रतिशत से निचे गिर सकता है। वैश्विक मंदी निश्चित है। कोरोना 19 महामारी के कारण त्रासद मानवीय परिणामों के अलावा इसने आर्थिक अनिश्चितता को बढ़ा दिया है और इसके कारण वैश्विक अर्थव्यवस्था को 2020 में एक दिवसीय ट्रिलियन डॉलर का झटका लगा। संयुक्त राष्ट्र संघ का मानना है कि भारत को कोरोना महामारी के कारण प्रकोप के कारण 348 मिलियन डॉलर का व्यापार घाटा हुआ।

कर्मचारी राज्य बीमा योजना के तहत कंपनी तथा प्रतिष्ठानों मे काम कर रहे कर्मचारीयों को राहत दे रही है। देश में कोरोना की पहली लहर आने के बाद ही कई योजनाओं के माध्यम से रोजगार मे वंचित लोगों को आर्थिक राहत देने के बाद अब ई.एस.आय.सी. नई योजना लेकर आ रहे है। ई.एस.आय.सी. की ओर से कोरोना को ध्यान में रखकर इस योजना की शुरूआत की जा रही है जिसका लाभ सीधे तौर पर कोविड से मौत होने के बाद कर्मचारी के परिवार को मिलेगा ई.एस.आय.सी. की ओर से कोविड–19 रिलीफ स्कीम शुरू की जा रही है। ई.एस.आय.सी. के बीमा आयुक्त (रिवेन्यु एन्ड बेनेफिट) श्री एन. के. शर्मा ने बताया कि तीन जून, 2021 से इस योजना को लागू किया गया। किसी खास बीमारी को लेकर आई यह पहली योजना होगी जिसमें कोरोना बीमारी की चपेट में आकर मरनेवाले कर्मचारियों के परिवारों को आर्थिक मदत हो जाएगी।

इस स्कीम के तहत आवेदन करनेवाले परिवार को मृत कर्मचारी की सैलरी मिलेगी। यानी कि ई.एस.आय.सी. में योगदान देनेवाले कर्मचारी की अगर कोरोना से मौत हो जाती है तो उसके परिवार में पत्नी, बच्चों, निर्भर माता पिता या भाई–बहनों को हर महीने कर्मचारी का अंतिम सैलरी का 10 फिसदी भुगतान किया जाएगा। जिससे कि कर्मचारी के निर्भर परिवार वालों का आसानी से जीवन यापन हो सकेगा। क.रा.बी. निगम योजना के तहत लॉकडाऊन में कर्मचारी कारंटाईन में रहते हुए जब कोई नियोक्ता भुगतान नहीं किया। उसका भुगतान ई.एस.आय.सी. ने कर दिया है। अतः मुख्यतः मृत्यु का हितलाभ तथा नगद भुगतान हमारे कर्मचारीयों (कंपनी / प्रतिष्ठान) में काम करनेवाले कर्मचारीओंको ई.एस.आय.सी. ने भुगतान कर इससे राहत प्रदान कर दी गयी है। एवम् अंत्येष्टि व्यय का भुगतान भी ई.एस.आय.सी. ने प्रदान कर दी है।

कोरोना काल में ई.एस.आय.सी. में व्याप्त कर्मचारियों का बहुत ही बारीकी से ध्यान रखा गया जिससे उनके परिवार में असंतोष नहीं पनपने दिया। अतः ई. एस. आय. सी. योजना भारत में जब से स्थापित हुई। इस योजना की तरह कोई भी योजना देश में स्थापित नहीं है। अतः इस योजना का लाभ अभी हर कर्मचारी लेंगे क्योंकि श्रम मंत्रालय के आदेशानुसार संगठित तथा असंगठित कर्मचारी इससे जुड़ पाएंगे और आनेवाले समय में वह 29,000/– रुपये मासिक से 30,000/– रुपये मासिक तक व्याप्त होंगे।

हमें बहुत गर्व महसूस होता है कि हम इस योजना में कर्मचारी के रूप में काम करते है, और कंपनी तथा प्रतिष्ठान में काम करनेवाले कर्मचारी और उनके परिवार वालों की दुआ हमें प्राप्त होती है। हमारे सहयोगियों ने इस योजना को अच्छी तरह से अमल में लाते है। इसका बहुत ही मन से धन्यवाद तथा इस योजना में आगे होने वाली व्याप्ति तथा जुड़ने वाले कर्मचारी के हित में हम हमेशा काम करते रहेंगे।

संयुक्त जयंती समारोह

ईएसआयसी एस.सी./एम.टी. [illegible] कार्यालय में छत्रपती शिवाजी, [illegible] आंबेडकर का संयुक्त [illegible] पर मुख्य अतिथि डॉ. नीरज [illegible] उन्हें एकता और सद्‌भाव [illegible]

डॉ. नीरज बोधि*
अतीथि वक्ता

सर्वप्रथम, मैं पूज्य छत्रपति शिवाजी महाराज, महात्मा जोतीबा फुले व महामानव बाबासाहेब आंबेडकर का वंदन करता हूं। इस सुअवसर पर सम्मिलित हो पाना मैं सौभाग्य समझता हूं। इन जयंती कार्यक्रमों का उद्‌देश्य बड़ा ही प्रेरणादायक होता है। पाली में एक गाथा है **"दुर्लभ पुरिसा ज्योम नसो सब्बत्थ जागती यवत्थो जायती पुरे सम्म जयती"** अर्थात् मनुष्य का जन्म दुर्लभ है, सभी जगह मनुष्य उत्पन्न नहीं होते। जहाँ एक अच्छा परिवेश है, समयानुकूल वातावरण है वहीं मनुष्य का जन्म होता है। आप समुद्र की गहराई में जाइये, अंतरिक्ष में जाइये वहाँ मनुष्य जाति का अस्तित्व नहीं है। जो धरती वातावरण से ही मनुष्य की निर्मिति हो सकी है। यह पृथ्वी पर विकासक्रम का ही परिणाम है अन्यथा मनुष्य का जन्म दुर्लभ [illegible] इसलिए सर्वश्रेष्ठ मानव है। जो खुद को अपनी स्थिति से ऊँचा उठा सकता है। यह व्यवस्था केवल मानव को ही मिली है इसलिए मनुष्य का जन्म दुर्लभ कहा गया है।

जीवों में मनुष्य श्रेष्ठ है पर मनुष्य की श्रेष्ठता [illegible] मानवता से है। मानवता धारण करने वाला ही सच्चा [illegible] वाला होता है। पशु भी जन्म लेते है, आहार ग्रहण करते हैं और [illegible] आने पर मर जाते हैं। मनुष्य भी इससे भिन्न नहीं है। [illegible] मानवीय भावना ही उसे श्रेष्ठ बनाती है। हमारे महापुरुषों ने [illegible] सिखाया है कि हमारा प्रयास हो कि समाज एक उन्नत [illegible] करें। सभी को सुख और सम्मानपूर्वक जीने का अधिकार है। [illegible] कोई सामाजिक नीति नियम बनाकर अपने दूसरे [illegible] अधीन कर लिया, किसी को गुलामी का जीवन जीने के लिए [illegible] दिया तो यह मनुष्यता के लिए अच्छा नहीं है। मनुष्यता के लिए मानवता को जीवित रखने के लिए जो सामाजिक [illegible]

[illegible] दिखाई देता है।

[illegible] महापुरुषों ने [illegible] मानवता, [illegible] ने ही किया। [illegible] इतना [illegible] उसमें [illegible] भगवान बुद्ध ने [illegible] इसमें [illegible] नदीयों [illegible] की यह [illegible] व्यवस्था [illegible]

[illegible] उनके [illegible] आज भी [illegible] लोगों की [illegible] है। जो [illegible] कार्य [illegible] को [illegible]

*सहायक प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष, [illegible]

मैं ऐसे किसी [illegible]

तुकाराम महाराज का कार्य हमारे लिए प्रेरणादायी है।

शिवाजी महाराज के जीवन में सर्व समावेशकता थी। स्त्री के सम्मान का उदाहरण और आचरण शिवाजी से अच्छा नहीं मिल सकता है। आज समाज को उनसे सीखने की आवश्यकता है। जब एक बार किसी किले को जीत लेने पर, उस किलेदार की बहु गौहरबानो को शिवाजी के समक्ष पेश किया गया तो छत्रपति ने उससे बड़े आदरपूर्वक व्यवहार किया। उन्होंने उनकी प्रशंसा करते हुए आदरभाव से कहा, "हमारी माता आप जैसी सुंदर होती तो शायद हम भी उतने सुंदर होते।" इसके बाद बड़े इज्जत के साथ उन्हें सुरक्षित वापस भेज दिया गया। व्यक्ति में संस्कार ऐसी ही नहीं आते है। उनकी माता जो परवरिश की और शिक्षा दी वह बेहद जरूरी था और समझनेवाली बात है। शिवाजी महाराज ने सबको समान अधिकार दिया। सबको समान समझकर एक अच्छे राज्य की स्थापना करने का संकल्प किया।

ऐसी ही कर्मधारा समतावादी विचारक महात्मा जोतीराव फुले जीवन और कार्यों में भी दिखती देती है। महात्मा जोतीराव फुले के कार्यापर समाजवादी विचारों के साथ कई संत महात्माओं का भी प्रभाव था। तत्कालीन समाज में फुले की उपेक्षा हुई लेकिन उन्होंने समाज की दिशा को बदलने का निरंतर प्रयास किया और 'सत्यशोधक' बने। इसलिए उन्होंने सारा जीवन सत्यशोधक समाज के लिए व्यतीत किया। साथ ही महिलाओं के आधी आबादी होने पर भी शिक्षा से वंचित रहें तो समाज कैसे सम्पूर्ण रूप से जागरूक हो सकेगा। उनका विश्वास था मनुष्यत्व को पाने के लिए शिक्षा की जरूरत है तथा शिक्षा का प्रावधान करने के लिए उन्होंने महिलाओं तथा अस्पृश्यों के लिए पाठशालाएं खोलीं। देश में शिक्षा से कोई वंचित न हो, महिलाएँ विकसित हों, इसके लिए सारा जीवन प्रयास किया।

इससे बाद डॉ. भीमराव आंबेडकर के पहले आरक्षण का प्रावधान अगर किसीने किया था तो वह थे राजर्षि छत्रपति शाहूजी महाराज (कोल्हापुर) जिन्होंने गरीब और अधिकार–वंचितों को आरक्षण का प्रावधान दिया। यह दूरदृष्टि सभी लोगों को नहीं समझती क्योंकि उन्हें उस प्रकार के संस्कार नहीं मिले। डॉ. बाबासाहेब का मानना था कि मानवतावादी–समतावादी विचार समाज में नहीं फैलाये गये हैं इसलिए बहुत बड़ा अंतर दिखाई देता है। महामानव के यह विचार हैं Hierarchy System जो हम कहते हैं, ऊँचे स्तर के हैं इसलिए यह अधिकार हमें मिला है। लेकिन अब उन पर अधिकार जताने की मानसिकता से नही लोग छूट नहीं पाये है। ऐसे लोगों की मानसिकता को परिवर्तित करने के लिये ऐसे महामानव तथा महापुरुषों के जयंती के अवसर का लाभ उठाना चाहिए। आप सभी इन जयंती के कार्यक्रमों से लोकहित सीखें।

आधुनिक भारत को हम देखते है तो बाबासाहाब के लिखे हुये ग्रंथ "The Problem of Rupee" के आधारपर 'रिज़र्व बैंक ऑफ़ इण्डिया' की स्थापना हुई। अभी भी उनका कार्य चल रहा है आज देश की मौद्रिक व्यवस्था का संचालन का भार उसी प्रमुख संस्था पर है। बाबासाहब को दूरदृष्टि ऐसी थी कि उन्होंने पानी का व्यवस्थापन तथा बाँध परियोजना की संकल्पना रखी थी। यदि उस समय नदियों को जोड़ने का कार्य किया गया होता तो आज भारत में बाढ़ की समस्या दूर हो गयी होती। बंजर जमीन उपजाऊ हो गयी होती इतनी आगे की सोच देश के विकास के लिये फायदेमंद हो सकता था। साथ में, खेती होती और हरितक्रांति भी होती और भारत तीव्रगति से विकसित हो सकता था। बाबासाहाब के बहोत से प्रावधान थे परंतु उन्हें पूरी इमानदारी से लागू नहीं किया गया।

बाबासाहाब का मानना था कि सभी मनुष्य एक समान है तथा सभी का विकास हो। उन्होंने कहना था कि मैं सारा भारत बौद्धमय करूँगा लेकिन उनका मकसद था उनसभी का मानसिक परिवर्तन हो जो किसी का शोषण करने की मानसिक प्रवृत्ति से ग्रसित हैं। उन्होंने आजीवन प्रयत्न किया कि मैत्रीपूर्ण जीवन जीने का अवसर सभी को मिले। उन्होंने संविधान में आरंभ में लिखा "We the people of India..." अर्थात् हम भारत के लोग... उनको मैं यह अधिकार दे रहा हूँ कि हम यह संविधान खुद को समर्पित कर रहे हैं। "हम भारत के लोग..." उसका मतलब यह कि मैं अकेला नहीं हूँ 'हम' मतलब 'हम सभी' और यहीं पर समानता बीज दिखाई देती है। मानवकल्याण का सूत्र है जो हमें संविधान की प्रस्तावना में दिखाई देता है। बाबासाहब के जीवन से यह सीख मिलती है कि उनका जीवन साधारण नहीं था। हमें आज के संदर्भ में विचार करना है कि समानता के साथ हमारा व्यवहार कैसा हो? इस बात के लिए उन्होंने अपना जीवन निःस्वार्थ भावसे मानवता को समर्पित कर दिया।

जय भीम ! जय भारत !

व्यापार की भाषा बने हिंदी

विश्व हिंदी दिवस – व्यापार की भाषा बने गहराई के साथ हो विस्तार

एक सिंघाड़ा बेचनेवाला आवाज लगाता है ''तालाब का मेवा लेलो'' तो उसके उत्पाद और उसे प्रायोजित करनेवाली भाषा दोनों ही विस्मयकारी हो जाती है। इसलिए व्यापार में भाषा का बड़ा महत्व है। इस संकलित लेख में हिंदी को व्यापार की भाषा के रूप में स्थापित करने की चर्चा की गई है।

राहुल राज
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी

आज विश्व में भारत की ज्यों–ज्यों प्रभुता बढ़ रही है, साथ–साथ हिंदी भी विश्व में अपने महत्त्व को रेखांकित कर रही। भारत विभिन्न संस्कृतियों के साथ विभिन्न बोलियों एवं भाषाओं को अपने में समेटे हुए है। इन तमाम भाषाओं में से हिंदी को संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया और आज हिंदी पूरे विश्व में अपनी लोकप्रियता को प्राप्त हो रही है। यह उल्लेखनीय तथ्य है कि हिंदी को समृद्ध करने में करने में देश के विद्वानों के साथ–साथ कई विदेशी एवं प्रवासी भारतीयों की अहम भूमिका रही है। विदेशी विद्वानों का हिंदी के प्रति अनुराग का एक लंबा इतिहास है। जैसे कि ब्रिटेन के जॉन गिल क्राइस्ट, थॉमस इएर ब्रटेन, फेडरिक पिंकाट, जॉर्ज अब्राहम पिपर्सन, जॉन फर्गुसन, डॉ. मैक्लौगर, फ्रांस गे गार्सा द तासी, अमेरिका के सैमुअल हेनरी केलाग, प्रो. एनस्ट पेंडर, सारा कोहिम, इटली के एल. पी. तेस्सीतोरी, जर्मनी से डॉ. इस फोर्नेल, पोलैंड से प्रो. ब्रिस्की, रूस से डॉ. चेर्निशाव वाराजिकोव जापान से डॉ. तोमियो मिजोकामि आदि। इसी प्रकार दूसरी ओर ये भारतवंशी लोग है जो गिरमिटिया मजदूर के रूप में लगभग 175 वर्ष पूर्व मॉरीशस, फीजी, त्रिनिदाद, गयाना और सूरीनाम पहुंचे थे। ये लोग बहुत विद्वान तो नहीं थे लेकिन अपने अपने साथ रामायण, हनुमान चालीसा की पोथियां व आल्हा आदि ले गए थे और अपनी पीढ़ियों के पास विरासत के रूप में संरक्षित भी करते रहे। लिहाजा आज इन देशों में हिंदी व भारतीय लोक ... तुलनात्मक रुप से जो लोग आजादी के बाद धन क... चेष्टा विदेशों से बसे है। उनसे अधिक समृद्ध है... सिद्धांतों में फीजी के राष्ट्र कवि पंडित कमला प्रसाद ... विवेकानंद शर्मा, डॉ. सुब्रमनी, मॉरीशस के राष्ट्रकवि ... भगत मधुगर, सोमदत्त बखोरी, मुनीश्वर लाल चिं... अभिमन्यु अनंत, अजामिल माताबदल, रामदेव ... धनराज शंभु आदि प्रमुख हस्ताक्षर है।

विश्व में हिंदी को स्थापित करने के ... भारतवासियों की भी अहम भूमिका है। ये गिरमिटिया ... जिन–जिन देशो में ले जाए गए, वहाँ पर भी एक ... संकट था। ये लोग अधिसंख्य रुप से भोजपुरी, अवधी ... थे लिहाजा इन मजदूरों की संबंध भाषा अवधी व भोज... स्थापित हुई। जिसके कारण वहाँ पर अन्य भाष... भोजपुरी य अवधी बोली मे मिश्रित होने लगी। इससे ए... भाषा व हिंदी का निर्माण हुआ जो कि भारत की हि... भिन्न थी। जैसे की सूरीनाम के लोग सरनामी हिंदी क... फीजी के लोग फीजीबात या फीजीहिंदी कहते है। ... आफ्रिका की हिंदी को नेताली कहते है। मॉरीशस ... भारत के निकट था इसलिए यहां पर अवधी / भोजपु... खड़ी बोली का अंतर आज तक विद्यमान है। भारत... के हिंदी प्रेम के विषय में ध्यान रहे कि ये लोग हिंदी ... के साथ भी जोडकर देखते है। इनकी पीढ़ियां आज भी ...

के संदर्भ में उस काल में जीती है जब उनके पूर्वज यहीं से बंधुआँ मजदूरों के रूप में ले जाए गए थे। इसका स्पष्ट उदाहरण मैंने प्रवासी भारतीय दिवस के आयोजनों में देखा है। जब पत्रकारों ने कुछ एनआरआई बच्चों से पूछा कि आप भारत में कहाँ घूमना पसंद करेंगे तो उन्होंने अपने परिचितों, रिश्तेदारों और डिस्कोथेक व पार्टियों में जाने की बात कही। ठीक इसके विपरीत जब पत्रकारों ने भारतवंशी मूल के युवा बच्चों से यही प्रश्न किया तो उन्होंने हरिद्वार, बनारस सहित अनेक धार्मिक स्थानों का वर्णन किया। इस मानसिकता का प्रभाव भारत से बाहर लिखे जा रहे साहित्य पर भी स्पष्ट झलकता है।

हिंदी को अंतरराष्ट्रीय रूप में स्थापित करने में बॉलीवुड का महत्वपूर्ण योगदान है। इसके साथ ही भारतीय राजनय का अंग भी है। इसी कारण विदेश में हिंदी के प्रचार–प्रसार का कार्य विदेश मंत्रालय के अंतर्गत दिया गया। है। विदेश में हिंदी शिक्षण के लि विदेश मंत्रालय का अंग भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्राप्त जानकारी के अनुसार कैम्ब्रिज में हिंदी 150 वर्षों से चल रही है और पूर्वी यूरोप के कई देशों में लगभग 200 से अधिक वर्षों से हिंदी अध्ययन–अध्यापन का कार्य हो रहा है। उदाहरण स्वरूप हंगरी के ओतदोष लोगंद विश्वविद्यालय में भारतीय अध्ययन विभाग की स्थापना सन 1873 में हुई थी। जहाँ पर लगभग पिछले 50 वर्षों से हिंदी पठन–पाठन का कार्य चल रहा है और आज विश्व के लगभग 600 से अधिक स्थानों पर हिंदी शिक्षण का कार्य हो रहा है। श्रीलंका स्थित दूतावास के सहयोग से चलाई जा रही हिंदी की कक्षाओं में 250 सभे अधिक छात्र सदैव प्रवेश लेते हैं।

वर्तमान में हिंदी के समक्ष संकट को भी नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। कई स्थानों पर लंबे समय से हिंदी की जहाँ पढ़ाई हो रही थी वहाँ पर छात्रों की संख्या कमी आई है। इसका मूल कारण हिंदी के साथ रोजगार का न जुड़े होना है, यही संकट भारत में भी है। गिरमिटिया देशों में हिंदी को लेकर नई पीढ़ी केवल बॉलीवुड तक अपने को हिंदी उनके लिए धर्म की भाषा तो है किंतु रोजगार की नहीं कुछ छात्र अनुवादक की नौकरी पर पा भी जाते है। ये रामायण व हनुमान चालिसा को रोमन लिपि में बांच कर काम चला लेते है। पूजा भी अंग्रेजी में हो जाती है।

हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए की विश्व में आज जहां भी हिंदी है, यह उसकी लोक भाषाओं के बल पर ही जीवित है। चाहे वह भोजपुरी, अवधी, मैथिली, ब्रज आदि कोई भी भाषा हो, विश्व में खड़ी बोली का स्वरूप इन्हीं भाषाओं के आधार पर बनता है। हमें हिंदी के साथ साथ इन भाषाओं को संवर्धित करना होगा तभी हिंदी भी बच पाएगी अन्यथा त्रिनिदाद एवं गयना की भांति वहां की युवा पीढ़ी ज्यों–ज्यों अवधी/भोजपुरी से दूर हुई, वैसे ही हिंदी भी दुर्दशा को प्राप्त हो गई। हमें अपनी युवा पिढी और आनेवाली पिढीयों में हिंदी एवं लोकभाषाओं के प्रति जागृति लानी होगी तभी विश्व में हिंदी की पताका फहराएगी। भारत सरकार को चाहिए की विश्व में रचे जा रहे प्रवासी हिंदी साहित्य के विद्वानों को उनकी कृतियों के प्रकाशन में सहयोग दे, तभी हिंद से बाहर हिंदी गौरवान्वित होगी और हिंदी की यह चौतरफा क्या पूरे राष्ट्र को स्वाभिमान के पुष्पों से सुगंधित करेगी। अंत में यह कहना चाहूंगा कि विश्व में हिंदी का विस्तार गहराई लिए होना चाहिए ताकि केवल सतही स्वरूप से हिंदी की उपस्थिति न हो। यह बोलचाल और मनोरंजन के साथ–साथ विश्व में व्यापार की भाषा के रूप में भी स्थापित हो.

(लेख साभार संकलित : डॉ. राकेश पांडेय, संपादक – 'प्रवासी संसार')

"क्या आपको हिंदी आती है"

जब कोई ऊंचाई पर बैठकर बोलता है तो आवाज दूर तक जाती है। ओलम्पिक विजेता नीरज चोपड़ा ने जब प्रेस कॉन्फरन्स में पत्रकार से पूछ लिया ''क्या आपको हिंदी आती है?'' तो इस छोटे से प्रश्न से हिंदी को बहुत दूर तक प्रसार मिला और इसे सराहा भी गया। इस संकलित आलेख में इसी अनुभव को साझा किया गया है।

रजत श्रीवास
अवर श्रेणी लिपिक

आज सुबह ट्विटर पर जब एक ट्वीट पढ़ा कि 'अंग्रेजी मोह से ग्रसित चैनल के पत्रकार महोदय जब अपना सवाल ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता से अंग्रेजी में पूछते है तो इस पर नीरज चोपड़ा कहते है, सर हिंदी में प्रश्न पूछिए। यह खबर बहुत बड़ी है। क्योंकि यह देश के निवासियों के भाषाई आत्मबल को जगाता है। उनके भाषाई प्रेम को दर्शाता है। आज निरज चोपड़ा को कौन नही जानता है? ये खेल क्षेत्र के लिए आशा की नई किरण है। उनकी यह पहल बहुत बड़ा संदेश है। हालांकि आप सभी को यह बात अतिश्योक्ति से भरी लगेगी, पर मेरे जैसे हिंदी प्रेमी के लिए इस घटना ने इसी बहाने जाने–अनजाने महात्मा गांधी की याद दिला दी। 'जब आजादी के बाद बीबीसी पत्रकार उनसे अंग्रेजी में प्रश्न पूछता है तो ये कहते है जाओ जाकर दुनिया को कह दो गांधी को अंग्रेजी नहीं आती।

गांधीजी जैसा जिगरा सबका नहीं। फिर भी नीरज ने दुनिया को बहुत बड़ा संदेश दिया है। भाषा केवल संवाद या रोजगार का जरिया मात्र नहि बल्कि देश के आत्मबल का प्रतीक भी होता है। आज यदि देखें तो हर स्तर पर अंग्रेजी या हर बात में हिंदी के विकृत रूप 'हिंग्लिश' या प्रयोग या चलन ज्यादातर मामलों में हीनता बोध या अज्ञानता की उपज को ही माना जा सकता है। ऐसे लोगों के लिए हिंदी केवल यूज और थ्रो की भाषा बनी रही। गुलाम मानसिकता के कारण अंग्रेजी से उनकी पुरानी अदावत है। अंग्रेजी शासन की मानसिकता रही कि प्रत्येक देशी चीज को निकृष्ट माना, हां यह अलग बात है कि साथ में चोरी से देशी चीजों का दोहन भी करो। आजादी मिलने के बाद भी हमारी सोच लगभग वही रही। इसी सोच की उपज है–अंग्रेजीवादी मानसिकता। यह एक सोच है। जो हर जहर के रूप में हमारी परंपरा, भाषा, सोच, व्यवस्था सभी कुछ को बैसाखी आधारित बना रही है। यह समस्या अब ज्यादा विकराल हो रही है। क्योंकि जिस पीढ़ी ने आजादी की लड़ाई लड़ी, देखी महसूस किया यह ... हो रही है। बाकियों के लिए हिंदी या अन्य पक्ष बेकार ... में हमारी भाषा, परंपरा, विरासत के क्षय होने का ... भारतीय समाज के लिये समझना जरूरी है कि हम ... व्याकरण, शब्द, प्रयोग आदि के महत्व को समझे ... जातिवाद का विरोध जरूरी है और सबसे ज्यादा ... हिंदी हमारे घरो में सम्मान से रहे। उसे मूल हक ... मैनेजमेंट का हिस्सा न बनाया जाए। जो बनाए उसका ... बाकी तो जो हो रहा है, उसे सब देख ही रहे है। सब ... करती, कुछ जन दबाव भी जरूरी है। इस प्रकार ... सकते है कि नीरज ने कितना बड़ा कार्य किया है।

एक और बात कुछ लोगों के लिए पूर्वोत्तर ... मिजोरम की मुख्य भाषा अंग्रेजी है पर आज चैनल ... महिला हाकी टीम की खिलाडियों का उनके गौरवमयी ... साक्षात्कार लिया जा रहा थाय तो उसमें भी ... खिलाडियों की शानदार हिंदी को देखकर लगा ... सबकी भाषा है। सबको जोड़ने की भाषा है। ... व्यामोह से उपजी भाषा है। जहां यह आपको ... करती है और भारत में तो यह सांस्कृतिक आक्रमण ... जा रही है।

हम सब भी प्रत्येक स्तर पर अपनी ... क्योंकि पेट में गया जहर तो सिर्फ एक व्यक्ति को ... हीनता का कीड़ा करोड़ो भाषाई विकलांगो को ...

(साभार संकलित डॉ. साकेत ...
भाषा एवं संचार विशेषज्ञ के ...
'निरज चोपड़ा का हिंदी प्रेम' ...

जीना इसी का नाम है

इस धरती पर हर व्यक्ति के लिए जीवन की परिभाषा अलग-अलग है। लेकिन सबसे सार्थक यही है की जीओ और जीने दो। अमित लांजेवार की इस छोटी सी प्रसंगपूर्ण रचना में जीवन के पहलूओ पे चर्चा की गई है। इसे पढकर आप भी अपने जीवन की घटनाओं को टटोलिये क्योंकि जीवन अनुभवों का पिटारा होता है।

अमित लांजेवार
सहायक

ये पंक्तियों को हमारे उस वक्त के साथी या गुरु ने लिखी है जब हमारे खुद के अर्जन की शुरूआत का दौर था और हमारे मार्गदर्शक थे जो आज भी उनके किसी ना किसी रूप में मुझे मार्गदर्शक के तौर पर अपने साथियों या वरिष्ठ तथा अधिकारी में मिलते रहते है।

लोहे की एक छड़ का मूल्य होता है 250 रुपये।

इससे घोड़े की नाल बना दी जाये तो इसका मूल्य हो जाता है 1000 रुपये।

इससे सुईयां बना दी जायें तो इसका मूल्य हो जाता है 10,000 रूपये।

इससे घडियों के बैलेंस स्प्रिंग बना दिए जाये तो इसका मूल्य हो जाता है 1,00,000 रुपये....

"आपका अपना मूल्य.. इससे निर्धारित नहीं होता कि आप क्या है बल्कि इससे निर्धारित होता है कि आप मैं खुद को क्या बनाने की क्षमता है।" इतने छोटे बनिए की हर कोई आपके साथ बैठे... और इतने बड़े बनिए कि आप खड़े हो तो कोई बैठा न रहे.

कभी कभी आप अपनी जिंदगी से निराश हो जाते है, जबकि दुनिया में उसी समय कुछ लोग आपकी जैसी जिंदगी जीने का सपना देख रहे होते है।

घर पर खेत में खड़ा बच्चा आकाश में उड़ते हवाई जहाज को देखकर उड़ने का सपना देख रहा होता है, परंतु उसी समय उसी हवाई जहाज का पायलट खेत और बच्चे को देख कर लौटने का सपना देख रहा होता है।

यही जिंदगी है। जो तुम्हारे पास है उसका मजा लो। अगर धन दौलत रूपया पैसा ही खुशहाल होने का सीक्रेट होता, तो अमीर लोग नाचते दिखाई पडते, लेकिन सिर्फ गरीब बच्चे ऐसा करते दिखाई देते हैं। अगर पावर (शक्ति) मिलने से सुरक्षा आ जाती तो नेता अधिकारी बिना सिक्युरिटी के नजर आते। परन्तु जो सामान्य जीवन जीते हैं, ये चैन की नींद सोते है। अगर खुबसुरती और प्रसिद्धि मजबूत रिश्ते कायम कर सकती तो सेलीब्रिटीज् की शादियाँ सबसे सफल होती। जबकि इनके तलाक सबसे सफल होते है।

इसलिए दोस्तों, यह जिंदगी... सभी के लिए खुबसुरत है इसको जी भरकर जीये, इसका भरपूर लुत्फ उठाओ क्योंकि जिंदगी ना मिलेगी दोबारा... सामान्य जीवन जिये... विनम्रता से चलें... और ईमानदारीपूर्वक प्यार करें... स्वर्ग यही है...।

- अमित लांजेवार

हिन्दी भाषा বাংলা ಕನ್ನಡ संस्कृतम् اُردُو नेपाली

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आजादी का अमृत महोत्सव और नया भारत

आजादी की अमृत महोत्सव समग्र रूप से हर्ष और आयोजनों का अवसर तो है ही हमारे कर्तव्यबोध का भी समय है। इस आलेख में स्वतंत्रता के महत्व को रेखांकित करते हुए राष्ट्रीयता की भावना उजागर हुई है। यह अंक भी आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर भारतीय भाषाओं की हिस्सेदारी को लेकर तैयार किया गया है। प्रेरणादायी पंक्तियों से सृजित यह आलेख पठनीय बन गया है।

आशुतोष कुमार
आशुलिपिक

"भारत ने ली अंगड़ाई थी,
जब आजादी की ठानी थी।
आजादी के हुए सिर्फ साल पचहत्तर
पर ये सभ्यता बहुत पुरानी थी।

आज हर भारतीय के मन में उत्सव है क्योंकि हम "आजादी का अमृत महोत्सव" मना रहे है। इस आजादी के लिए हमने बहुत बड़ी कीमत चुकाई है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसे समाज में स्वतंत्रतापूर्वक जीने का अधिकार है। संसार में सभी प्राणी स्वतंत्र रहना चाहते है। यहाँ तक कि पिंजरे में बंद पक्षी भी स्वतंत्रता के लिए निरंतर अपने पंख फड़फड़ाता रहता है। उसे सोने का पिंजरा, सोने की कटोरी में रखा स्वादिष्ट भोजन भी अच्छा नहीं लगता। वह भी स्वतंत्र होकर मुक्त गगन में स्वच्छंद उड़ना चाहता है।

"हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध ना गा पाएंगे,
कनक–तिलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएंगे।

हम बहता जल पिनेवाले
मर जाएँगे भूखे–प्यासे,
कहीं भली है कटुक निबौरी।
कनक कटोरी की मैदा से।

स्वर्ण श्रृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे है
तरु की फुनगी पर के झूले।

ऐसे थे अरमान की उड़ते
नीले नभ की सीमा पाने,
लाल किरण–सी चोंच खोल
चुगते तारक–अनार के दाने।

होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा–होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी

नीड़ न दो, चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न–भिन्न मित्र कर डालो,
लेकिन पंख दिए है तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।'

शिवमंगल सिंह 'सुमन' जी की यह कविता इस भाव को बतलाती है, जो की पक्षी की अंतरात्मा की बात को लब पर लाने का काम करती है। फिर मनुष्य तो मनुष्य है उसे भी स्वतंत्रता प्रिय है। यह भी स्वतंत्रता / आत्मसम्मान के लिए संघर्ष करता हुआ प्राणों की बाजी लगा देता है।

"अपनी आजादी को हम हरगीज मीटा सकते नहीं, सर कटा सकते है लेकिन सर झुका सकते नहीं।" इस संदर्भ में महाकवी तुलसीदास जी की उक्ति है–"पराधीन सपनेहूँ सुख नहीं" इस उक्ति का अर्थ यह है कि पराधीन व्यक्ती कभी भी सुख को अनुभव नहीं कर सकता है। सुख पराधीन और परावलंबी लोगों के लिए नहीं बना है। पराधीनता एक तरह का अभिशाप है। इसके लिए कुछ लोग भाग्य को दोष देते है। लेकिन ऐसा नहीं है। ये अक्षम होते है और भगवान को दोष देते रहते है भगवान भी केवल उन्हीं का साथ देते है जो अपनी मदद खुद कर सकते है।

**"खुदी को कर बुलंद इतना के हर तकदीर से पहले
खुदा बन्दे से आ पुछे की बता तेरी रजा क्या है।"**

मेहनत हमें तीन बड़ी बुराइयों से छुटकारा दिलाती है–उबाऊपन, ऐय्याशी, और गरीबी। – अनाम

महान स्वतंत्रता सेनानी बाल गंगाधर तिलक जी ने कहा था, **"स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।"**

स्वतंत्रता के लिए संघर्ष :

15 अगस्त 1947 से पहले लगभग 200 वर्षों तक अंग्रेज सरकार ने हमारे ऊपर शासन किया। उसके पहले लगभग 230 वर्षों तक मुगलों ने हम पर राज किया और हमारी सोने की चिड़िया कही जाने वाली भारत माता द्वारा प्रदत्त संसाधनों का पूर्ण विदोहन किया। लेकिन धरि-धरि भारत के लोगों में राजनीतिक चेतना उत्पन्न होने लगी और भारतवासी स्वतंत्रता प्राप्ती के लिए संघर्ष करने लगे। भारतवासियों ने लंबे संघर्ष के पश्चात स्वतंत्रता प्राप्त की। सन 1857 में हमारा प्रथम स्वतंत्रता संग्राम जो कि देशव्यापी था, हुआ। अंग्रेजो ने इसे 'गदर' या 'विद्रोह' का नाम दिया। रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, नाना साहब, राव तुलाराम जैसे देशभक्तों ने अंग्रेजों को यहाँ से भगाने के लिए तलवार उठाई। इसमें देश के असंख्य वीरों ने खुलकर भाग लिया। परंतु देश के कुछ ऐसे भी गद्दार और अंग्रेजों के पिट्ठू जिन्होंने सिर्फ अपने फायदे के लिए अंग्रेजों को साथ दिया। इसलिए स्वतंत्रता का यह प्रथम प्रयास सफल नहीं हुआ।

इस आंदोलन के विफल होने का सबसे प्रमुख कारण एकता का आभाव था। इस आंदोलन में हालांकि लोग भाग ले रहे थे नेतृत्व किया जा रहा था लेकिन इन सब के बावजूद कुछ राजे-रजवाड़े अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को फलिभूत करने में लगे रहे जिस कारण आंदोलन में प्रचंड देशभक्ति का आभाव देखने को मिला फलस्वरूप अंग्रेजी सत्ता की जड़े जिनको जमिंदोज हो जाना था और मजबूती से हमारे ऊपर कश गया। काश् उस वक्त लोग एकजूट होकर प्रचंड देशभक्ती से आगे बढ़ते तो शायद जिस देश में सुर्य अस्त नहीं होता उस देश की भी विस्तारवादी साम्राज्यवाद का सुर्य भारत में अस्त हो जाता।

स्वतंत्रता की जो चिंगारी 1857 में सुलगी थी, उसे महात्मा गांधी, पं. नेहरू, तिलक, सरदार पटेल, नेताजी सुभाषचंद्र बोस आदि ने इसे आग का गोला बना दिया। भगतसिंह, राजगुरु, चंद्रशेखर ने उसे हवा दी। हम स्वतंत्र पाने के लिए संघर्ष करते रहे देशभक्तों ने जेल यात्राएं की गोलियाँ खाइ, अनेक वीरों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अनेक बार सत्याग्रह किया। दांडी यात्रा कर नमक कानून भंग किया। अंत में 1942 में गांधीजी की नेतृत्व में 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' का नारा लगाया। इस आंदोलन में बहुत से भारतीयों ने भाग लिया। परिणामस्वरूप 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। इस संदर्भ में रामधारी सिंह दिनकर जी भी कुछ पंक्तिया प्रस्तुत है –

'सदियों की ठंडी-बुझी राख सुगबुगा उठी,
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है
वो राष्ट्र, समय के रथ का घर-घर नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो की जनता आती है।'

आजादी का अर्थ उदंडता नहीं

भारत के लोग पराधीनता को अधिक समझते है क्योंकि उन्होंने ही पुराने समय से अंग्रेजों द्वारा पराधीनता, को सहन किया है। पराधीनता के महत्त्व को वो व्यक्ती केवल समझ सकता है जो कभी खुद पराधीन रहा हो। हमारा देश कई सालों से लगातार पराधीन होता आ रहा है। इसकी वजह से हम हमारी छवी जो कि व्यक्तिगत और सामाजिक रूप से पिछड़ती जा रही है। हम विदेशी संस्कृति और सभ्यता से बहुत ही बुरी तरह से प्रभावित है। आज हम स्वतंत्रता के मतलब को गलत समझ रहे है। आज हम स्वाधीनता के गलत अर्थ को स्वतंत्रता से लगाकर सबको अपनी उदण्डता का परिचय दे रहे है।

आजादी का अमृत महोत्सव :

आज जब हम आजादी की 75 वी वर्षगांठ मनाने के लिए "आजादी का अमृत महोत्सव" मना रहे हैं तो इस समय हम उन देश प्रेमियों को याद करते हैं जिन्होंने अपने सारे सुखों को ठोकर मारकर अंग्रेजो से केवल इसलिए लोहा लिया था ताकि दुसरे देशवासी एवं भारतीय सुखचैन और सम्मान के साथ जी सके। निश्चित रूप से उनके बलिदान रंग लाए। परंतु अब हमारा यह कर्तव्य बनता है कि हम देश को इतना सुरक्षित और मजबूत बनाएँ कि कभी कोई विदेशी इसकी ओर आँख उठाकर भी ना देख सके। केवल स्वतंत्रता दिवस में ही हमारा कर्तव्य पूरा नहीं हो जाता। हम सबको अपने अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए और देश के हित में विभिन्न समस्याओं का सामना करना चाहिए।

"आज नए भारत के समुद्र मंथन में, जन-जन की भागीदारी है।
आजादी के अमृत महोत्सव की बेला में आत्मनिर्भर भारत की तैयारी है।"

21 वीं सदी का भारत आत्मनिर्भरता की तरफ कदम बढ़ा रहा है। कोरोना काल में यह सारे विश्व के सामने प्रत्यक्ष सिद्ध भी हो गया है कि आत्मनिर्भर भारत मानवता को महामारी संकट से बाहर निकालने में, वैक्सीन निर्माण में एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है। जिसे न केवल अपनी अपितु विश्व के अनेक देशों की जनता की स्वास्थ्य रक्षा के लिए भरसक प्रयास किए तथा कोरोना वैक्सीन उपलब्ध कराई।

हमें 'आत्मनिर्भर भारत, शक्तिशाली भारत, स्वावलंबी भारत' के सपने को सच करते हुए अपनी कर्तव्यपरायण भावना का परिचय राष्ट्र के प्रति समर्पित होकर करना चाहिए ताकि हम इतने शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभर सके जिससे भविष्य में कोई भी विध्वंसकारी शक्तियाँ भारत की ओर आँख उठाकर भी न देख सके। हमारे पूर्वजों ने हमें जो आजादी दी है उसे सुरक्षित रखना हमारी जिम्मेदारी है और देश को निरंतर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर रखना है।

कहावतें, लोकोक्ति और मुहावरों का सफर

बचपन में सुना गया था **'छोटा मुँह बड़ी बात'** तब भले ही यह चीज समझ में न आई थी पर आज पता चलता है कि भाषा में आचार, मुरब्बा और चटणी की तरह कहावतें, लोकोक्ति और मुहावरे ही होते हैं। वरिष्ठ अधिकारी और साहित्यकार सुभाषचंद गुप्ता जी का विषद ज्ञान हमें इस आलेख में पढने को मिलेगा।

एस. सी. गुप्ता*
पूर्व उप निदेशक

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, समाज में रहकर ही उसका सामाजीकरण होता है, व्यक्ति सामाजीकरण की प्रक्रिया में परिवार संयुक्त परिवार, रिश्ते–नातों के संसार–समूह, समुदाय और समाज में गुजरता है। सामाजीकरण की प्रक्रिया में व्यक्ति समाज के रीति–रिवाज, सभ्यता और संस्कृति, भाषा की अभिव्यक्ति से समाज से यह जुड़ता है, समाज की सभी भाषाओं की अभिव्यक्ति उसमें समाहित होती रहती है। हिन्दी हमारी राजभाषा और लोकभाषा दोनों ही है। व्यक्ति का साक्षात्कार इस राजभाषा और लोकभाषा से होता रहता है। भाषा में जहाँ व्याकरण, भाषा व्यंजना और अलंकार आदि का महत्त्वपूर्ण स्थान है, ठीक उसी तरह लोकोक्ति कहावते और मुहावरों का स्थान है। हमारे समाज में सभ्य समाज की आधुनिकता, प्रादेशिक समाज की क्षेत्रीयता और आंचलिक समाज की आंचलिकता देखने को मिलती है। कहावतें, लोकोक्ति और मुहावरें इन्हीं क्षेत्रीय समाज के धरातल में रचे बसी है। उदाहरण के रूप में कहावत–(महंगाई के संदर्भ में) भूल गये राग रंग, भूल गये ददकड़ी, तीन चीज याद रही, नून तेल लकड़ी। लोकोक्ति – (कार्य की अपूर्णता के संदर्भ में) ना नौ मन तेल होगा, ना राधा नाचेगी। मुहावरा–गुणी के विपरीत होना) आँख के अन्धे काम नैनसुख।

भारतीय लोक समाज यानी क्षेत्रीय समाज और आंचलिक समाज में लोग उत्सव, मेला दशहरा, खेलों के टूर्नामिन्ट और समारंभ प्रोग्रामोंकी व्यवस्था है।

प्रतिगामी और कलाकार लोग अपनी कला का प्रदर्शन करते है, इसमें लोकोक्ति, कहावतों और मुहावरों का प्रयोग होता है। जनता अपने मालिकों, प्रशासकों और शासकों के प्रति अपना विरोध प्रचलित लोकोक्ति, कहावतों, उपालंभो और मुहावरों द्वारा करती है। विकास की अवधारणा निरन्तरता का पर्याय है। इस निरन्तरता के सफर में हमने जाने कहाँ ? क्या–क्या खो दिया है इसका कोई विधिवत रिकार्ड नहीं है। कहावतें, मुहावरे और लोकोक्ति भी इसका शिकार बन रहे हैं, इनका हमारे सामाजिक जीवन में बहुत महत्त्व है। इसका बहुत कारण अंग्रेजी का दबदबा, भाषा, व्याकरण, व्यंजना का न होना और मुहावरों से हमारी भाषा समरस और सत्ताहारी बनी रहती है।

'भैंस के आगे बीन बजाना' इस मुहावरे का अर्थ है – मूर्ख व्यक्ति को ज्ञान की बात समझाना अंग्रेजी में कह सकते हैं – **'Cast pearls before swine'**. एक प्रसंग ऐसा है कि एक युवक राकेश अपने गाँव में अकेला पढा लिखा और होनहार व्यक्ति था, जब वह अपनी पढाई पूरी करके शहर से गाँव लौटा तो उसने फैसला किया कि वह गाँव में सब लोगों को शिक्षित करेगा। इस कार्य गाँव के लोगोने उसका भरपूर साथ दिया। यह गाँव के बच्चों को ही नहीं, वयस्कों, बड़े बुर्जुगों को भी शिक्षा के लिए प्रेरित करने लगा। धीरे–धीरे पूरे गाँव में उसकी चर्चा होने लगी। हर आदमी राकेश की तारीफ करने लगा, उससे सलाह लेने जाता था राकेश को कम्प्यूटर का पूरा नाम था, वह नई टेक्नोलॉजी की हर बात जानता था। इसलिए नई टैक्नोलॉजी से कोई भी बात होती तो गाँव के छोटे बडे सब लोग उससे सलाह लेने जाते थे। लेकिन गाँव में कुछ लोग ऐसे भी थे, जिसका शिक्षा से कोई सम्बन्ध नहीं था, उल्टा वे राकेश को बुरा भला कहते रहते थे। बदलाव व परिवर्तन को अच्छा नहीं समझते थे। जब वह कोई सलाह देता तो उसमें कोई कमी दर्शाकर गाँव के लोगों को भड़काने का काम करते थे। राकेश उनकी इस बात से परेशान रहता था, क्योंकि वे कई बार ये बने बनायें काम को भी बिगाड़

शेष अगले पृष्ठ पर

आमंत्रण

मिथलेश पाठक
प्रवर श्रेणी लिपिक

पत्रिका के माध्यम से युवा कर्मचारियों की अभिव्यक्ति को एक अच्छा मंच प्राप्त होता है। नगर राज भाषा कार्यान्वयन समिति की प्रतियोगिताओं में विजेता रह चुके मिथलेश पाठक की कलम में भी कुछ बात ही खास है। युवा रचनाकार की एक कविता यहां प्रस्तुत है। आशा है आप पसंद करेंगे ।

कैसी विवश ये क्रांति है,
ये मोहिनी, ये भ्रांति है ।
तूणीर शब्द–बाण का
या धूर्तता की शांति है ।

ये मार्ग है कठिन बड़ा,
के पग भी हार मान ले,
तू मान ले, ये जान ले,
जो चल सके, वही बचा ।

जुटा ले सारे शस्त्र तू,
शास्त्रों की ढाल कर,
जो लड़ सके वो वीर बन,
विजय की आग थाम ले ।

मचल मगर, संभल जरा,
तड़प को तू दिशा दिखा,
युद्ध शंख फूँक दे,
प्रचंड रूप जा दिखा ।

असंख्य लक्ष्य भेदते,
ये छल–कपट के रास्ते,
मूक, मूढ़ हैं जुटे,
रौंदने को रास्ते ।

है विचार दृढ़ अगर,
इस अग्निपथ में साथ चल,
ले शपथ, संकल्प कर,
तू एकता के वास्ते ।

जो सत्य का पथिक रहे,
विजय मिले उसे सदा,
बदल दे अंधकार को,
प्रकाशमान जग बना ।

शेषांश पृष्ठ 48

देते थे। एक दिन राकेश ने यह निश्चय किया कि वह उन लोगों के पास जाएगा और उन्हें समझाने का प्रयास करेगा कि शिक्षा हर किसी के लिए कितनी आवश्यक है।

बहुत समझाने के बाद जब उन पर कोई असर नहीं हुआ, तो राकेश निराश हो गया । जब गाँव के मुखिया ने राकेश को उदास देखा तो उसका कारण पूछा। राकेश से पूरी बात जानने के बाद मुखिया ने कहा, "भैंस के आगे बीन बजाने से कोई फायदा नहीं होता ? तुम अपना काम करते रहो, जो समझदार होंगे वे तुम्हारी बात अवश्य समझेंगे।"

*सुभाषचंद्र गुप्ता, पूर्व उपनिदेशक,
क्षेत्रीय कार्यालय, क.रा.बी.निगम, इंदौर

आओ कम्प्यूटर सीखें

धरित्री बोदेले

आज पूरे विश्व में सूचना प्रद्योगिकी चरम पर है। भारत के आय.टी. पेशेवर दुनियाभर में छाये हुए है। भारत सरकार भी ई. ऑफीस के माध्यम से सरकारी तंत्र को संचालित करने जा रही है। ऐसे में कम्प्यूटर का सामान्य ज्ञान होना आवश्यक है। आईये थोडा खुदको जाचा जाए?

1. निम्नलिखित में से कौन सा स्प्रेडशीट कार्यक्रम (spredsheet programm) है ?

A) एम एस वर्ड   B) एम एस पावरपॉईन्ट

C) एम एस एक्सेल   D) एम. एम एक्सेस

उत्तर – एम.एस. एक्सेल

2. एम एस–एक्सेल का उपयोग यह बनाने के लिए किया जाता है।

A) प्रेसेनटेशन   B) डाकुमेंट (दस्तावेज)

C) मेल भेजने के लिए   D) स्प्रेडशीट्स

उत्तर – स्प्रेडशीट्स

3. एम एस–पावरपॉईन्ट यह .... भाषा है।

A) डाकुमेंट   B) स्प्रेडशीट

C) प्रेजेनटेशन   D) प्रोग्रामेंटीक

उत्तर – प्रेजेनटेशन

4. दस्तावेज का प्रारूप बदलने के लिए निम्न में से कौनसा मेन्यू विकल्प चुनेंगे।

A) एडिट   B) व्यू   C) टुल्स   D) फॉरमेंट

उत्तर – फॉरमेंट

5. निम्नलिखत में से कौन सा वर्ड शब्द फाइलों का सही एक्सटेंशन है ?

अ) एक्स एस एल   ब) डॉक   क) पिपिटि   ड) डि सि डबलू

उत्तर – डॉक

6. रो और कॉलम का संयोजन .... कहलाता है।
7. नई वर्ड फाइल तैयार करने का शॉर्टकट क्या है ?
8. लैंडस्केप क्या है ?
9. एम एस वर्ड में F7 'फंक्शनल की' का उपयोग किया जाता है।
10. एक कार्यपुस्तिका (Worksheet) में कितने कार्यपत्रक (Workbook) होते है।
11. शॉर्टकट कुंजी (Key) 'Ctrl + P' का उपयोग किया जाता है ?
12. लाईन ब्रेक के लिए शॉर्टकट की कुंजी क्या है ?
13. एस्केप कुंजी का उपयोग पावर पॉईंट में किया जाता है ?
14. क्लिपआर्ट का विकल्प .... मेनू में उपलब्ध है।
15. एम एस वर्ड में दोहराया शब्द के लिए क्या प्रतिक्रिया है ?
16. एम.एस. वर्ड में 'ऑल कॅप्स फीचर का क्या उपयोग है ?
17. इनमें से कौन सा मार्जीन का टाईप नहीं है ?
18. 'Ctrl + J' का क्या उपयोग है ?
19. केंद्र को आवंटीत करने के लिए कौनसा शॉर्टकट का उपयोग किया जाएगा ?
20. टेक्स इटेलिक बनाने के लिए हम किस शॉर्टकट का उपयोग करेंगे ?
21. 'Ctrl + D' यह शॉर्टकट का उपयोग क्या है ?
22. Find से क्या खोज करते है?
23. कौन से पृष्ठ पर 'हेडर' या 'फूटर' डिफॉल्ट रूप से मुद्रित किया जाता है ?
24. इनमें से कौन सा टूलबार फॉन्ट और उसके आकार को बदलने देता है ?
25. वर्तनी जांच के लिए आप कौनसी फंक्शन (प्रकार्य) कुंजी दबाते है ?
26. शब्द दस्तावेज (वर्ड डाकुमेंट) में ध्वनि की फाईल कैसे डाली जाती है ?
27. शब्द दस्तावेज में कितने अधिकतम कॉलम को संख्या संमेलित की जा सकती है।
28. स्वरूपण टूलबार में सबसे छोटा और विशालतम फोन्ट कौन सा है ?
29. सामान्य टेम्पलेट पर आधारित नए शब्द दस्तावेज का डिफाल्ट फॉन्ट आकार क्या है ?
30. किसी डॉक्यूमेंट को रिफ्रेश करने के लिए फौन सी फंक्शन की का इस्तेमाल किया जाता है ?

- धरित्री बोदेले

बलिदान का यशगान है अमृत महोत्सव

एसिक कॉलोनी समिति, नागपुर द्वारा आज़ादी के अमृत महोत्सव के दौरान स्वतंत्रता दिवस के साथ–साथ विविध आयोजन किए गए। समिति के अध्यक्ष द्वारा ध्वजारोहण के पश्चात कॉलोनीवासियों के लिए रोचक प्रतियोगिताएं आयोजित हुईं। चित्रकला, खेलकूद और रूप–सज्जा की प्रतियोगिताओं में, बच्चों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया जिसमें मोहित कुलमते, लक्षराज, अक्ष उमरेडकर, अक्षत गढ़ेवाल, स्वलीन पाटील एवं अभिनव प्रकाश इत्यादि विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी रहे।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में, पी.डब्ल्यू.एस. आर्टस् एवं कॉमर्स कॉलेज, नागपुर में इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष व एसोशिएट प्रोफेसर डॉ. चंद्रशेखर संपतराव पाटील उपस्थित रहे। आज़ादी के अमृत महोत्सव की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता कठिन संघर्षों से प्राप्त हुई है, अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले अनेकों गुमनाम योद्धा हैं जिनका कोई रिकॉर्ड नहीं मिल पाता परन्तु वर्तमान में जो हमारे बीच बचे हैं ऐसे स्वतंत्रता–संग्राम सेनानियों या उनके परिवारवालों को सम्मानित कर, हम कृतज्ञता व्यक्त कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि वर्तमान वैश्विक परिदृश्य को देखते हुए हमें अपने राष्ट्र को मजबूत करने के लिए हर संभव प्रयास करने चाहिए और इसके लिए हमारा संविधान सबसे बड़ा मार्गदर्शक है जो हमें हमारे पूर्वजों से विरासत में मिला है इसलिए बलिदानों का यशगान है अमृत महोत्सव। डॉ. पाटील ने एसिक कॉलोनी के सचिव श्री नितिन पाटील के प्रयासों की सराहना की और उन्हें अखिल भारतीय एस.सी./एस.टी. ईएसआईसी कर्मचारी संघ के सचिव(जनसंपर्क) मनोनीत किए जाने पर बधाई दी।

समिति के उपाध्यक्ष डॉ. जय प्रकाश ने मुख्य अतिथि का आभार माना और कहा कि आज़ादी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर एक नागरिक के रूप में हमारी जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। देश को श्रेष्ठ और सशक्त बनाने के लिए हमें एक अच्छे उद्योजक, चिकित्सक, इंजीनियर से पहले अच्छा नागरिक बनने की जरूरत है। आज़ादी के बाद अब देश में पर्यावरण, पेयजल, सुरक्षा, शिक्षा और रोजगार जैसी नई चुनौतियाँ खड़ी हो रही हैं। अपनी योग्यता को पहचानकर उसे हम राष्ट्रनिर्माण के लिए अर्पित कर सकते हैं।

कार्यक्रम का संचालन श्री नितिन पाटील ने किया तथा कॉलोनी के केयरटेकर श्री प्रशांत इंगळे ने सभी को धन्यवाद दिया। इस अवसर पर राहुल राज, धीरेन्द्र कुलमते, प्रवीण गढ़ेवाल, श्रीकान्त कुटे, अश्विन उमरेडकर, रजनी कुमारी शर्मा, खुशबू राज, रूपाली, शालू बुरडे, दीपिका, रक्षा उमरेडकर सहित कॉलोनी के निवासी सदस्यगण उपस्थित रहे।

– अमित लांजेवार*

*नितिन पाटील, सचिव एसिक कॉलोनी समिति, ईएसआयसी, गणेशपेठ, नागपुर.

काम पर एक बुरा दिन नरक में एक अच्छे दिन की तुलना में बेहतर है। – स्कॉट जॉनसन

पुरस्कार ग्रहण करते हुए डॉ. सुरेश वर्धे
(चित्र में बायीं ओर)

डॉ. सुरेश वर्धे

विदर्भ साहित्य संघ द्वारा सम्मानित

उप क्षेत्रीय कार्यालय – नागपुर में कार्यरत **श्रीमती कृपा एस. वर्धे**, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी के पति **डॉ. सुरेश वर्धे** मराठी साहित्य के प्रोफेसर है। मराठी साहित्य का आपका गहन अध्ययन है। दिनाँक 14 जनवरी, 2022 को विदर्भ साहित्य संघ, नागपुर ने 1 अगस्त, 2020 से 31 जुलाई, 2021 के दौरान प्रकाशित पुस्तकों को पुरस्कृत करने के क्रम में आपकी समीक्षात्मक कृति को पुरस्कृत करते हुए **कुसुमानिल स्मृति समीक्षा पुरस्कार** से सम्मानित किया। आपकी इस उपलब्धि पर निगम परिवार आपका अभिनंदन करता है।

अब तुम्हारे हवाले निगम साथियों

**निगम-परिवार, सेवानिवृत्ति के पश्चात्
आपके सुखी और आनंदपूर्ण जीवन संध्या की
कामना करता है।**

श्री सुधाकर एस. टेकाडे
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी

परिचय	श्री टेकाडे ने दिनांक 01.02.1988 को अवर श्रेणी लिपिक के पद पर निगम की सेवा आरंभ की थी। उनका व्यवहार मैत्रीपूर्ण और सहकारी रहा है। अपने सेवाकाल में उन्होंने कार्यालय से जुड़ी हर गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लिया।
कार्यक्षेत्र	निगम के विभिन्न स्तर के कार्य-स्थलों पर अपनी सेवा देते हुए, आपने उप क्षेत्रीय कार्यालय-नागपुर, उप क्षेत्रीय कार्यालय-मरोल, शाखा कार्यालय-पुलगाँव, शाखा कार्यालय-हिंगणघाट, शाखा कार्यालय-मॉडल मिल इत्यादि में अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं दीं।
कार्यानुभव	आपको सामान्य अनुभाग, व्याप्ति एवं निरीक्षण अनुभाग, बीमा अनुभाग, वित्त एवं लेखा अनुभाग, विधि अनुभाग इत्यादि की कार्यप्रणालियों का व्यापक ज्ञान था।
अन्य कार्य	आपने उप क्षेत्रीय कार्यालय-नागपुर के एसिक कर्मचारी संघ के सदस्य तथा एसिक मनोविनोद कक्ष के सचिव के रूप में भी अपना योगदान दिया है।
क्रीडा	एक फुटबॉल खिलाड़ी के रूप में, आपने हैदराबाद, मैसूर, चेन्नै, विजयवाड़ा में आयोजित क्षेत्रीय खेलकूद स्पर्धाओं में भाग लिया।
सेवानिवृत्त	आप दिनांक 30.04.2021 को सामाजिक सुरक्षा अधिकारी के पद से अधिवर्षिता पर सेवानिवृत्त हुए।

श्री ओमप्रकाश एम. जोशी
सहायक

परिचय	श्री जोशी ने दिनांक 15.06.1988 को अवर श्रेणी लिपिक के पद पर निगम की सेवा आरंभ की थी। आपका व्यक्तित्व गंभीर एवं कार्यशैली चिंतनपूर्ण रही है।
कार्यक्षेत्र	आपका सेवाकाल उप क्षेत्रीय कार्यालय-औरंगाबाद, शाखा कार्यालय-नांदेड़, पुलगांव, शाखा कार्यालय-हिंगणघाट, बगड़गंज उप क्षेत्रीय कार्यालय-नागपुर, चिकित्सा निर्देशी कार्यालय, शाखा कार्यालय-बुटीबोरी इत्यादि स्थानों पर सेवा देते हुए व्यतीत हुआ।
कार्यानुभव	आप स्थापना अनुभाग, वसूली अनुभाग, व्याप्ति एवं निरीक्षण अनुभाग, बीमा, वसूली, सामान्य अनुभाग अनुभाग की कार्यप्रणाली में कार्यरत थे।
अन्य कार्य	कार्यालयीन कामकाज के अतिरिक्त आपकी प्रतिभा का लाभ एसिक मनोविनोद कक्ष को कोषाध्यक्ष के रूप में मिला। आप राजभाषा के प्रति लगाव रखते थे और केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद के सक्रिय प्रतिनिधि रहे।
क्रीडा	आपने वॉलीबॉल खिलाड़ी के रूप में हैदराबाद, चेन्नै आयोजित क्षेत्रीय खेलकूद स्पर्धाओं में भाग लिया।
सेवानिवृत्त	दिनांक 31.07.2021 को सहायक के पद से अधिवर्षिता पर उप क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर सेवानिवृत्त हुए।

श्री अनंता एन. जोशी
सहायक

परिचय	श्री जोशी ने दिनांक 08.02.1985 को अवर श्रेणी लिपिक के पद पर निगम की सेवा आरंभ की थी। आप सीमित स्वभाव के गंभीर व्यक्तित्व के हैं। कार्य के अतिरिक्त आप शतरंज के खेल में विशेष रुचि रखते थे।
कार्यक्षेत्र	आपने उप क्षेत्रीय कार्यालय–औरंगाबाद, उप क्षेत्रीय कार्यालय–नागपुर उप क्षेत्रीय कार्यालय–अकोला शाखा कार्यालय–हिंगणघाट, चंद्रपुर, अकोला, हिंगणारोड में अपनी सेवाएं दी।
कार्यानुभव	आपने बीमा अनुभाग, रोकड़, वसूली, वित्त एवं लेखा, विधिर्भ कुशलतापूर्वक कार्य–निर्वहन किया। सहकर्मी आपको बीमा अनुभाग का ज्ञाता माना करते थे।
अन्य कार्य	आप एसिक मनोविनोद के संयुक्त सचिव चुने गए थे और लगातार 10 वर्ष तक एसिक कर्मचारी संघ, के कोषाध्यक्ष भी रहे।
क्रीड़ा	आपकी ख्याति नागपुर में शतरंज के बेहतर खिलाड़ियों के बीच है। आपने शतरंज–खिलाड़ी के रूप में आयोजित जोनल स्पोर्ट्स मीट कैम्पनागपुर(1992) में उपविजेता, बैंगलोर(1993) में प्रतिभागी, दिल्ली(1997) में उपविजेता और हैदराबाद(2018) में विजेता रहे।
सेवानिवृत्त	आप दिनांक 30.09.2021 को सहायक के पद से अधिवर्षिता पर उप क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर सेवानिवृत्त हुए।

श्रीमती सुलभा आर. शेंडे
बहुकार्य स्टाफ

परिचय	श्रीमती शेंडे ने दिनांक 12.01.1998 को अनुकम्पा आधार पर बहुकार्य स्टाफ के पद पर निगम की सेवा आरंभ की थी। उनका व्यवहार मैत्रीपूर्ण और सहकारी है।
कार्यक्षेत्र	उप क्षेत्रीय कार्यालय–नागपुर के अधीन शाखा कार्यालय–मॉडल मिल, सदर, बुटीबोरी, हिंगणारोड
कार्यानुभव	आवंटित सभी कार्यों का कुशलतापूर्वक संपादन।
सेवानिवृत्त	दिनांक 31.10.2021 को बहुकार्य स्टाफ के पद से अधिवर्षिता पर सेवानिवृत्त हुए।

श्री संजय डी. भोंडे
बहुकार्य स्टाफ

परिचय	श्री भोंडे ने दिनांक 10.06.1982 को अवर श्रेणी लिपिक के पद पर निगम की सेवा आरंभ की थी। उनका व्यवहार सरल और सहकारी है। आपने सेवाकाल में हर गतिविधियों में बढ़–चढ़कर भाग लिया और पूरी कर्मठता से अपनी पूरी सेवा की।
कार्यक्षेत्र	आपने उप क्षेत्रीय कार्यालय–नागपुर के अधीन शाखा कार्यालय–सदर, शाखा कार्यालय–जुम्मा तालाब,शाखा कार्यालय–बुटीबोरी, शाखा कार्यालय–हिंगणारोड, शाखा कार्यालय–गोंदिया और शाखा कार्यालय–हिंगणघाट इत्यादि में सेवाएं दी। आपके कार्य के लिए सभी अधिकारियों से प्रशंसा प्राप्त की।
कार्यानुभव	आपका कार्य सामान्य अनुभाग, वित्त एवं लेखा अनुभाग, स्थापना अनुभाग तथा बीमा अनुभाग में सराहनीय रहा। विभागीय भर्ती परीक्षाओं के मामलों में भी गंभीरता से कार्य किया।
अन्य कार्य	आपने एसिक कर्मचारी संघ के सदस्य के रूप में सहयोग किया।आपने मनोविनोद सभा के संयुक्त सचिव दीर्घकालिक सेवा दी।
क्रीड़ा	आप उप क्षेत्रीय कार्यालय के एक अच्छे खिलाड़ी माने जाते थे। आपने खेलकूद में सेन्ट्रल स्तर के खेलों में भाग लिया। जोनल स्तर पर हैदराबाद, मैसूर, बैंगलोर पुणे, सूरत, चेन्नै, कोयम्बटूर, पांडिचेरी, दिल्ली, रांची में आयोजित खेलों में भाग लिया और विजयी रहे।
सेवानिवृत्त	दिनांक 31.03.2022 को बहुकार्य स्टाफ के पद से अधिवर्षिता पर सेवानिवृत्त हुए।

केन्द्रीय हिंदी समिति

गृह मंत्रालय

(राजभाषा विभाग)

नई दिल्ली–110001, दिनांक 9 नवंबर 2021

संकल्प

सं. 20017/01/2020-रा.भा.(नीति)—भारत सरकार ने केंद्रीय हिंदी समिति का पुनर्गठन करने का निश्चय किया है। इस समिति में निम्नलिखित सदस्य होंगे :—

1.	प्रधान मंत्री	अध्यक्ष
2.	गृह मंत्री	उपाध्यक्ष
3.	गृह राज्य मंत्री (गृह मंत्रालय में राजभाषा के प्रभारी)	सदस्य
4.	स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री	सदस्य
5.	शिक्षा मंत्री	सदस्य
6.	विधि और न्याय मंत्री	सदस्य
7.	इलेक्ट्रानिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री	सदस्य
8.	महिला एवं बाल विकास मंत्री	सदस्य
9.	ग्रामीण विकास मंत्री	सदस्य
10.	विदेश मंत्रालय एवं संसदीय कार्यालय मंत्रालय में राज्य मंत्री	सदस्य
11.	मुख्य मंत्री, असम	सदस्य
12.	मुख्य मंत्री, ओडिशा	सदस्य
13.	मुख्य मंत्री, आंध्र प्रदेश	सदस्य
14.	मुख्य मंत्री, महाराष्ट्र	सदस्य
15.	मुख्य मंत्री, कर्नाटक	सदस्य
16.	मुख्य मंत्री, उत्तराखंड	सदस्य
17.	उपाध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति	सदस्य
18.	संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति के संयोजक	सदस्य
19.	संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति के संयोजक	सदस्य
20.	संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति के संयोजक	सदस्य
21.	सचिव, राजभाषा विभाग	सदस्य सचिव

Kendriya Hindi Samiti

MINISTRY OF HOME AFFAIRS
(DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE)

New Delhi–110001, the 9th November 2020

RESOLUTION

No. 20017/01/2020-O.L.(Policy)—The Government of India have decided to reconstitute the Kendriya Hindi Samiti. The Samiti will consist of:—

1.	Prime Minster	Chairman
2.	Home Minister	Deputy Chairman
3.	Minister of State, Incharge of Official Language in Ministry of Home Affairs	Member
4.	Minister of Health & Family Welfare	Member
5.	Minister of Education	Member
6.	Minister of Law & Justice	
7.	Minister of Electronics & Information Technology	Member
8.	Minister of Women & Child Development	Member
9.	Minister of Rural Development	Member
10.	Minister of State, Ministry of External Affairs and Ministry of Parliamentary Affairs	Member
11.	Chief Minister, Assam	Member
12.	Chief Minister, Odisha	Member
13.	Chief Minister, Andhra Pradesh	Member
14.	Chief Minister, Maharashtra	Member
15.	Chief Minister, Karnataka	Member
16.	Chief Minister, Uttrakhand	Member
17.	Deputy Chairman, Committee of Parliament on Official Language	Member
18.	Convenor of 1st sub-committee of the Committee of Parliament on Official Language	Member
19.	Convenor of 2nd sub-committee of the Committee of Parliament on Official Language	Member
20.	Convenor of 3rd sub-committee of the Committee of Parliament on Official Language	Member
21.	Secretary, Department of Official Language	Member Secretary

आज़ादी का अमृत महोत्सव

चित्र यात्रा

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

स्वच्छता पखवाड़ा

राजभाषा सम्मेलन

शौकिया काम करने वाले बैठकर प्रेरणा की प्रतीक्षा करते हैं, बाकी लोग बस उठकर काम पर चल देते हैं। – स्टीफन किंग

आज़ादी का अमृत महोत्सव

चित्र यात्रा

हिन्दी पखवाड़ा

आंबेडकर, फुले जयंती

अग्निशमन प्रशिक्षण

मराठी माझी ગુજરાતી తెలుగు లిపి भाषा हिन्दी മലയാളം বাংলা

आज़ादी का अमृत महोत्सव

ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ಕನ್ನಡ संस्कृतम् اردو नेपाली

अखबारी सुर्खियाँ

योग से व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास संभव

भविष्य की चिंता ही तनाव का मुख्य कारण

नागपुर. अतीत से तनाव, वर्तमान से ... और भविष्य की चिंता ही जीवन में तनाव का मुख्य कारण है. तनाव से यदि बचना है तो हमें चाहे कैसी परिस्थिति हो वर्तमान में संतुष्ट रहकर खुश रहने की आदत डालनी चाहिए. जो भी जीवन में मिला है उसके लिए ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए. यह बात योग प्रशिक्षक अजय पांडे एवं निखिल गुरु ने कर्मचारी राज्य बीमा निगम के उपक्षेत्रीय कार्यालय में 7 से 21 जून तक चले ...

... संधि संचालन, सूर्यनमस्कार, योग निद्रा का नियमित अभ्यास कराया गया। कार्यालयीन कर्मचारी साधकों ने प्रतिदिन ...

शारीरिक और मानसिक रूप से सक्षम बनाता है योग

'आप हिंदी में करें बहस, मैं दूंगा फैसला'

अबू धाबी में कोर्ट की तीसरी आधिकारिक भाषा बनी हिंदी

ऐतिहासिक फैसला

हिंदी में MBBS

People from different states should speak in Hindi, not English: Shah

EXPRESS NEWS SERVICE

मेहनती होना पर्याप्त नहीं है, चींटियाँ भी मेहनती होती हैं। आप किस दिशा में मेहनत कर रहे हैं? - हेनरी डेविड

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति(का-1) नागपुर

संयोजक : पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, नागपुर

प्रमाण-पत्र

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नागपुर को वर्ष 2019-20 में 'राजभाषा कार्यान्वयन' के लिए नराकास(का-1) द्वारा प्रथम पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

ए.के. शर्मा

पावरग्रिड POWERGRID

27 अगस्त, 2021

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति(का-1) नागपुर

संयोजक : पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, नागपुर

प्रमाण-पत्र

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नागपुर को वर्ष 2019-20 में प्रकाशित गृह पत्रिका 'दीपज्योति' के लिए नराकास(का-1) द्वारा द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

ए.के. शर्मा

पावरग्रिड POWERGRID

27 अगस्त, 2021

ईएसआईसी योजना के हितलाभ

चिकित्सा देखभाल के अलावा, हम पूर्ण सामाजिक सुरक्षा भी सुनिश्चित करते हैं।

चिकित्सा हितलाभ

हम आपकी सभी चिकित्सा जरूरतों का ध्यान रखते हैं। ईएसआईसी बीमा योग्य रोजगार में शामिल होने की तिथि से स्वयं एवं आश्रितजन के लिए उचित चिकित्सा देखरेख प्रदान करता है।

मातृत्व हितलाभ

हमारे हितलाभों के साथ आपके नवजात शिशु का स्वागत है। ईएसआईसी मातृत्व छुट्टी के दौरान प्रसूति में 26 सप्ताह तक एवं गर्भपात के मामले में 6 सप्ताह तक तथा कमीशनिंग माँ तथा दत्तक माँ को 12 सप्ताह तक औसत दैनिक वेतन का 100 प्रतिशत नकद भुगतान करता है।

आश्रितजन हितलाभ

जो आप पर निर्भर है वह हम पर भी निर्भर है। ईएसआईसी रोजगार के दौरान चोट के कारण मृत्यु के मामले में आश्रितजनों के बीच नियत अनुपात में मासिक पेंशन का भुगतान करता है।

वृद्धावस्था चिकित्सा देखभाल

वृद्धावस्था के बाद भी स्वस्थ जीवन का आनंद उठाएं। ईएसआईसी अपने ईएसआई अस्पतालों तथा औषधालयों में सेवानिवृत्त/सेवा पूरी कर चुके बीमाकृत व्यक्तियों के लिए चिकित्सा हितलाभ प्रदान करता है।

शारीरिक पुनर्वास

रोजगार के दौरान चोट लगने का अर्थ दैनिक आजीविका की हानि नहीं। रोजगार के दौरान चोट लगने के कारण शारीरिक निःशक्तता के मामले में बीमाकृत व्यक्ति जब तक कृत्रिम अंग केन्द्र में भर्ती रहता है, उसे अस्थायी निःशक्तता हितलाभ की दर से भुगतान किया जाता है।

अंत्येष्टि व्यय

ईएसआईसी मृतक बीमाकृत व्यक्ति की अंत्येष्टि के लिए मूल व्यय या अधिकतम रू. 15,000/– का नकद भुगतान करता है।

बीमारी हितलाभ

बीमारी के कारण अवकाश का मतलब आय अर्जन समाप्त होना नहीं है। ईएसआईसी दो निरंतर हितलाभ अवधियों में 91 दिनों तक चिकित्सा छुट्टी के दौरान औसत दैनिक वेतन का 70 प्रतिशत नकद भुगतान करता है।

अयोग्यता लाभ

निःशक्तता का मतलब आय अर्जन से अक्षमता नहीं है। ईएसआईसी अस्थायी निःशक्तता के मामले में चोट ठीक होने तक और स्थायी निःशक्तता के मामले में जीवन भर निरंतर मासिक पेंशन का भुगतान करता है।

बेरोजगारी भत्ता

रोजगार छूटने का मतलब आय की हानि नहीं है। ईएसआईसी रोजगार की अनैच्छिक हानि या गैर–रोजगार चोट के कारण स्थायी अशक्तता के मामले में अधिकतम 24 माह की अवधि के लिए मासिक नकद भत्ता प्रदान करता है।

व्यावसायिक प्रशिक्षण

निःशक्तता का मतलब सम्पूर्ण कौशल की हानि नहीं है। ईएसआईसी रोजगार के दौरान चोट लगने से हुई निःशक्तता के मामले में वसूला गया वास्तविक शुल्क या रु.123/– प्रतिदिन के हिसाब से भुगतान करता है।

अटल बीमित व्यक्ति कल्याण योजना

अटल बीमित व्यक्ति कल्याण योजना बेरोजगार होने की स्थिति में राहत स्वरूप पिछले 4 अंशदान अवधि की औसत प्रतिदिन कमाई का 25% तक (अधिकतम 90 दिनों की) का भुगतान करता है।

अन्य हितलाभ

प्रसूति व्यय : जहां ईएसआई चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नहीं है, वहां ईएसआईसी दो मामलों तक रू. 5000/– प्रति मामले की दर से भुगतान करता है।

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित पते पर संपर्क करें।

उप क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर / Sub Regional Office Nagpur

कर्मचारी राज्य बीमा निगम / Employees' State Insurance Corporation

(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार / Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

पंचदीप भवन, गणेशपेठ, नागपुर. / Panchdeep Bhawan, Ganeshpeth, Nagpur.

फोन : 0712-2726219, 2726365 फैक्स : 0712-2729359, टोल फ्री नं. : 1800 2335494

वेबसाइट : www.esic.gov.in ई-मेल : dir-nagpur@esic.nic.in